समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

सितम्बर २००५ ♦ वर्ष ५५ ♦ अंक ९ ♦ एक प्रति १० रुपए ♦ वार्षिक १०० रुपए

पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के तत्वावधान में सम्मेलन की अखिल भारतीय समिति की ता. ११ सितम्बर को कलकत्ता में आयोजित बैठक

बैठक को सम्बोधित करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रोशनलाल तुलस्यान। बाएं हैं राष्ट्रीय महामंत्री सर्वश्री भानीराम सुरेका, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सीताराम शर्मा, पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष लोकनाथ डोकानिया, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष हरिप्रसाद कानोड़िया, आदि।

मंचासीन परिलक्षित हैं बाएं से प. बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष सर्वश्री लोकनाथ डोकानिया, पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रतन शाह, राष्ट्रीय महामंत्री भानीराम सुरेका, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सीताराम शर्मा एवं नन्दलाल रुंगटा, राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री राम औतार पोद्दार, उत्कल से मौजीराम जैन, झारखण्ड के प्रान्तीय अध्यक्ष गोविन्द प्रसाद डालमिया एवं राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जगदीश प्रसाद अग्रवाल (उत्कल)।

Garden*

drop in today

and make heads turn.

LINDSAY

On Lindsay Street

& Chowringhee crossing

Silk Hut

Between Gariahat Jn. & Golpark

Below Punjab National Bank

इस अंक में

अनुक्रमणिका	३
जनवाणी	४-५
वार्षिक साधारण सभा की सूचना	५
संपादकीय	६
अध्यक्ष की कलम से / *श्री मोहनलाल तुलस्यान*	७
नारी / *श्री भानीराम सुरेका*	८
आंदोलन से नहीं चेतना से बदलेगा समाज / *श्री राम अवतार पोद्दार*	८-९
कविवर कन्हैयालालजी सेठिया का रचना संसार / *श्री तारादत्त निर्विरोध*	१०
कविवर सेठियाजी की राजस्थानी कविताओं... / *श्री कन्हैयालाल सेठिया*	११
मारवाड़ी समाज के विरुद्ध कमलेश्वर की टिप्पणी पर प्रतिक्रियाएं - *एक रिपोर्ट*	१२-१३
महात्मा गांधी के प्रेरक प्रसंग / श्री रामनिवास लखोटिया	१४-१५
कविता : अखण्ड भारत / *श्री जगदीश प्रसाद तुलस्यान*	१५
प्राचीन और नवीन / *श्रीमती स्वराजमणि अग्रवाल*	१६
लोकगीत एवं संगीत की भूमि - राजस्थान / *श्री हनुमान सरावगी*	१७-१८
गिरते सामाजिक मूल्य एवं बढ़ता दिखावा / *विचार-गोष्ठी*	१८
धर्म के अनुसार आचरण ही धर्म होता है / *श्री राजेन्द्र शंकर भट्ट*	१९
सिरजण रौ प्रकाशन ई जरूरी / *डॉ. मनोहर लाल गोयल*	२०-२१
कविता : अरजी सायजी सूं / *डॉ. भगवान किराड़*	२१

युग पथ चरण

❑ अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की अखिल भारतीय समिति की बैठक का कार्यवृत्त, मदन दिलावर का सम्मान सहित पश्चिम बंग, बिहार, पूर्वोत्तर, आंध्र प्रदेश, उत्तर प्रदेश प्रांतीय सम्मेलनों की रिपोर्टों के साथ अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन एवं अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच की भी महत्वपूर्ण रिपोर्टें।	२२-३४

समाज विकास

सितम्बर, २००५

वर्ष ५५ ● अंक ९

एक प्रति- १० रु.

वार्षिक- १०० रु.

समाज विकास

१. अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का विचार मंच।
२. सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक चेतना का संवाहक।
३. समाज में फैली कुरीतियों, कुसंस्कारों को मिटाने का माध्यम।
४. समाज में संगठन के लिए सशक्त माध्यम।
५. राजस्थानी संस्कृति, कला, साहित्य व भाषा के प्रति समर्पित।
६. समाज में होने वाली सामाजिक घटनाओं, वर्जनाओं का वैचारिक संदेशवाहक।
७. भारत के कोने-कोने में फैले हुए ९ करोड़ मारवाड़ियों को शब्द प्रदाता।
८. आपकी आवाज व विचारों को देश-विदेश के कोने-कोने में बुलन्दी देने हेतु

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

स्वत्वाधिकारी : अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, १५२-बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता- ७, फोन : २२६८-०३१९ के लिए श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा इलस्ट्रेटेड इंडिया प्रेस, ७४, लेनिन सरणी, कोलकाता- ७०००१३ में मुद्रित।

संपादक-नंदकिशोर जालान

ज न वा णी

इस स्तम्भ के अंतर्गत सांस्कृतिक, आर्थिक एवं सामाजिक विषयों पर पाठकों के मतों का स्वागत है। साथ ही समाज के आंतरिक एवं गहन विषयों तथा समाज विकास में प्रकाशित सामग्री पर आपकी प्रतिक्रिया और सुझाव भी आमंत्रित है।

- सम्पादक

अगस्त माह की पत्रिका मिली। नन्दकिशोर जालान जी का लेख 'कौन रोकेगा हमारे बढ़ते कदमों को' बड़ा ही अच्छा लगा। आज हमारे कदम सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक नियमों के सुधार की ओर बढ़ रहे हैं। नई क्रांति की शुरूआत इक्कीसवीं सदी में होने वाली है। हमारा मन भी अब बदलाव की ओर जा रहा है। हम व्यापार के अलावा शिक्षा, विज्ञान, राजनीति में भी कई क्रांति लाने को अग्रसर हैं। चल रही शताब्दी में समाज को देश में अग्रणी बनाना होगा तथा अपने मान और सम्मान के लिए आवाज बुलन्द करनी होगी।

- जगदीश प्रसाद तुलस्यान
मुजफ्फरपुर, बिहार

समाज विकास पत्रिका हमें बहुत अच्छी लगती है। नई-नई बातों से हम परिचित होते हैं। इसका श्रेय सम्पादक जी को जाता है।

-पार्वती मोदी, अंगुल

अगस्त अंक मिला। '२१वीं सदी को नोच रहा है नंगापन' श्री जुगलकिशोर जैथलिया का लेख स्पष्ट और विचारोत्तेजक है। लेख युवा मारवाड़ियों को झकझोड़ने में सफल रहा है। नन्दकिशोर जालान का आलेख 'इक्कीसवीं शताब्दी : कौन रोकेगा हमारे बढ़ते कदमों को' एक विचारोत्तेजक लेख एवं स्पष्टवादिता का उदाहरण है, साधुवाद। आपको राजस्थानी भाषा में भी लेखों को छापना चाहिए। समाज विकास से काफी उम्मीदें हैं।

- नागराज शर्मा, पिलानी

अगस्त अंक मिला। बहुत अच्छा लगा। मुख पृष्ठ पर स्लोगन काफी जानकारी युक्त, प्रेरणाप्रद एवं सराहनीय हैं। 'आगे बढ़ते कदम' कविता बहुत अच्छी लगी। सम्पादकीय 'इक्कीसवीं शताब्दी- कौन रोकेगा हमारे बढ़ते कदमों को' जानकारी युक्त एवं समयानुकूल वातावरण में साहसिक कदम उठाकर मंजिल प्राप्त करने की प्रेरणा देता है। आज राजनैतिक, सामाजिक, आध्यात्मिक, वैज्ञानिक वातावरण हमारे अनुकूल हैं। समय तो यह है कि सफलता हमारे कदम चुमने को आतुर है, आवश्यकता है सम्भलकर चलने की। पत्रिका सामाजिक, सांस्कृतिक जागरण का काम कर रही है, आवश्यकता इसके प्रचुर प्रसार और इसके विस्तार की है।

- योगेन्द्र प्राण सुरेका
मधपुरा (बिहार)

समाज विकास के कर्णधार तन, मन और धन से समाज के विकास में लगे हुए हैं मगर जो सफलता मिलनी चाहिए, नहीं मिल रही है। इस कार्य के लिए समाज के हर व्यक्ति का सहयोग जरूरी है। श्री नन्दकिशोरजी जालान और श्री मोहनलालजी तुलस्यान की मेहनत काफी सराहनीय है। दहेज की बीमारी और आडम्बर कब कम होगा कहना मुश्किल है। बाढ़, सूखा इत्यादि प्रकोप में राजस्थानी समाज अच्छी भूमिका निभाता है। मगर बड़े दु:ख की बात है कि दहेज और फिजुलखर्ची में किसी भी समाज से पीछे नहीं है। आये दिन दहेज को लेकर महिलाओं को खुदकशी करनी पड़ती है। अगर सास-बहू के साथ वैही व्यवहार करे जो कि अपनी बेटी के साथ करती है तो इस व्यवहार से परिवार और समाज की कुरीतियाँ जरूर हटेगी।

- परशुराम तोदी 'पारस'
सलकिया, हावड़ा

अगस्त का अंक प्राप्त हुआ। सभी विद्वानों के लेखों को पढ़ने का सुअवसर प्राप्त हुआ। हम एवं हमारे युवक-युवतियां २१वीं सदी के अंतराल में चल रहे हैं। प्रकृति का शाश्वत नियम है- 'परिवर्तन'। परन्तु परिवर्तन के परिपेक्ष में अगर हम पर पाश्चात्य सभ्यता इतनी हावी हो कि हम अपनी मूल संस्कृति को खो बैठें तो हमारे समाज की क्या अधोगति होगी आप स्वयं सोच सकते हैं। श्री रामनिवास जी लाखोटिया के कुछ गूढ़ सुझाव समाज के लिए बड़े ही हितकारी होंगे, अगर हम एवं हमारी युवा पीढ़ी उनके बताये मार्ग एवं सुझावों को अपनाने का भरसक प्रयास करें। सामाजिक क्रांति के साथ अपनी मूल संस्कृति पर भी विशेष ध्यान अति आवश्यक है। हम बहुत आभारी हैं हमारे 'समाज विकास' के संपादक के जो निरन्तर ऐसे लेखों को संग्रहित करते हैं, जिससे समाज को अधिक से अधिक हर क्षेत्रों में लाभ पहुंच रहा है।

- सत्यनारायण तुलस्यान
मुजफ्फरनगर

समाज विकास पत्रिका मिलती रहती है। उसमें प्रत्येक लेख समाजोपयोगी रहते हैं। लेकिन समाज तो जैसा है, वैसा ही रहेगा। हमें तो अब तक कोई सुधार नजर नहीं आता। शायद भविष्य में कोई रास्ता अवश्य निकलेगा, ऐसी आशा है।

- स्वराज्यमणी अग्रवाल
जब्बलपुर

२१ अगस्त २००५ को डॉ. गणेश राठी द्वारा लिखित पुस्तक 'रवीन्द्र नाथ ठाकुर की छोटी-छोटी कविताएं' के लोकार्पण के अवसर पर अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा विशिष्ट अतिथि के रूप में रानीगंज पधारे, यह हमारे लिए अति गौरव की बात है। इस अवसर पर आप द्वारा दिया गया उद्‌बोधन आपकी साहित्यिक प्रतिभा एवं साहित्य के प्रति गहरा प्रेम एवं लगाव को उद्‌भाषित करती है। सचमुच यह एक बहुमूल्य उद्‌बोधन के रूप में प्रतिभाषित होता रहेगा।

- आर.पी. खेतान, रानीगंज

आपने (सीताराम शर्मा) म्हारी किताब

'रवीन्द्रनाथ ठाकुर री छोटी-छोटी कवितावां' की एक कॉपी भेज रह्यो हूं ताकि आप इने थोड़ो पढ़ सको। रवीन्द्रनाथ री ३१५ छोटी-छोटी कवितारो बांग्ला सूं राजस्थानी में भापान्तर है ए कवितावां बांये पाने में बांग्ला तथा जीवने कानी राजस्थानी अनुवाद हाजिर है।

आप रानीगंज बीच-बीच में पधारताइ रवोहे पण म्हारो आपसूं मिलणो रो मौको कोनी हुयो। आपरे बारे में इत्तो सुन्योहूं और समाज विकास में आपरा लेख हमेशा पढ़ीजन आवे सो आपसूं दो लिखावटां सूं इ परिचय हो जावे। आपरे पधारने री अडीक में बैठा हो।

- गणेश राठी, रानीगंज

श्री सीताराम शर्मा के शिक्षाप्रद उद्बोधन ने न केवल 'रवीन्द्रनाथ ठाकुर री छोटी-छोटी कवितावां' पुस्तक पर गहन दृष्टिपात करवाया बल्कि विविध प्रज्वलित सामाजिक एवं शैक्षणिक विषयों से भी अवगत कराया जिससे पूरी सभा मंत्रमुग्ध हो गई। यह यादगार संध्या मेरे स्मृति के खजाने में सदैव सुरक्षित रहेगी।

- विश्वनाथ सराफ, शाखाध्यक्ष, रानीगंज

मुझे वह दिन आज भी याद है जब सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ३५ वर्षों से मेरे आमंत्रण पर तिलक पुस्तकालय के एक समारोह में गीतेश जी शर्मा एवं नेवर जी के साथ आये थे। प्रेम कपूर भी साथ थे। २१-८-०५ को रानीगंज में आपका स्वागत कर हमें प्रसन्नता हुई।

- रामगोपाल खेतान, रानीगंज

दूरदर्शन पर लगाम कसें : दूरदर्शन में सैकड़ों चैनलों के माध्यम से रात-दिन कार्यक्रम दिखाये जा रहे हैं। दूरदर्शन पर सर्वाधिक कार्यक्रम या तो बच्चे देखते हैं या फिर महिलायें देखती हैं। एकाध धार्मिक, सामाजिक कार्यक्रमों को छोड़कर बाकी जो कुछ दिखाया जा रहा है वह इतना सिफर है कि बच्चे सुसंस्कृत होने के बजाय अपसंस्कृति के शिकार हो रहे हैं।

महामहिम राष्ट्रपति, माननीय प्रधानमंत्री, गृहमंत्री एवं सूचना व प्रसारण मंत्री से अनुरोध है कि वे देश की भावी पीढ़ी को अपसंस्कृति के गर्त में जाने से रोकने के लिए तत्काल कदम उठाएं।

- केवल चंद मीमानी, कोलकाता

अगस्त २००५ को पढ़ने का सुअवसर मिला। यह मेरा प्रथम अवसर ही था। प्रकाशित लेख अच्छे थे। एक ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा। आपकी पत्रिका की छपाई पढ़ने में, आंखों पर काफी स्ट्रेन पड़ता है। शायद डार्क छपाई के कारण होता है।

- बालकृष्णदास मालपानी
जबलपुर

सम्पादकीय : कोलकाता के प्राचीनतम लोकप्रिय अखबार में समाज विकास छपता है और उससे थोड़ी बड़ी टाइप में।

समाज विकास का नियमित पाठक हूं। इसमें मुद्रित सामग्री अपने समाज के लिए काफी प्रेरणाप्रद है। परन्तु समाज इस पर पूर्ण रूपेण पालन नहीं करता है। मेरा सुझाव है कि पत्रिका में व्रत-त्यौहार-तिथि आदि को भी प्रकाशित करें ताकि मातायें-बहनें भी इसका लाभ प्राप्त करें।

- ओमप्रकाश हालन, झरिया

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

१५२ बी महात्मा गांधी रोड, कोलकाता-७

सूचना

१ अक्टूबर २००५

सभी सदस्यों की सेवा में

महोदय,

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की वार्षिक साधारण सभा आगामी २२ अक्टूबर २००५, शनिवार को सायं ४.३० बजे सम्मेलन भवन, २५ अमहर्स्ट स्ट्रीट, कोलकाता-९ में निम्नलिखित विषयों के विचारार्थ आयोजित की गई है।

सभा की अध्यक्षता सम्मेलन सभापति श्री मोहनलाल तुलस्यान करेंगे।

विचारार्थ विषय :

१. सम्मेलन के पिछले वर्ष के आय-व्यय लेखे एवं संतुलन-पत्र को स्वीकृत करना।

२. सम्मेलन के पिछले वर्ष के क्रियाकलापों के प्रतिवेदन पर चर्चा।

३. लेखा परीक्षक की नियुक्ति।

आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

सधन्यवाद!

विनीत
भानीराम सुरेका
महामंत्री

समाज विकास एक मूल मंत्र

✍ नन्दकिशोर जालान

समाज की मण्डी में विकास शब्द सुनाई पड़ता ही रहता है। सर्वत्र कुछ ना कुछ क्रियाशीलता दिखाई पड़ती है। और यह सब कुछ इसलिए कि समाज का विकास हो, सामूहिक समृद्धि हो, समष्टि सुख हो।

पर अपने समाज में एवं अपने देश के समग्र जीवन में जहां क्रियाशीलता है वहां दूसरी ओर चेतना का आर्तनाद भी है। चेतनाएं वेग से उठती हैं पर एक प्रच्छन्न, रहस्यमय भय की दीवार से टकरा जाती हैं। क्रिया और प्रतिक्रिया होती है। मानस संशय से आच्छन्न हो जाता है। शक्ति का वेग है पर जिसके लिए और जहां से यह वेग है उस प्राण स्रोत को, मानव को उसी के नाम पर भुला दिया है। कारण यही है कि समाज विकास का मूल मंत्र स्मृतिपट पर उतरता तो है पर उभर-उभर कर मिट जाता है। प्रत्येक प्रक्रिया के मूल में विज्ञान है, सिद्धांत है, सत्य है। समाज विकास की बात करते हुए भी हमें सर्वदा उस मूल बिन्दु मानव का ध्यान रखना होगा जिससे समस्त क्रियाओं की सार्थकता है।

समाज का मूल व्यक्ति है। व्यक्ति ही प्रसारित, विकसित होकर समाज बन जाता है। इसलिए समस्त समाज-संगठन का ध्येय है मानव की प्रतिष्ठा। समाज मंदिर में हृदय का सिंहासन सूना पड़ा है। इसी पर देवता की प्रतिष्ठा करनी होगी। कौन है वह देवता मानव। व्यास ने ठीक ही कहा है- मनुष्य से श्रेष्ठ कोई नहीं है। एक उर्दू कवि कहता है-

मैंने माना हो परिश्ते शेखजी, आदमी होना बहुत दुश्वार है।

इसी मनुष्य की, मनुष्य की, प्रतिष्ठा समाज विकास का मूल बिन्दु है। परन्तु आज विश्व में व्यक्ति और समाज दो भिन्न शिविरों में प्रतिद्वंद्वी से खड़े हैं। इनके संघर्ष में मानव की मानवता विस्मृत है, वह बहुत कुछ अपने को भूल गया है, यांत्रिक बन गया है। इसीलिए कंठ से, मुंह से, मानवता एवं विश्व बंधुत्व के शब्द निकलते हैं पर हृदय की वाणी उनमें नहीं फूटती, हृदय बिगलित होकर शब्दों में प्रवाहित नहीं होता।

शताब्दियों के अनुभव से मनुष्य ने जाना कि स्वयं जीना उसका अधिकार है परन्तु दूसरों को जीने देना उसका कर्त्तव्य है। इस कर्त्तव्य के बिना उसका अधिकार अधिक देर तक टिक नहीं सकता। फिर उसने सीखा कि उसके ज्ञान-विज्ञान, उसकी सभ्यता और संस्कृति उसकी संपूर्ण विरासत केवल उसकी नहीं है, वह मानव जाति की पीढ़ियों के श्रम एवं तपस्या की देन है। आज जो वह है वह केवल अपने द्वारा और अपने को लेकर नहीं है ? उसके पीछे सबकी देन, सबका वरदान है। वह एकाकी होकर भी एकाकी नहीं है। समष्टि को लेकर ही वह चल सकता है, समष्टि में समाकर ही वह जी सकता है, समष्टि को पाकर ही वह अपने को पा सकता है, समाज ही उसका बाड़माकार है, वह मानवता का गृह है। इसी गृह में उसकी जीवन धारा समाहित होकर बही है।

दूसरी ओर समष्टि का समाज उस शरीर की भांति है जिसमें व्यक्तिरूपी हृदय धड़क रहा है, उस गृह की भांति है जिसका दीपक, जिसका गृही मानव है। समाज विकास की कोई योजना जो अपनी इस प्राण धारा के स्रोत मानव को प्रतिक्षण स्मरण नहीं रखती, केवल पतन के अन्धकाराच्छन्न गर्त में गिराने वाली है। इसी प्रकार यदि मानव यह स्मरण नहीं रखता कि उसके जीवन के साथ अनन्त जीवन जुड़े हुए हैं, वह विराट का एक अंश मात्र है, एक चेतना अंश तथा दूसरों की उपेक्षा एवं तिरस्कार करके वस्तुत: वह अपने को ही अस्वीकार करता है, दूसरों पर प्रवाह करके वह अपने को ही मारता है, दूसरों को अपहरण कर वह अपना ही अपहरण करता है, तब तक सत्य का, नीति का सर्वांगीण विकास का प्रकाश उसमें से फूटता नहीं। आज जो चोट और कराह है, जो दर्द और यातना है वह इसीलिए कि एक ओर व्यक्ति स्वरूप को भूल कर अपने संकुचित क्षुद्र 'स्व' में जकड़ कर, ठिठुर कर रह गया है, दूसरी ओर समाज अपने विकास की यात्रा में चलते हुए अपने ध्येय और गंतव्य - श्रेष्ठतर मानव, श्रेष्ठतर व्यक्ति की रचना को ही भूल गया है। इससे व्यक्ति में अत्यधिक स्वार्थपरता एवं समष्टिहित की उपेक्षा का भाव आया है। इससे सामाजिक वितृष्णाएं फैली हैं, सामाजिक विषमताएं उत्पन्न हुई हैं। दिल छोटे होते गएहैं, व्यक्ति की अपनी विराटता का लोप होता गया है -- यहां तक कि हम अपने लिए जीने लगे हैं। भूल गए हैं कि हमारे जीने का अर्थ ही दूसरों का जीना है। जीवन धारा को सदा बनाए रखना ही जीवन की पहली और सर्व प्रमुख प्रेरणा है। नर-नारी मिलन प्रजनन, सन्त तिरक्षण, कुटुम्ब, घर, ग्राम, समाज सब इसी प्रेरणा से विकसित होते गए हैं। सच पूछें तो तात्विक दृष्टि से, समाज व्यक्ति की सन्तति ही है। इसीलिए उसका और समाज का हित एक ही परिवार का हित है, अपना ही हित है।

लेकिन इस युग की प्रधान समस्या है कि समाज से उसके ही मानव का धीरे-धीरे विच्छेद सा हो जाना और समाज की एकरूपता अनेक रूपताओं में विखरित होने की प्रक्रिया शुरू हो जानी। इस स्थिति को दूर करना ही वास्तविक विकास है। समाज नद का कुण्ड नित्य हरित है, परन्तु उसका आदि अन्त एक ही है। समाज का व्यक्ति ही उसका आदि और व्यक्ति उसका अन्त है। देना ही उसका पाना है, त्याग ही उसका भोग है, प्रेम ही जिसका पान है वह समाज के हर व्यक्ति का सच्चा प्रतीक हो, इसी मूल मंत्र को सामने रखना है - तब कहीं समाज का व्यक्ति खड़ा होगा और प्रत्येक क्षेत्र समाज के व्यक्ति के हृदय की धड़कन से कंपित हो उठेगा।●

✍ अध्यक्ष की कलम से

दौरे हस्ती में उभर, वर्ना सिमट जाएगा

✍ मोहनलाल तुलस्यान

साहित्य मेरा पेशा नहीं है, लेकिन साहित्य से मेरा लगाव बहुत बचपन से है। तब से जब से ये दो पंक्तियां पढ़ी मैंने-

अंधकार है वहां जहां आदित्य नहीं है, मुर्दा है वह देश जहां साहित्य नहीं है।

साहित्य के बिना मुर्दा होने का रहस्य बरसों तक मैं समझ नहीं पाया, लेकिन सामाजिक जीवन में सक्रिय होने के बाद जब मुझे इसकी गहराई का एहसास हुआ तो मैं व्यापार में व्यस्तता के बावजूद साहित्य की ओर झुका। जितना संभव हो सका अध्ययन किया, विद्वजनों की सोहबत से बहुत कुछ सीखा और पाया कि वाकई साहित्य के बिना जीवन नीरस है, अर्थहीन है। यह साहित्य ही है जो जीवन में छंद देता है, दृष्टि देता है, संवेदनशील बनाकर समाज के प्रति अपना कर्त्तव्य निभाने का संकेत भी देता है।

साहित्य और संस्कृति किसी भी समाज की अमूल्य निधि है। उन्नत साहित्य और विविधतापूर्ण संस्कृति से संपृक्त समाज सदैव दूसरे समाजों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनता है।

साहित्य अपने समय, समाज और सभ्यता की खामियों-खूबियों का दस्तावेज होता है। किसी भी साहित्य को लीजिए आपको उस युग की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक परिस्थिति का अंदाजा हो जाएगा। बकौल एक शायर के -

उम्र की लाश पर जो मैंने जलाये हैं चिराग, मेरी हयात को दुनिया ने जो दिये हैं दाग
सोजिशो दर्द के गुन्चों से जो खिला है बाग, अपनी हद छोड़ के उभरा जो इन्क्लाबे दिमाग
तो मैंने लफ्ज की पोशाक पिन्हा दी उसको, दामने-वर्क से राहत की हवा दी उसको।।

लफ्ज की पोशाक पहनाने का काम साहित्यकार करता है इसलिए वह आम आदमी का प्रतिनिधि होता है। आम आदमी की पीड़ा, आम आदमी की भावना, आम आदमी की हसरतें ही साहित्य की रचना के लिए कच्चा माल होता है जिसे कल्पना का पुट और शब्दों के आवरण देकर पठनीय, शोचनीय, अनुप्रेरणीय बनाया जाता है। भारतीय साहित्य के विशाल सागर में समृद्ध ग्रंथ-रूपी मोतियों की कमी नहीं, लेकिन एक बात जो सर्वाधिक महत्वपूर्ण है वह यह है कि इन मोतियों को प्रकाश में लाने का काम राजदरबारों और धनाढ्यों की उदारता और सदाशयता से ही सम्भव हुआ है। लेखकों, कवियों को अनुदान देकर उनकी प्रतिभा को कुंद होने से बचाना, रोटी की चिंता से मुक्त कर उन्हें उन्मुक्त चिंतन के लिए प्रेरित करना ही साहित्य को समृद्ध करने की कसौटी है। भारत में यह प्रथा सदियों से है। राजदरबारों में विद्वजनों को बुलाकर सम्मानित करना, उनके विचारों को संकलित करना एवं उसे प्रचारित-प्रसारित करने की व्यवस्था करना एक परंपरा के रूप में रही है। इससे चापलूसीपूर्ण साहित्य को हवा मिली तो स्वतंत्र, विचारोत्तेजक एवं कालजयी कृतियों का अस्तित्व भी सामने आया।

बहरहाल भारतीय साहित्य और खासकर हिन्दी साहित्य के विकास का अध्ययन करते हुए मैंने पाया है कि राजदरबारों और सामंतों के बाद अगर किसी ने साहित्य की उन्नति में सदाशयता का परिचय दिया है तो वह मारवाड़ी समाज है।

उन्नीसवीं व बीसवीं सदी के साहित्य को लें और यह पता लगायें कि उनके प्रकाशन में अर्थ का योगदान किसका है तो स्वत: इस बात का पता चल जाएगा कि मूल रूप से व्यापार-वाणिज्य से जुड़े, अपनी मातृभूमि से विस्थापित मारवाड़ियों ने अपनी कर्मभूमि में साहित्य की समृद्धि के लिए क्या-क्या किया ? पूरे देश में साहित्य को समृद्ध करने की दिशा में मारवाड़ियों ने मुक्तहस्त अनुदान दिया और कभी अपनी प्रशंसा में प्रशस्ति प्रकाशित नहीं करवाये।

स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान प्रेरक साहित्य का प्रकाशन करना एवं उसके प्रचार-प्रसार की व्यवस्था कर पूरे देश में लोगों को ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ लामबंद करने की मुहिम में मारवाड़ियों का योगदान इतिहास की अमूल्य धरोहर है। लेकिन -

फर्द (व्यक्ति) बाकी है, खानदान कहां, ढूंढते हैं मकीं मकान कहां
अब हवाओं में हम मुअल्लक हैं (लटके हुए), अपने होने का अब गुमान कहां।

विगत वर्षों में तेजी से फैली विकृति ने लोगों की मानसिकता को इस हद तक संकुचित कर दिया है कि उनकी संवेदना मर-सी गई है। अब साहित्य के प्रति लगाव दकियानूसी लगने लगा है। जरा अपने इर्द-गिर्द देखें तो आप भौंचक्के रह जाएंगे कि फिल्मी धुनों पर भक्ति गीत लिखकर उसे लाखों की संख्या में छपवाने वाले अच्छे साहित्य के लिए एक कौड़ी खरचने को तैयार नहीं। एक ओर सरकारी खरीद ने चापलूसीपूर्ण साहित्य रचयिताओं का बाजार गर्म कर रखा है तो दूसरी ओर संरक्षण व संवर्द्धन के अभाव में मौलिक, विचारोत्तेजक साहित्य रचने वाले उपेक्षित हो रहे हैं। समाज में चुनौती की क्षमता के क्रमश: कम हो जाने के पीछे एक बड़ा कारण यह भी है।

कहीं से बोलता कोई नहीं है, तो बस्ती में भी क्या कोई नहीं है, सभी के दम घुटे जाते हैं लेकिन, खिड़कियां खोलता कोई नहीं है।

क्या यह एक स्वस्थ, सचेतन, सांस्कृतिक समाज का सूचक है ? अगर हां, तो फिर समाज के मिटने का इंतजार करें और अगर नहीं तो याद रखें-

जो न उभरा वो जहां में बराये-नाम (बेनाम) रहा, दौरे-हस्ती (जीवन) में उभर, वर्ना सिमट जाएगा।●

नारी शक्ति

✍ श्री भानीराम सुरेका,

महामंत्री, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

''अबला जीवन तेरी यही कहानी, आंचल में दूध है आंखों में पानी।''

इसी महीने में मैं परिवार सहित राजस्थान दौरा पर था, तो जयपुर में मुझे एक नारी सम्मेलन में जाने का अवसर मिला। सम्मेलन में कई महिलाओं ने अपनी बात रखी, पुरुषों ने भी कहा कि नारी हमेशा ही विवाद का विषय रही है। मानवता, त्याग की मूर्ति, कोमलता, सुन्दरता में ऊपर होते हुए भी पुरुषों ने अनेक तरह-तरह के लांछन लगा देते हैं जिसमें ज्यादा नारी के चरित्र पर बात उठती है। किन्तु अब जमाना बदल गया है, नारी ने अपनी पहचान बनाई है- किरण वेदी प्रथम आईपीएस, कल्पना चावला विज्ञान के क्षेत्र में, खेल में पी.टी. उषा, सानिया मिर्जा ने देश का नाम ऊंचा किया है वैसे ही अपने राजस्थान में मुख्यमंत्री, राज्यपाल, विधानसभा अध्यक्ष, राजस्थान फाउण्डेशन की अध्यक्षा आदि राजस्थान की बागडोर संभाल रखी है। यह गर्व की बात है कि महिलाएं हर क्षेत्र में बढ़ रही हैं। सम्मेलन में सभी से अनुरोध किया गया कि दहेज के लोभी से विवाह न करे और हिम्मत दिखावें। शशी सुरेका ने कहा कि नारी समाज की रीढ़ है, रक्षा करने वाली दुर्ग है, धन देने वाली लक्ष्मी का रूप है, विद्या प्रदान करने वाली मां सरस्वती देवी का रूप है। नारी शक्ति को पहचानने की जरूरत है। आत्मविश्वास की कमी को दूर करना है क्योंकि सास भी कभी बहु थी में तुलसी के अभिनव को देखी है, उसने कैसे सबको एक क्षेत्र में बांध कर रखा है, इतने दुखों को झेलकर भी वह अपने सान्निध्य में आने वाले लोगों में जीवन के मूल्यों की स्थापन कर सकती है। सबको अपने घर में परिवार में आनंद एवं उत्सव का सृजन करती है। तुलसी ने कहा चुड़ी शृंगार के लिए पहनती है, इस हाथ से तलवार भी उठा सकती है।

एक माहेश्वरी समाज की महिला ने कहा कि अब समय बदल गया है अब लड़की के जन्म पर उदासी और भेदभाव नहीं होता है, घर को स्वर्ग बेटी ही बनाती है, बेटी एक सुन्दर सलौना रूप है, जिसकी निश्छल हंसी तन-मन को गुदगुदाती है। इनके शब्दों में बेटिया नेह है, विश्वास का प्रतिरूप है, दो घरों को जोड़कर परम्पराओं को जीवन्त रखती है बेटियां व पोतियां। उनका मानना है कि -

बेटा हो या बेटी, दोनों ही मां की जान है
पर सच में तो बेटी ही मां की असली पहचान है
पिता का गर्व है तो मां का अभिमान भी हैं वे
घर की लक्ष्मी और घर की चमक हैं वे
घर उसी से घर लगे घर की रोनक है वो
जो सबके दिल में बसे, बेटी वे अरमान हैं
मैं भी तो एक बेटी हूं, बेटी ही मेरी जान है।

भारत एक पुरुष वाचक नाम है, फिर भी हम 'भारत पिता' नहीं कहते, 'भारत माता' कहकर पुकारते है। हम इसे मातृ-शक्ति एवं नारी शक्ति के साथ जोड़ते हैं।●

आन्दोलन से नहीं, चेतना से बदलेगा समाज

✍ श्री रामअवतार पोद्दार, संयुक्त महामंत्री, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

पहले के लोगों में समाज के प्रति कुछ करने की भावना रहती थी। समाज के हित में योगदान करना अपना कर्त्तव्य समझते थे। जो बोलते थे, उसे करते भी थे। आज की स्थिति बिल्कुल भिन्न है। मंच पर खड़े होकर लोग जो मन में आता है, बोल जाते हैं। लम्बे-लम्बे उपदेश दे जाते हैं और समाज को नसीहत दे जाते हैं, लेकिन खुद उन्हीं बातों-उपदेशों पर अमल नहीं करते। इस तरह कथनी-करनी में बहुत बड़ा फर्क आ गया है। हाथी के दांत वाली कहावत चरितार्थ हो रही है, जिसके खाने और दिखाने के दांत अलग-अलग होते हैं। यही वजह है कि आज का समाज निरंकुश है। सभी अपने ढंग से चल रहे हैं। सामाजिक मूल्यों, कर्त्तव्यों और जिम्मेदारियों की किसी को भी फिक्र नहीं है। समाज में कोई ऐसा नेता नहीं है, जिसकी बात का असर है, क्योंकि कमोबेश सभी तो एक जैसे हैं। नई पीढ़ी अपने तक सीमित है, वह अपने बारे में ही सोचती है। समाज के प्रति उसका ध्यान नहीं है। लेकिन यह सब वक्त की बदलती हुई करवटों का असर है। इसके विपरीत चलने से काम नहीं बनेगा। हमें समाज में वैचारिक क्रांति लानी होगी। चेतना और जागृति पैदा करने की पुरजोर कोशिश करनी होगी, ताकि लोगों के दिल-ओ-दिमाग में परिवर्तन की एक लहर पैदा हो। इसी रास्ते पर चलकर सामाजिक कुरीतियों का खात्मा किया जा सकता है। आन्दोलन करने से कोई लाभ नहीं मिलेगा। नियम-कानून और परम्पराओं का पहले खुद पालन किया जाए तभी दूसरों को सेवा करने के लिए कहा जा सकता है। हमारे समाज ने उद्योग-व्यापार में तरक्की की है, शिक्षा के क्षेत्र में काफी आगे बढ़ा है। नई पीढ़ी प्रतिभावान है। महिलाएं भी अच्छी से अच्छी शिक्षा हासिल कर अपनी कार्यकुशलता प्रदर्शित कर रही हैं। घर की चहारदीवारी से बाहर निकलकर भी काम कर रही हैं। लेकिन शर्म, लिहाज और संकोच खत्म होता दिख रहा है। आखिर सब कुछ होते हुए

भी तलाक जैसे मामले क्यों बढ़ रहे हैं? ये कुछ ऐसे ज्वलंत सवाल हैं, जिनका जवाब हम सबको मिलकर देना होगा। संयुक्त परिवार टूट रहे हैं। बड़े-बूढ़ों की अनदेखी हो रही है और समाज एक ऐसे चौराहे पर आकर खड़ा हो गया है, जहां से उसे अपनी राह नहीं दिख रही है।

अन्तर्जातीय विवाह हमारी परम्परा में प्रयुक्त मूल, गोत्र, खानदान की सीमाओं को नहीं मानता। इसमें तो मन का मेल प्रमुख होता है चाहे वह किसी भी भाषा, जाति, धर्म के युवक-युवतियों में हो। लेकिन इसका दूसरा पहलू भी है और वह इतना व्यापक है कि उस पर गंभीर आत्म चिन्तन की आवश्यकता है।

हम मारवाड़ी भारतीय संस्कृति और सभ्यता के अनुरूप ही विकसित हुए हैं इसलिए सांस्कृतिक स्तर पर हम अन्य भारतीय समाजों से इतर नहीं हो सकते। हां, स्थानीय संस्कृति में विविधता स्वाभाविक है।

आज की भारतीय संस्कृति क्या अपने मूल स्वरूप में है?

नहीं। सदियों पहले की संस्कृति और आज की संस्कृति में जमीन आसमान का अंतर है और इसी अंतर ने इसे विशिष्ट भी बनाया है। खासकर हिन्दू समाज का लचीला स्वरूप सांस्कृतिक परिवर्तनों के माध्यम से ही बना है। मारवाड़ी भी इसके अपवाद नहीं है।

वर्तमान हिन्दू समाज की उपमा गंगा की धारा से दी जा सकती है। छोटी बड़ी अनेक नदियां चारों दिशाओं से सैकड़ों कोस की यात्रा करके इसमें मिली है परन्तु मिलने पर सब एक हो गई है, उनका एक नाम हो गया है। नदी में जल की जो मात्रा है, उस जल में जो वेग है, वह इन सब नदियों की सम्मिलित देन है। पर इन सब जलराशियों के बीच में वह मूलधारा है जिसमें आकर यह सब मिली है और यह मूलधारा है- अपनत्व की भावना।

अनेक जातियों का समुच्चय आज हिन्दू समाज कहलाता है, अनेक संस्कृतियों के योगफल का नाम हिन्दू संस्कृति है और यह सब सिर्फ अपनत्व की उदात्त भावना के चलते ही संभव हुआ है।

जहां तक मारवाड़ी समाज की बात है तो यह समाज अपने मूल स्थान से विस्थापित होकर यायावरी के माध्यम से व्यापार-वाणिज्य करने वालों का समाज है इसलिए इसकी संस्कृति भी हिन्दू संस्कृति की तरह ही अनेक संस्कृतियों का मेल है।

अन्य हिन्दीभाषी समाजों से यह समाज सोच के स्तर पर थोड़ा भिन्न है तो इसलिए कि इस समाज में सुधार के आन्दोलन दशकों चले हैं। पुरानी अवधारणाओं की जगह नई अवधारणाओं को ग्रहण करने की प्रवृत्ति भी रही है। इसलिए अन्तर्जातीय विवाह जैसे मुद्दे पर चिन्तित होने की बजाय इस पर गंभीर आत्मचिन्तन किया जाना चाहिए।

इतिहास के पन्ने पलटें तो पाएंगे कि भारत के हिन्दू राजाओं ने भी राज्य विस्तार के क्रम में अन्तर्जातीय विवाह किये एवं उसे सामाजिक स्वीकृति भी मिली। मौर्य वंश के सम्राट चन्द्रगुप्त ने सेल्यूकस की पुत्री हेलेना से शादी की और उसी वंश के विस्तार में महान सम्राट अशोक पैदा हुए तो क्या हम अशोक को हिन्दू न कहें।

आज वैश्वीकरण और बाजारीकरण का दौर है। सूचना तकनीक में हुए क्रांतिकारी बदलावों ने पूरी दुनिया को एक गांव बना दिया है। ऐसा गांव जहां जाति, धर्म, सम्प्रदाय यहां तक कि संस्कार का भी कोई मूल्य नहीं है। हर घर एक बाजार है, हर व्यक्ति एक खरीददार। ऐसे में सूचनाओं की जो आंधी चल रही है उसमें कब तक हम अपने पुराने मूल्यों, आस्थाओं के साथ टिके रह सकेंगे?

आज के युवक और युवतियां शिक्षित हैं, प्रतिभावान हैं एवं सूचनाओं से लैस भी। वे भी जो करते हैं अपनी दृष्टि से उस पर चिन्तन के बाद ही करते हैं। वंश परम्पराएं उसके आड़े नहीं आती। इसलिए अन्तर्जातीय विवाह को किसी भी समाज में रोकना संभव नहीं है। हां, विद्यालयीन जीवन में एवं घर पर संस्कारों की शिक्षा देकर एक हद तक इसकी रफ्तार रोकी जा सकती है। हालांकि व्यक्तिगत रूप से मैं अन्तर्जातीय विवाह का पक्षधर हूं। मेरा मानना है कि एक मनुष्य के रूप में प्रत्येक व्यक्ति को अपना जीवन साथी स्वयं चुनने का अधिकार है। कोई दूसरा, चाहे वह माता-पिता ही क्यों न हो जब जीवनसाथी का चुनाव करते हैं तो उसमें विसंगति की संभावना रह जाती है।

अन्तर्जातीय विवाहों की खामियां-कमियां चाहे जो हो पर एक कैंसर के उपचार में तो उसने सफलता पा ही ली है और वह कैन्सर है - दहेज, जिसे हमारे समाज ने इतना जटिल एवं पीड़ादायक बनाकर रख दिया है कि उसका खात्मा वक्त की जरूरत हो गई है। प्रेम की सौदेबाजी से बेहतर तो मन का मन से मिलन है। अगर समाज अन्तर्जातीय विवाहों के मार्ग में बाधा डालने की नीयत से ही सही, दहेज को खत्म करने का साहस दिखाए तो उसका स्वागत है। भारतीय समाजों में अमीरों एवं गरीबों के बीच का फासला जिस तरह बढ़ रहा है उसने एक खतरनाक स्थिति को जन्म दिया है। यहां एक बात याद रखने की है कि ऐसा कोई भी समाज नहीं है जिसमें सभी अमीर या गरीब हैं। हर समाज में अमीर और गरीब हैं भले ही उनका अनुपात अलग-अलग हो। मारवाड़ी समाज भी इसका अपवाद नहीं है।

विगत वर्षों में समाज के अमीर वर्ग ने अपनी हैसियत दिखाने के लिए कुछ ऐसे तरीकों का ईजाद किया है जिसकी नकल करने में गरीब वर्ग अपनी रही सही हैसियत भी खो देने के कगार पर हैं। इसमें विवाह प्रथा प्रमुख है।

सामान्य तौर पर विवाह पुरुष और स्त्री के मेल बंधन का अवसर होता है जहां वे उम्र भर साथ रहने, एक दूसरे के सुख-दुःख में भागीदार बनने एवं प्रकृति चक्र के तहत संतति के विकास की कसमें खाते हैं। चूंकि विवाह के बाद लड़की अपने पिता के घर को छोड़कर पति के घर चली जाती है इसलिए पिता अपनी हैसियत के अनुरूप अपनी सम्पत्ति का एक अंश उपहार में बेटी को देता है। यह प्रथा सदियों से चली आई है। लेकिन कालांतर में लड़के के पिता द्वारा लड़की के पिता या परिवार को इस बात के लिए बाध्य किया जाने लगा कि विवाह के समय अमुक-अमुक सामान और साथ ही नगद राशि देनी होगी। इसमें भी पहले कुछ सहूलियत की व्यवस्था थी पर बाद में ये सारे नियम बाध्यता बनते गये। सिर्फ दान-दहेज ही नहीं विवाह स्थल, बारातियों के भोजन, तामझाम को भी बाध्यता की सूची में डाल दिया गया। धीरे-धीरे विवाह प्रहसन का पर्याय बनता गया।

आज स्थिति यह है कि अमीर वर्ग का एक हिस्सा विवाह में आडम्बर, दिखावा, प्रदर्शन के रिकार्ड बना रहा है, कीमती से कीमती शादी करने को अपने स्टेट्स सिम्बल का प्रतीक बना रहा है। इन शादियों में जाकर कोई सहज ही धन के अपव्यय का नग्न नजारा देख सकता है। यह बात भी नहीं कि ऐसी शादियां बहुत सुखद, टिकाऊ और प्रशंसनीय होती है, उल्टे यह देखा जाता है कि धन की थोड़ी सी कमी होते ही ये परिवार कलह में डूब जाते हैं और कई बार संबंध विच्छेद तक की नौबत आ जाती है।●

कविवर कन्हैयालाल सेठिया का रचना संसार

✍ डॉ. तारादत्त 'निर्विरोध', जयपुर

कविवर कन्हैयालाल सेठिया हिन्दी एवं राजस्थानी की पूर्ववर्ती पीढ़ी के उन सशक्त रचनाकारों की पंक्ति के अग्रणी कवि हैं जिन्हें अंगुलियों पर गिना जाता रहा है। उन्हें राजस्थान के कवियों की सूची तक रखना, मेरा मानना है, उनके रचनाकार के साथ न्याय नहीं होगा। वे अखिल भारतीय ख्यातिलब्ध राजस्थान के ऐसे कवि हैं जिनकी कविताएं पांच दशक पूर्व ही अपने पांवों चलकर देश के सुविस्तीर्ण कर्मक्षेत्र के पाठकों तक पहुंचीं और उनके मनों में रच बस गईं। लेखक ने भी उनकी राजस्थानी कविता 'पाथल और पीथल' शुरू बचपन में ही पढ़ी थी और उसने इतना प्रभावित किया था कि वर्षों तक कविता की पंक्तियां अधरों में बैठी रहीं।

यह बात कम लोग जानते हैं कि राजस्थान की परवर्ती एवं पूर्ववर्ती पीढ़ियों के रचनाकारों में जो साहित्य सृजित किया है, उनमें सेठिया जी अकेले साहित्यकार हैं जिन्होंने सत्साहित्य भी दिया और उसके बाद की पीढ़ियां उनसे सर्वाधिक प्रभावित रहीं। वे समकालीन रचनाकारों के लिए प्रतिस्पर्धा के विषय और नए रचनाकारों के लिए प्रेरणा के स्रोत रहे। नई पीढ़ी के कवियों में जो राग-तत्व और गीतात्मकता दृष्टव्य है, वह कन्हैया लाल सेठिया की काव्य परंपरा का ही एक उत्कर्ष है।

एकदम निश्छल, काव्य प्रस्तुति के प्रतिरूप, उदारमना सेठिया जी प्रथम भेंट में अपने पुश्तैनी कार्य के अनुरूप सेठ ही लगते हैं, लेकिन दूसरे ही क्षण वे अपने व्यक्तित्व की छाप छोड़ते हैं जो उनके अतीत को वर्तमान और आगामी अतीत से जोड़ती है। एक गन्धमय विरल व्यक्तित्व और विलक्षण काव्य प्रतिभा का नाम कन्हैया लाल सेठिया है।

सेठिया जी की प्रकाशित कृतियों में 'वनफूल', 'अग्नि वीणा', 'मेरा युग', 'दीप किरण', 'प्रतिविम्ब', 'आज हिमालय बोला', 'खुली खिड़कियां चौड़े रास्ते', 'प्रणाम', 'मर्म' और 'अनाम', हिन्दी भाषा की और 'मींझर', 'गलगचिया', 'कू-कू' तथा 'रमणियो रा सोरठा' राजस्थानी भाषा में लिखी ऐसी काव्य कृतियां हैं, जिन्हें पढ़कर उनकी काव्यधारा में बहा जा सकता है, पुण्य कमाया जा सकता है, वे अपना कोई सानी नहीं रखतीं। यह कृतियां एक सम्पूर्ण कवि की उपस्थिति और उसके होने के सत्य की निकटता से सभी को जोड़ती हैं।

सेठिया जी की साहित्यिक देन से हिन्दी पठित जगत को भिज्ञ कराने के लिए गोविन्द राम शर्मा ने 'कन्हैयालाल सेठिया और उनका साहित्य' शीर्षक कृति में उनके जीवन विषयक और साहित्यगत तथ्यों को उभारने का प्रयत्न किया और अरुण कुमार भट्ट ने उनकी काव्यकृति 'प्रतिबिम्ब' को 'रिफ्लेक्शंस इन ए मिरर' शीर्षक से अंग्रेजी में अनुवादित किया है। कहना चाहूंगा सेठिया जी के बारे में अभी भी बहुत कुछ लिखा जाना शेष है और इस दिशा में शोधकर्ताओं को पहल करनी चाहिए।

सुजानगढ़-राजस्थान में जन्मे सेठिया जी के हिन्दी में लिखे गीतों का संग्रह है 'दीप किरण'। इन गीतों को पढ़ते समय ऐसा लगता है कि आप सतत् प्रवहमान मंदाकिनी गंगा में डुबकियां लगा रहे हैं। इन गीतों में कल्पना, अनुभूति एवं चिंतन का अपूर्व संगम है।

जीवन के सत्य-असत्य, राग-द्वेष, हर्ष-विषाद, सुख-दुःख, संयोग-वियोग, विषाद, मिलन की उत्कंठा, दार्शनिकता, प्रकृति के उपादान, रंग-रोगन और दूर-निकट की रक्षानुभूतियों को सेठिया जी ने अपने गीतों में बखूबी काव्यांकित किया है और सोलह मात्रिक छंदों में एक बड़े अर्थ को पिरोने का उनका प्रयास काव्य को विकास देता रहा है। काव्याकाल के नए क्षितिज खोजने और बहुआयामी गतिविधियों को ज्यों का त्यों चित्रांकित करने में सेठिया जी एक सफल कलमकार रहे हैं जिन्होंने बहिरंग को अन्तरंग के माध्यम से प्रस्तुत किया है। उन्हें अन्तर्मुखी गीतकार और बहुर्मुखी कवि के रूप में भी पहचाना जा सकता है।

'प्रणाम' के गीतों की मधुर झंकृति पाठक या श्रोता को टबोकता भी है और उसके लिए ऐसे रंग भी उकेरती है जो रुचिकर हों। प्रणाम के गीतों में कवि दार्शनिक हो गया है और उसे हर वस्तु और बात में कोई गहनता दिखाई देने लगी है। उसे राग तत्व और ऐकान्तिक रिक्तता के साथ आभास की स्थितियां भी विमोहित किए हैं।

अधुनातन युगीन बातों, खूबियों और नवीनताओं को सेठिया जी ने नए-नए प्रयोगों के साथ अपनी कविताओं में लिखा है। वे राजस्थानी एवं हिन्दी गीतों के साथ काव्य की जिस परम्परा का निर्वाह करते हैं वहां नई और प्रतीकात्मक कविताओं से काव्य को गति देते हैं। क्षणिकाओं के साथ काव्य को उस प्रगति तक ले जाते हैं जो कल्पनातीत है। वे एक मायने में परम्परावादी हैं, दूसरे में प्रगतिवादी और तीसरे में नितांत प्रयोगशील।

'प्रतिबिम्ब' उनके गीतों की तीसरी कृति है। 'मर्म' उनकी मिनी कविताओं का ऐसा संग्रह है जिसे पाठकों के स्नेह की अपेक्षा है। ये ऐसी कविताएं हैं जिन्हें सहज ही नहीं समझा जा सकता और वे विचार की अपेक्षा रखती हैं। ये कविताएं क्षणिकाएं भी हैं, सूत्र भी और संकेत भर भी।

'गलगचिया' सेठिया जी की राजस्थानी भाषा में लिखी गद्य कृति है। जो कथात्मक है, प्रेरणादायक कथा सूत्रों की एक माला है और लेखक की सूझ-सूझ की प्रतीक भी।

सेठिया जी के राजस्थानी में लिखे गीतों में सर्वाधिक प्रसिद्ध गीत - 'धरती धोरां री' और कविताओं में 'पाथल और पीथल उनके अन्य गीतों में लोकांचल की झांकियां और खूबियां मिलती हैं, लेकिन उनका अपना स्तर है। समग्र रूप से मूल्यांकित किया जाए तो कन्हैया लाल सेठिया राजस्थानी से कहीं अधिक हिन्दी भाषा के रचनाकार हैं।●

कविवर सेठिया जी की राजस्थानी कविताओं में से कुछ

✍ कन्हैयालाल सेठिया, कोलकाता

सौमन !

मत ठमह
म्हारी कलम
जठै तांई
नहीं समझै
हियो हियै रो मरम
तोड़ै
भूख स्यूं मरतो
मिनख दम
नहीं मिलै
लुगाई नै
गाबो
ढकण नै सरम
बिकै
पइसां रै सट्टै
ईमान''र धरम
नहीं टूटै
जात''र पांत रो
भरम
बठै तांई
मत ठमह
म्हारी कलम
तनै सबद री सौगन !

* * *

नरग-सरग !

अकूरड़ी,
फूल नै नरग
बीज नै सरग !

* * *

करणी जाणीजै !

मिनख रो कांई
सळयो''र अळयो
बगत पिछाणीजै,
रूप रो कांई
रूड़ो''र कोजो
मत पितवाणीजै,
उमर रो कांई
लांबी''र ओछी
करणी जाणीजै !

पिच्छम''र पूरब !

लड़ाई कुदरत स्यूं
सभ्यता पिच्छम री
भेळप सभ्यता
पूरब री,
सूरज जठै निमळो
चाहीजै बां नै
आंख रो उजास,
जठै सबळो
बां नै आतमा रो परगास,
पिच्छम री जिनगानी
सासतो भाजणै री एक होड,
पूरब री
धम''र सोचणै री एक मोड़,
अतै''क फरक स्यूं
पिच्छम में जलमै जुद्ध
पूरब में बुद्ध !

* * *

मोटो डर

रोही में फिरै ल्याळी
आभै में गरणा वै सिकरा
बेलां में रळकै वासक नाग
पण सै स्यूं मोटो डर भूख,
जको कोनी बैठण ह दै
लरड़ी नै बाड़ै में
कबूतर नै आळै में
पग नै घर में !

* * *

धरती रो बीच !

घणां ही है
बतावणियां
जेई रोप''र
धरती रो बीच,
घणांई है
उठावणियां
राग भेळी राग रळा''र
झूठी गंगाजळी,
बा नै ठा है''क
भीड़ रै हुवै है
खाली जीभ''र कान
आंख्यां रा आंधा
उठावै थोकाथोक कूड़
को ताकड़ी चाहीजै न बाट
के बाणियूं''र जाट
सै करै
चिमतकार नै निमसकार,
लादै कोनी तो कोई
साच रो लेवाळ
कदै कदास आवै ही-
तो मांगे
मासो''र का तोळो
कीं न है चीज री पीक
चाहीजै रोळो !

* * *

अहिंसा

जे मैं मारूं, सामलो
हणसी म्हारा प्राण,
नहीं अहिंसा आ जकी
उपजै डर रै पाण !

ओ सरीर रो धरम है
कोनी तत रो ग्यान,
जकी जीण री वासणा
परतख हिंसा जाण !

थकां सामरथ छोड़ दै
जद विवेक स्यूं राग,
जुड़ै अहिंसा अभय स्यूं
बो है सहज विराग।

खमा भाव आतम धरम
अनुकंपा में मूळ,
दीठ हुयां अंतरमुखी
कुण कांटा, कुण फूल !

मारवाड़ी समाज के विरुद्ध कमलेश्वर की टिप्पणी पर तीखी प्रतिक्रियाएं/उत्कल की 'धरित्री' भी

साहित्यकार एवं लेखक कमलेश्वर द्वारा मारवाड़ी समाज को शोषणकर्त्ता एवं पूर्वोत्तर असम एवं नेपाल की समस्या के लिए दायी ठहराने की आपत्तिजनक टिप्पणी पर अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ने कठोर प्रतिवाद करते हुए कमलेश्वर की संकुचित मानसिकता की निन्दा की थी एवं उनसे क्षमा याचना की मांग की थी जिसे कि समाज विकास के जून अंक में प्रकाशित किया गया था। इस विषय पर कोलकाता से प्रकाशित एक प्रतिष्ठित दैनिक समाचार पत्र 'प्रभात खबर' में 'आपके विचार' शीर्षक से लोगों की प्रतिक्रियाएं प्रकाशित हुई थी जिसके अंश इस अंक में दिए जा रहे हैं। कोलकाता से ही प्रकाशित एक लब्धप्रतिष्ठ दैनिक राष्ट्रीय समाचार पत्र 'सन्मार्ग' ने अपने सम्पादकीय कॉलम में कमलेश्वर की बखिया उधेड़ दी जिसके कुछ अंश यहां प्रकाशित हैं।

ज्ञातव्य है कि श्री कमलेश्वर ने गुवाहाटी से प्रकाशित दैनिक पूर्वोत्तर एवं अन्य राष्ट्रीय समाचार पत्रों में उनके आकलन सिण्डिकेट लेख 'व्यावहारिक रूप से देखा जाए तो अपने पूर्वोत्तर और विशेषत: असम की यह समस्या है कि वहां बाहरी शोषणकर्त्ता आ बसे हैं, जो मूलत: मारवाड़ी बनिया और छोटे व्यापारी हैं। लगभग उसी तरह के भारतीय बनिया लोग नेपाल में भी मौजूद हैं।

प्रतिक्रियाएं :-

कमलेश्वर जी ने असम और नेपाल के विद्रोह का कारण मारवाड़ियों का शोषण बताया है। अब उन्हें कौन बताये कि इन दोनों क्षेत्रों के विद्रोह का कारण सांस्कृतिक विपर्यय और शिनाख्त का संकट है न कि आर्थिक शोषण। अगर मारवाड़ी समुदाय शोषण का उपस्कर होता और उसके चलते खूनी विद्रोह होता तो सबसे पहले विद्रोह पश्चिम बंगाल में होता।

पूरी की पूरी जाति को नकारा और अपराधी घोषित करने का यह दंभ एक तरह से अमानवीयता है। पीढ़ी दर पीढ़ी राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था में सहयोग करने वाली एक सम्पूर्ण बिरादरी को आधुनिक काल के इस 'आचार्य' ने अंधे कुएं में डाल दिया।

जहां एक मारवाड़ियों का सवाल है उन्होंने इतिहास में भारतीय अर्थ व्यवस्था या देशी अर्थव्यवस्था के पुनरुद्धार और विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

१ मार्च १९६३ के अंक में टाइम पत्रिका ने लिखा था 'भारतीय उद्योग में ६० प्रतिशत पूंजी का नियंत्रण मारवाड़ियों के हाथ में है। एक लेखक का दंभ और शब्दों की चालबाजियां एक विकट दूरभिसंधि है जो खुद लेखक के लिए ही खतरनाक है। एक सम्पूर्ण बिरादरी को अपमानित करने का हक कमलेश्वर को किसने दिया ?

- रामअवतार गुप्त, सम्पादक- सन्मार्ग

मारवाड़ी समाज शोषक नहीं, सदा पोषक रहा है। राजस्थान के अलावा बाहर जिस राज्य में भी यह समाज गया वहां के लिए उसने प्रगति का कार्य किया। कमलेश्वर जी जैसे विद्वान लेखक कलमकार की किसी समाज के प्रति यह छोटी सोच हृदय को मर्माहत करती है। हर समाज एक दूसरे का पूरक है किसी एक समाज के बारे में इस प्रकार के विचारों की अभिव्यक्ति अशोभनीय ही कही जाएगी।

- महावीर प्रसाद नारसरिया, उपाध्यक्ष- राजस्थान परिषद्

मारवाड़ियों के खिलाफ अपनी भोंडी टिप्पणी करते वक्त कमलेश्वर भूल गए कि वह एक जिम्मेदार व्यक्ति हैं, साहित्यकार हैं और बुद्धिजीवी हैं। जिम्मेदार व बुद्धिजीवी वर्ग समाज में सेतु बंधन का कार्य करते हैं न कि दो वर्गों के बीच दिवार खड़ी करने की ?

- शिखरचंद जैन, कोलकाता

एक शैतान रूपी सज्जन ने देशभक्त मारवाड़ियों पर घोर और आश्चर्यजनक आरोप लगाकर मारवाड़ियों का अपमान किया है। इसकी जितनी निंदा की जाय, वह कम है। जो व्यक्ति अपने को मीडिया या समाज में गलत शब्दों का प्रयोग करके महान बनना चाहता है उसे समाज से बाहर कर देना चाहिए। भगवान से प्रार्थना करनी चाहिए कि वह कमलेश्वर को सद्बुद्धि दें। कमलेश्वर को खुले दिल से मारवाड़ियों से माफी मांगनी चाहिए।

- भूपेन्द्र नाथ पाठक, समाजवादी पार्टी- सलाहकार, हावड़ा

आजादी के बाद से अबतक देश-विदेश में मारवाड़ियों ने शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़क, अस्पताल, अनाथालय, विधवा आश्रम, कुटीर व बड़े उद्योग समूहों में पूंजी लगा कर देश की सेवा की। ऐसे में कमलेश्वर का बयान दुखद व दुर्भाग्यजनक है।

- महेश प्रसाद, हुगली

कमलेश के विचार स्वागतयोग्य नहीं हैं। मारवाड़ियों को केवल तराजू और गज मीटर वाले ही कहने-समझने वाले या तो कूप मंडुक हैं या फिर पूर्वाग्रहों-कुंठा से ग्रस्त। समाज आज जीवन के सभी क्षेत्रों शिक्षा, तकनीकी, साहित्य, पत्रकारिता, खेल, फिल्में, प्रशासनिक सेवाओं, उद्योग, स्वास्थ्य सेवाओं आदि में अग्रणी है। रामनाथ गोयनका, मूलचंद अग्रवाल, घनश्याम दास बिड़ला जैसे महान लोगों का व्यक्तित्व व कृतित्व कौन नहीं जानता। कौन हैं उद्योगपति लक्ष्मी मित्तल ?

- बी.के. सिंघानिया, रानीगंज

अगर मारवाड़ियों ने शोषण किया होता तो शायद देश विकासशील होने के बजाय विकासहीन होता। कमलेश्वर ने अगर मारवाड़ियों को दोष देने के बजाय असम के अग्रवाल के खिलाफ एक मंच तैयार किया होता, तो शायद असम में उग्रवाद समाप्त हो चुका होता। वह दिन दूर नहीं जब हमारा देश विकसित होगा और इसमें सबसे बड़ा हाथ मारवाड़ियों का होगा।

- दीपक स्वामी, कोलकाता

यह समझ से परे की बात है कि साहित्यकार कमलेश्वर को मारवाड़ी समाज से इतना गुरेज क्यों है ? अपनी नाराजगी का भड़ास पूरे समाज पर उतारना घोर आपत्तिजनक व निंदनीय है। कमलेश्वर का वैचारिक दृष्टिकोण इतना निम्नस्तर का है, उन्हें ऐसे घातक सोच का परित्याग करना चाहिए। सार्वजनिक तौर

पर माफी मांगनी चाहिए।

- मदनलाल निर्धन, लेखक, स्वतंत्र पत्रकार व सामाजिक कार्यकर्ता, हुगली

आजादी के इतिहास में मारवाड़ी समाज का आर्थिक योगदान व बलिदान उल्लेखनीय है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि व्यापार-उद्योग, कल-कारखानों से केवल मालिक ही कमाई नहीं करता है, बल्कि लाखों-करोड़ों लोगों को रोजी-रोटी, रोजगार व जीवन यापन का साधन मिलता है। ऐसे समाज की निंदा करना कमलेश्वर को शोभा नहीं देता। आज कोई ऐसा क्षेत्र नहीं सेवा नहीं, जहां मारवाड़ी नहीं। देश-विदेश में मारवाड़ी समाज ने अपना अस्तित्व कायम किया है। अमेरिका ब्रिटेन व कनाडा विदेशों में भारतीय संस्कृति, सभ्यता हिंदू धर्म को प्रतिष्ठित किया है। आशा है कि कमलेश्वर इन बातों का अध्ययन करेंगे और अपनी भूल सुधार कर दूसरा अनुकूल लेख लिखेंगे।

- विमलेश शर्मा, कोलकाता

मुझे नहीं मालूम कि ये कमलेश्वरजी कौन हैं, किन्तु मैं इतना कह सकती हूं कि कमलेश्वर जी किसी मारवाड़ी बनिया से उधार लेने के बाद उसे देना नहीं चाहते और उसके कड़े तकादा में दुखी हो किसी सभ्य सौम्य दानवीर समाज पर टिप्पणी करके समाज में अपना नाम करना चाहते हैं। कमलेश्वर जी ने देश की एकता और भाईचारे में क्या योगदान किया जरा वह भी बता दिया जाए।

- मनीषा सितानी, कोलकाता

ये कैसी धरित्री की ओछी मानसिकता ?

कुछ अखबारों के संपादकों के इन दिनों सुर्खियों में रहने के लिए ओछी मानसिकता का परिचय देने की वजह से व्यक्ति विशेष आहत है। संपादकीय कालम अखबार की रीढ़ की हड्डी मानी गई है। मामला राष्ट्र से संबंधित हो या देश की राजनीति, मामला समाज से संबंधित हो या किसी धार्मिक संस्कृति से, संपादकीय टिप्पणी ऐसी होनी चाहिए कि व्यक्ति विशेष या समाज विशेष पर सीधा प्रहार न हो, लेकिन इन दिनों उड़ीसा के एक प्रतिष्ठित अखबार दैनिक 'धरित्री' के संपादक महोदय श्री तथागत शतपथी ने दि. २६ जुलाई २००५ के अखबार में अपनी संपादकीय टिप्पणी में मारवाड़ी समाज पर जो सीधे वार किया है वह अशोभनीय तो है ही साथ में घोर निन्दनीय भी। किसी समाज के एकाध व्यक्तियों की कारगुजारी की सजा पूरे समाज को देना कहां तक न्यायोचित है और फिर जब मामला धार्मिक संस्कृति से जुड़ा हो तो और भी जटिल हो जाता है। संपादकीय में संपादक महोदय ने यह टिप्परी की है कि श्रावण मास में उत्कल प्रान्त में चलने वाली 'बोल बम' की संस्कृति उड़ीसा की संस्कृति है ही नहीं, इस संस्कृति के जनक हिन्दी भाषी प्रान्त से आए तथाकथित हिन्दू मारवाड़ी समाज है। 'बोलबम' के नाम पर भक्तों द्वारा संस्कृति को अपसंस्कृत करने का भी सारा दोष उन्होंने मारवाड़ी समाज पर लाद दिया है। बोल बम के नाम से चलने वाले भक्तों के करतूतों व धर्म की आड़ में चलने वाले असामाजिक कार्यों पर प्रहार करते हुए संपादक ने जो भी लिखा है उसका हम स्वागत करते हैं तथा काफी हद तक उनकी बातों में दम भी है।

यहां पर मैं और जरा स्पष्ट कर दूं कि जिन भी प्रांतों में यह बोल-बम की परंपरा जारी है वहां ज्यादातर भक्त उसी प्रान्त के ही निवासी होते हैं न कि मारवाड़ी। मारवाड़ी समाज के लोग तो सिर्फ उन भक्तों के ठहरने, खान-पान, सेवा-सुश्रुषा आदि की व्यवस्था में रहते हैं।

आजकल विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों व धर्म संस्कृति में जो अपमिश्रण का दौर चल रहा है उस पर समय-समय पर प्रहार होने चाहिए और कलमकार को भी कलम उठानी चाहिए, लेकिन उसका सारा दोष किसी व्यक्ति विशेष या समाज विशेष पर लाद देना गले नहीं उतरती। संपादक ने लिखा है कि बोल-बम भक्तों द्वारा व्यवहार में लाए जाने वाले गेरूआ वस्त्र तथा पूजा अर्चना में लगने वाले सारे सामानों का कारोबार भी इन मारवाड़ियों के कब्जे में है तथा इस समाज के लोग अनेक अनैतिक व गैरकानूनी धंधों में लिप्त है। समाज सेवा के नाम से इस समाज के व्यक्ति कटक-भुवनेश्वर के बीच सरकारी जमीनों पर जबरन दखल किए हुए हैं। इस संबंध में हम लिखना चाहेंगे कि टैक्स चोरी या बिजली चोरी जैसी राष्ट्रद्रोही घटना अथवा कहीं भी सरकारी जमीन पर बेजा कब्जा में किसी भी समाज का कोई भी व्यक्ति लिप्त हो तो उसे बख्शा नहीं जाना चाहिए और उसके लिए सरकार ने कठोर दंड की व्यवस्था भी की है। रही बात समाज सेवा की, मारवाड़ी समाज हमेशा दानी रहा है और आगे भी रहेगा, कारण इस समाज के लोगों में अर्जन के साथ-साथ विसर्जन की भावना जो है। इतिहास गवाह है देश की आजादी में, देश की आर्थिक समृद्धि में भी इस समाज के स्पष्ट हस्ताक्षर हैं। पूरे देश को ही नहीं बल्कि उड़ीसा प्रांत को ही देखें छोटे-छोटे शहर-गांव में जहां कहीं भी मारवाड़ी समाज के दस-बीस परिवार भी हैं तो वहां निश्चित तौर पर अग्रसेन भवन, जैन भवन या मारवाड़ी पंचायती धर्मशाला (सरायघर) मन्दिर या स्कूल आदि का निर्माण हुआ मिलेगा। क्या इन स्कूलों में अन्य जाति के बच्चों को नहीं पढ़ाया जाता ? क्या उन धर्मशालाओं व भवनों में अन्य जाति के मुसाफिरों को विश्राम नहीं कराया जाता ? या किसी और की शादी-ब्याह में वे भवन काम नहीं आते ? क्या मारवाड़ी समाज द्वारा बनाए गए मन्दिरों में अन्य जातियों के लोग पूजा अर्चना नहीं करते ? क्या धर्मशाला, भवन, स्कूल आदि के निर्माण में अन्य जाति के लोग आगे नहीं आ सकते ? आ सकते हैं- परन्तु उसके लिए जरूरी है विसर्जन की भावना।

शुक्र है संपादक ने भोलेनाथ भगवान शिव को मारवाड़ियों का भगवान नहीं कहा- मारावाड़ी समाज के बारे में अनेक अनर्गल बातें लिखकर संपादक महोदय क्या हासिल करना चाहते हैं यह तो पता नहीं लेकिन इसके पूर्व भी वे अपनी जन्मदायिनी मां (पूर्व मुख्यमंत्री श्रीमती नन्दिनी सतपथी) के प्रति भी काफी अनर्गल बातें लिखकर चर्चित होकर मां को आहत करने के साथ अपनी ओछी मानसिकता का परिचय दे चुके हैं। शायद ऐसा लगता है कि संपादक महोदय विकृत मानसिकता के शिकार हो चुके हैं और ऐसे विकृत मानसिक रोगी को लोकसभा में बने रहने का कोई नैतिक अधिकार नहीं रह जाता। ज्ञात रहे कि श्री शतपथी बीजू जनता दल से लोकसभा सदस्य हैं। मैं संपादक महोदय से यही विनती करूंगा कि किसी भी समाज के ऊपर ओछी टिप्पणी करने से पूर्व अपने विवेक का इस्तेमाल अवश्य कर लेवें।

- लायन ईश्वरचन्द जैन, टिटिलागढ़, उड़ीसा

महात्मा गांधी के प्रेरक प्रसंग

श्री रामनिवास लखोटिया, नई दिल्ली

महात्मा गांधी का जीवन प्रेरणामय रहा है। जहां वे एक ओर सत्य और अहिंसा के पुजारी थे, वही उन्हें रंग भेद की नीति पसंद नहीं थी। छोटे और बड़े सबके साथ अच्छा व्यवहार करना उनकी विशेषता थी। उनके जीवन में अनेकों ऐसे अवसर आए हैं जिनसे बच्चे, बूढ़े और सभी प्रकार के व्यक्ति प्रेरणा ले सकते हैं। उनके जीवन से जुड़े हुए कुछ प्रेरक प्रसंग इस लेख में नीचे दिए जा रहे हैं।

सत्यवादी वकील :

यहां तो सर्वविदित है कि महात्मा गांधी सत्य के पुजारी थे लेकिन वकालत के पेशे में भी वे सच्चे मुकदमें ही लेते थे और वे रुपये पैसे की परवाह नहीं कर अपने मुवक्किलों से भी सत्य ही बुलवाते थे। एक बार की बात है कि वे जब दक्षिण अफ्रीका के डर्बन नगर में वकालत करते थे तब श्री रूस्तमजी जो एक प्रसिद्ध पारसी सेठ थे, उनके पास आए और उन्होंने अपने पर लगा हुआ कर की चोरी का मुकदमा लड़ने के लिए महात्मा गांधी से प्रार्थनी की। महात्मा गांधी ने रूस्तमजी से कहा कि यदि आपने कर की चोरी की है तो सारी बात मुझे सच-सच बतला दो। उनकी बात का रूस्तम जी पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि उन्होंने गांधी जी के सामने यह कबूल किया कि उन्होंने इस समय ही नहीं बल्कि पहले भी कर की चोरी कई बार की है। यह सुनकर गांधी जी ने कहा- 'यदि यही सच्ची बात आप अदालत में कह दें और इस बात का मुझे पूर्ण आश्वासन दें तभी मैं आपका मुकदमा लड़ सकता हूं।'

रूस्तमजी ने अपनी स्वीकृति प्रदान की और गांधी जी उस मुकदमें को लड़ने के लिए तैयार हो गए। अदालत में गांधी जी ने कटघरे में खड़े रूस्तमजी से दो सवाल किए- 'क्या आपने कर की चोरी की है और क्या आपने इससे भी पहले कर की चोरी की है?'

रूस्तम जी का उत्तर था- 'जी हां पहले भी की है और अनेक बार कर की चोरी की है। इसके पश्चात रूस्तमजी ने सिलसिले वार सारी विगत अदालत के सामने पेश कर दी। तब गांधी जी ने जज से कहा- 'जज साहब, मेरे मुवक्किल ने सारी बातें सच-सच कह दी हैं क्योंकि उसका हृदय परिवर्तन हो चुका है। अब आपको अधिकार है कि आप इसे योग्य सजा दें।' बस यह सुनना था कि जज पर गांधी जी की सत्यनिष्ठा का ऐसा प्रभाव पड़ा कि जज ने रूस्तमजी को कोई सजा नहीं दी, और, रूस्तम जी ने भी फिर भविष्य में कभी कर की चोरी नहीं की।

अपने श्रोताओं से सच कहलवाना :

गांधी जी जहां सत्य प्रिय थे वहां विनोद प्रिय भी। एक बार की बात है कि वे एक सभा में भाषण देने गए तब कुछ लोगों ने जोर-जोर से कहना शुरू किया- 'आपकी बातें हमें सुनाई नहीं दे रही हैं'।

गांधी जी समझ तो गए कि ये लोग जबरदस्ती ऐसी बात कह रहे हैं। वे मुस्कुराए और फिर बोले- 'जिन लोगों को मेरी आवाज सुनाई नहीं दे रही है वे अपना-अपना हाथ खड़ा कर लें।'

बस पीछे बैठे हुए कुछ आदमियों ने हाथ खड़े कर लिए तब गांधी जी को उनकी मूर्खता पर हंसी आई और बोले- 'जब आप लोगों को भाषण के वक्त मेरी आवाज नहीं सुनाई दी तो कृपया बतलाएं कि अब यह आवाज कैसे सुनाई दी?'

इतना सुनना था कि सारे श्रोता शर्म के मारे झेप गए और अपने हाथ नीचे कर के चुपचाप भाषण सुनने लगे।

चंदे में तांबे का सिक्का :

एक बार की बात है कि गांधी जी चर्खा संघ के चन्दे के लिए उड़ीसा गए हुए थे। उनका भाषण समाप्त हो चुका था। एक बूढ़ी औरत जिसके बाल भूरे थे और कपड़े फटे हुए थे वह गांधी जी के पास जाने की जिद्द करने लगी। परन्तु स्वयंसेवकों ने उसे बहुत रोका। लेकिन वह नहीं मानी और उस स्थान पर पहुंच ही गई जहां बापू बैठे थे। उस बुढ़िया ने अपनी साड़ी के पल्लू में बंधा हुआ एक ताम्बे का सिक्का निकाल कर गांधी जी के पैरों में रख दिया। उन दिनों चर्खा संघ के चन्दे की सारी रकम जमुना लाल बजाज के पास रहती थी। जब बजाज जी ने वह सिक्का मांगा तो गांधी जी ने उस सिक्के को देने से इनकार कर दिया। जमुना लाल जी बजाज को हंसी आई और वे बोले- 'बापू मेरे पास हजारों रुपये चर्खा संघ के जमा हैं फिर भी आपको मेरे ऊपर एक ताम्बे के सिक्के के लिए विश्वास नहीं हैं।' इस पर जो उत्तर गांधी जी ने दिया वह हमारे राजनैतिक नेताओं के लिए बहुत ही प्रेरणा दायक है। गांधी जी ने कहा- 'यह ताम्बे का सिक्का हजारों लाखों रुपये से अधिक कीमती है। यदि किसी व्यक्ति के पास लाखों रुपये हों और वह कुछ हजार रुपये चंदे में दे दे तो उसे कोई फर्क नहीं पड़ता, पर यह सिक्का तो उस बुढ़िया का सब कुछ था। इसलिए इस सिक्के की कीमत हजारों रुपये से भी अधिक ज्यादा है।

स्वाभिमानी बालक के फल :

एक समय की बात है कि महात्मा गांधी आगा खां महल में नजर बंद थे। उनके मित्र रोज कुछ न कुछ भेंट लाते थे। एक दिन की बात है कि एक १०-१२ साल का बालक जो बिल्कुल मैले कपड़े पहने हुए था वह आगा खां महल में पहुंचा और बापू को अपने हाथ से दो-तीन फल देने की जिद करने लगा। तभी किसी के मुंह से यह निकल पड़ा- 'चल भिखारी कहीं का, चला है बापू से मिलने। दरबान इसे जल्दी से बाहर निकालो।' बस इतना सुनना था कि उस नन्हें बालक ने जोर से कहा- 'बापू, मैं भिखारी नहीं हूं, दिन भर मजदूरी कर मैंने जो कुछ पैसा बचाएं हैं उन्हीं से यह फल मैं खरीद कर लाया हूं। यह मेरी खुद की कमाई है, चोरी की नहीं।' बस बालक के ऐसे स्वाभिमान भरे शब्दों को सुनना था कि बापू प्रसन्नता से बोल पड़े- धन्य है वह मां जिसने तुम जैसे बालक को जन्म दिया। पैसे वाले मित्रों के फल तो मुझे रोज ही मिलते रहते हैं, लेकिन असली मीठे फल तो मुझे आज मिले हैं। और, वह बालक था स्वाभिमान का पुजारी डा. राम मनोहर

लोहिया, जिसने बापू के आदर्शों पर चलकर अपना सब कुछ देश के लिए न्यौछावर किया।

अपराधियों की पंक्ति में बापू :

साबरमती आश्रम में जब बापू थे तब एक नियम था कि भोजन के समय दो बार घंटी बजाई जाती थी। जो व्यक्ति दूसरी घंटी बजने तक नहीं पहुंच पाते थे उन्हें दूसरी पंक्ति लगने तक प्रतीक्षा करनी पड़ती थी। एक दिन की बात है कि दूसरी घंटी बजने तक बापू भोजनालय में उपस्थित नहीं हो सके और भोजनालय का द्वार बंद हो गया। जब बापू द्वार तक आए और दूसरी पंक्ति लगने की प्रतीक्षा करने लगे तभी उनके एक सहयोगी ने हंसते हुए बापू को ताने भरे हुए शब्दों में कहा- 'बापू, आज तो आप भी अपराधियों की पंक्ति में खड़े हैं।'

यह बात सुनकर बापू ने बड़ी विनम्रता से कहा- 'नियम तो आखिर नियम है। सभी पर नियम समान रूप से लागू होने चाहिए और अगर किसी से गलती हो जाए तो उसे सुधारने के लिए सजा भी भुगतनी चाहिए। और मैं भी आज अपराधियों की पंक्ति में इसलिए खड़ा हूं।

भेदभाव वाला चंदा स्वीकार नहीं :

गांधी जी ने स्वतंत्रता आन्दोलन, चर्खा संघ आदि के लिए चंदा इकट्ठा किया लेकिन जिस चंदे में कोई भेदभाव होता था तो वह उसे स्वीकार नहीं करते थे। एक बार की बात है कि एक कट्टर धार्मिक संस्था ने एक बहुत बड़ी राशि गांधी जी को इस शर्त पर देनी चाही कि उसका उपयोग हरिजनों और मुसलमानों के लिए कदापि नहीं करें और बाकी किसी के लिए जैसे वह चाहें उसका उपयोग कर सकते हैं। बस गांधी जी को यह भेदभाव अच्छा नहीं लगा। उन्होंने बहुत ही सहज भाव में कहा- 'क्षमा कीजिए, अब तो मैं यह राशि बिल्कुल नहीं लूंगा, क्योंकि मैं तो उन्हीं पर खर्च करने के लिए यह पैसा लेता हूं'। अब आप किसी और ऐसे महात्मा की तलाश कीजिए जिससे शायद यह संभव हो सके।'

अछूत कन्या का जूठा बिस्कुट :

गांधी जी के शिष्यों में अमीचन्द नाम का एक व्यक्ति था। एक बार गांधी जी की निजी राय जानने के उद्देश्य से अछूतोद्धार के बारे में उन्होंने गांधी जी से तीन प्रश्न किए। गांधी जी उत्तर देना ही चाहते थे तभी एक हरिजन कन्या जिसका नाम लक्ष्मी था और जिसे गांधी जी ने गोद ले रखा था वह भागती हुई आई और गांधी जी की गोद में बैठ गई। वह बिस्कुट खा रही थी। आधा बिस्कुट खाने के पश्चात उस कन्या ने बड़े स्वाभाविक ढंग से शेष आधा बचा हुआ जूठा बिस्कुट गांधी जी के मुंह में दे दिया। बस अमीचन्द उठ कर खड़ा हुआ और गांधी जी से अपने प्रश्नों के उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना ही जाने लगा और जाते-जाते बोला- 'बस बापू मुझे मेरे प्रश्नों का उत्तर मिल गया है।' ऐसे थे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी।●

अखण्ड भारत

बाधायें आती हैं आये, हम मानव क्यों कर घबड़ाये,
हम जीवन दर्शक के भूखों स्वर्ग धरा पर ठहर न जायें।
मेघराज मलहार गा रहें, इस सृष्टि के उथल-पुथल कर,
गरिमा कब तक मिलेगी सबको, क्यों ना हम गान्डिव बन जायें।

रोज प्रतियोगिताएं होती हैं, मंत्र-मुग्ध होता है मानव
भरा पूरा संसार हमारा, हम भी गीत गजल कोई गायें।
सम्मोहन कितना होता है, सास्वत चिन्तन के करने में,
मन झंकृत होगा यह कब तक, तापमान जग का सह जायें।

सांस्कृतिक है प्रतिबिम्ब हमारा, जग में हरपल झलक रहा है
पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण चारों दिशा में शोर मचायें।
है अखण्ड भारत जब अपना, आओ इसका मान बढ़ायें,
समय देखकर चलने वाले, हम क्यों बढ़ने से रुक जायें।

अद्भुत जानकारियां लेकर ही हम, आविष्कार नया करते हैं,
उज्वल है विज्ञान हमारा, प्रत्योगिक तकनिक अपनाएं।
वैदिक रूप हमारा हरदम, देखो जग में निखर रहा है,
भारत भूमि धन्य भूमि है आओ इस पर बली-बली जायें।

सिरमौरी बनना है मुझको, विश्व क्रांति का विगुल बजाकर,
उदभव तो होगा इस जग का, हम अपना पौरुष अपनायें।
भावनायें भाविक कर देती, हम आकर्षित ना हो जायें,
सद्बुद्धि के दाता है हम, मानव जीवन सफल बनायें।

सब कुछ है अपनी धरती पर, उसको ही उपयोग में लायें,
लहर रहा है अपना तिरंगा, नभ में उसकी ज्योति जलायें।
'तुलस्यान' क्यों अंधकार है नव प्रकाश धरती पर लायें,
छोटा-बड़ा कोई नहीं जग में, हर मानव को गले लगायें।

✍ जगदीश प्रसाद तुलस्यान
मुजफ्फरपुर (बिहार)

प्राचीन और नवीन

श्रीमती स्वराजमणी अग्रवाल, जब्बलपुर

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से देश के सामाजिक व सांस्कृतिक परिवेश में क्रांतिकारी परिवर्तन आया है। विशेष कर नारी समाज में यह परिवर्तन अत्यंत तीव्रता के साथ उभरता हुआ प्रतीत हो रहा है। आज से सौ वर्ष पूर्व समाज और बिरादरी के जो नियम, रीति-रिवाज समाज के विकास का एक अंग थी, वे सब छिन्न-भिन्न होकर तार-तार होते नजर आ रहे हैं। उनके स्थान पर एक नए समाज, नई सोच, नई विचारधारा का अभ्युदय हो रहा है। जहां सभी स्वतंत्र है। न कोई बन्धन है, न परम्पराओं का औचित्य है। जहां सुख मिले, जिससे सुख मिले वही राह श्रेष्ठ है, वही अनुकरणीय है।

युग की इस अंधी दौड़ में प्रगति के नाम पर नारी सबसे आगे है। कुछ वर्ष पूर्व संयुक्त परिवार की प्रथा थी। जहां नारी सर्वत्र श्रद्धा और सम्मान की पात्र मानी जाती थी। परिवार के पोषण में बड़े-बड़े महत्वपूर्ण कार्यों में उसकी सलाह ली जाती थी। उसकी अनुमति के बिना कोई कार्य आरंभ नहीं होता था। भारतीय दर्शन में तो नारी को अर्धांगिनी कहा गया है। वहां नारी और पुरुष को स्वतंत्र इकाई नहीं माना गाया है। बल्कि दोनों को एक-दूसरे का पूरक माना गया हैं, दोनों मिलकर ही संसार को पूर्णता का आभास कराते हैं। यह पूर्णता केवल सृष्टि के विकास, संतानोत्पत्ति के लिए नहीं है, बल्कि गुणों की दृष्टि से भी प्रकृति की दृष्टि से भी, दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। यही भारतीय दर्शन की व्याख्या है, जो विभिन्न शास्त्रों में पदे-पदे परिलक्षित होती है। इसलिए बच्चों के लालन-पालन से लेकर बुढ़ापे में एक दूसरे के पूरक होते हुए, नारी और पुरुष एक भावात्मक संबंध बनाते हैं, जो परस्पर जीवन जीने का सहारा बनता है। इसके लिए दोनों का एक-दूसरे के प्रति पूर्ण समर्पण ही उनके जीवन को अनंत काल तक सुखमय बनाता है। यह था भारतीय संस्कृति में जीवन जीने का तरीका, जहां नारी ही सर्वोच्च श्रद्धा और सम्मान की पात्र मानी जाती थी।

समय बदला। विदेशी शासकों के प्रभाव ने नारी की इस स्थिति पर पानी फेर दिया। हमारी संस्कृति में तो नारी को दोयम दर्जे की समझने की बात कहीं आई ही नहीं थी। मध्यकाल में सामरिक परिस्थितियों के कारण जो नियम बने उसमें नारी का सम्मान धुंधला होता गया, वह दोयम दर्जे की होकर घूंघट, अशिक्षा के साथ घर की चहार दीवारी में कैद कर दी गई। या यूं कहें कि समाज के हालात को देखते हुए उसने स्वयं अपने को बंदी बनाने में अपनी सुरक्षा समझी। फिर शुरू हुई सामाजिक बंधनों की आड़ में नारी शोषण, उत्पीड़न, क्रूरता की अकथनीय दास्तान। जहां कोई न्याय नहीं था, केवल पुकार ही पुकार, आर्तनाद और कराह के सिवा कुछ नहीं था। मध्यकाल में समाज के जो नियम बने उसमें नारी ही शोषित नहीं हुई, पूरे समाज का ही शोषण और पतन हुआ। देश और समाज की तरक्की में सर्वाधिक योगदान देने वाली शक्ति को अपंग कर दिया गया। नारी, भय, अंधविश्वास और अशिक्षा में घिरी अपनी तरक्की की बाट जोहती रही। समय भागता रहा। नारी ने तमाम गिरी हुई, कुचली हुई परिस्थिति के बाद भी अपना धैर्य नहीं छोड़ा।

विदेशी शासकों के जाते ही, कुछ ही वर्षों के अंतराल में नारी ने अपने परिश्रम व पराक्रम से देश के हर क्षेत्र में अपना सम्माननीय स्थान बनाया है। राजनीति में इंदिरा गांधी, विजयलक्ष्मी पंडित, सरोजिनी नायडू आदि प्रशासनिक सेवा में किरण वेदी, साहस और जीवट के कार्यों में कल्पना चावला तथा वीरता में झांसी की रानी, रानी दुर्गावती आदि महिलाएं स्तुतनीय हैं, अनुकरणीय हैं। इससे यह सिद्ध होता है नारी प्रतिभा व साहस में पुरुष से कम नहीं है, परन्तु यह गुण सम्पूर्ण नारी समाज का नहीं है। सदियों से अपनी अस्मिता को भूल अज्ञान के अंधेरे में भटकने वाली नारी समाज का वृहत अंश अभी भी कमजोर और अंधविश्वासों से ही घिरा हुआ है। इसलिए उसके इस उत्थान ने उसे भले ही लाभ पहुंचाया हो, पर देश में उसने द्वंद्वात्मक पहलुओं को जन्म दिया है। इसमें दो मत नहीं हैं।

भले ही वह अपनी कार्य कुशलता का परिचय प्रत्येक स्थान पर दे रही है, और आर्थिक व मानसिक रूप से स्वावलंबी होती जा रही है, लेकिन भारतीय नारी का जो गरिमामय व्यक्तित्व था वह अब यदा-कदा ही देखने में आता है। आज हम देख रहे हैं, विज्ञापन, सिनेमा, म्यूजिक एलबमों, टी.वी. धारावाहिकों के माध्यम से जो नारी का चरित्र दिखाया जा रहा है, उससे तो वह महज एक शो-पीस सस्ती और बिकाऊ वस्तु होकर रह गई है। खासकर टी.वी. के माध्यम से परोसी जा रही नई संस्कृति का प्रचलन विचारणीय विषय है। वहां नारी का जो घटिया रूप दिखाया जा रहा है, वहां भारत की प्राचीन नारी का सम्मान तो है ही नहीं। नारी तो सदा ही अपने प्रेम और त्याग से भटकते हुए मानव को रास्ता दिखाती आई है, यदि वही भटक गई तो संस्कृति की रक्षा कैसे होगी ? इस विषय पर दीर्घ चर्चा होना आवश्यक है।

नारी की वर्तमान स्थिति को सुधारने के लिए हमें घर और समाज के वातावरण में सुधार लाना होगा। सदियों पुरानी मानसिकता को बदल कर स्त्री पुरुष में परस्पर सामंजस्य बिठाने की पहल करनी होगी।

मुझे विश्वास है कि नारी थोड़े से ही प्रयासों से अपनी लुप्त होती हुई गरिमा को पुन: प्राप्त करने में समर्थ होगी। यह परिवर्तन का युग है। यहां जो आज है वह कल नहीं रहेगा, जो कल है वह आज नहीं रहेगा। सारी विडंबनाओं, शोषण, उत्पीड़न, स्वतंत्रता और भ्रमित जीवन के बीच से ही भारत की नारी अपना सही रास्ता ढूंढ कर अपने गरिमामय पद पर पुन: प्रतिष्ठित होगी ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है, भारतीय महिला वो शै है।

जो मंझधार में भी कूदे तो वह साहिल बन जाए,
पत्थर को भी छूले तो वह फूल बन जाए।
हौंसले इतने बुलंद है इसके कि तूफां में भी
जहां पे रुके पांव वहीं मंजिल हो जाए।।●

लोकगीत एवं संगीत की भूमि राजस्थान

✍ हनुमान सरावगी, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

लोक गीतों की प्राचीन धारा मानव मन में प्रकृति जनित प्रभावों से प्रष्फुटित हुई है। मानव मन की संवेदनशीलता प्रकृति के विभिन्न रंगों से उत्प्रेरित होती है। आनंद के रंग उसे प्रफुल्लित करते हैं, तो दुख के रंग उदास। पहला गीत जिसने भी गाया होगा, करुणा के अतिरेक में गाया होगा। महाकवि वाल्मीकि तमसा नदी की ओर स्नान के लिए चल पड़ते हैं। राह में उन्हें व्याध द्वारा आहत एक क्रौंच तड़पता हुआ, रक्तरंजित भूमि पर गिरा दिख पड़ता है। वहीं पर विरह-वेदना से सम्पृक्त क्रौंची के बोल उनके हृदय को विदीर्ण करता है। सहसा महाकवि वाल्मीकि द्रवित हो अनुष्टुप छंद में गा उठते हैं - 'मां निषाध प्रतिष्ठां त्वमगम: शाश्वती समा:। यत्क्रौंचमिथुनादेकमवधी: काम मोहितम्।' और इसी के साथ रामायण की कथा धारा प्रष्फुटित होती है।

विश्व की समस्त भाषाओं में लोक साहित्य प्राप्य है, किन्तु भारतीय लोक साहित्य प्रकृति की सन्निकटता के कारण विशिष्ट लालित्य और मधुरता रखता है, ओजस्विता रखता है और जन-जीवन को रस प्लावित करता है। भारत के विभिन्न अंचलों के लोक साहित्यों में, राजस्थान अंचल के लोक साहित्य की अलग ही पहचान-प्रभाव है, क्योंकि राजस्थान की धरती पर प्रकृति ने अनेकानेक रंग बिखेरे हैं और उन्हीं रंगों से यहां के लोक गीत, संगीत एवं नृत्य रंगे हुए हैं। यह त्रिवेणी मानवीय संवेदना की अन्यतम अनुभूति की भूमि पर अति प्राचीन काल से प्रवाहित हो रही है। इसके निनादित प्रवाह में राजस्थानी जन-जीवन की समस्त सामाजिक, धार्मिक एवं ऐतिहासिक प्रवृत्तियां झिलमिल करती हैं। यहां के लोकगीतों की धारा राजस्थान की उच्च कोटि की संस्कृति का दिक्दर्शन कराती है। इस धारा में, प्रेम, विरह, मिलन, भक्ति, युद्ध, शांति, ऋतु, पर्व-त्यौहार, सब कुछ समाहित हैं।

राजस्थानी काव्य-धारा भूतकाल के अनुभव, वर्तमान के सत्य और भविष्य की दिशा को रेखांकित करती है। आंचलिक भाषा डिंगल, पिंगल अथवा मिश्रित राजस्थानी में बही यह रस धारा राजस्थान के घर-घर में आनंद बिखेरने के साथ-साथ भाषायी सीमा को पार कर सम्पूर्ण भारत में लोगों को अमृत पान कराती है। राजस्थानी लोक साहित्य की समृद्ध परम्परा विश्व लोक मंच पर दमकते हुए सूर्य के समान है।

सातवीं से दसवीं शताब्दी तक सिद्धों की वाणियां राजस्थान में विशेष रूप से अवगुंजित होती रहीं। उनकी वाणियां विभिन्न 'रासो' में संकलित हैं। उनकी वाणियों से लोक-जीवन के आंगन में रंग-बिरंगे, भिन्न-भिन्न सुगंधों वाले पुष्प खिले। इस काल में राजस्थान विशेष रूप से अनेकानेक युद्धों से गुजरा और यहां के वीर एवं वीरांगनाओं ने अपने शौर्य, पराक्रम और त्याग से स्वर्णिम इतिहास लिखा और उनकी गाथाओं को नाम-अनाम रचनाकारों ने लोक गीतों में पिरोया है।

जब युद्ध का नगाड़ा डिम-डिम बज रहा हो... अश्व के खुर चंचल हो उठे हों, वीरों के लिए युद्ध के प्रस्थान की वेला हो और वहां चन्दवरदायी जैसा कवि कलम और तलवार के साथ उपस्थित हो तो, वीर रस की काव्य-धारा बहना स्वाभाविक है - करे रुंड-मुंड, करी कुम्भ फारे, वरं सूर सामंत हुंकि, जीत के नद्द निसान घोरं...'' वहीं जब चंदवरदायी भक्ति रस में रचना करते हैं तब उनकी समर्पण भावना हृदय को छूती है - ''प्रनम्म प्रथम मम आदि देव, उंकार शब्द जिन करि अछेव।'' दो विपरीत रसों में गाने वाले चन्दवरदायी अद्भुत कवि हैं। जो काव्य धारा चन्दवरदायी एवं उनके बाद के रचनाकारों ने सृजित किया, वह अन्यत्र दुर्लभ है। राजस्थान में कहा जाता है- 'यहां के कवि या चारण अपनी शब्द-शक्ति से आधा युद्ध पहले ही जीत लेते थे!

राजस्थान में अनावृष्टि, बंजर भूमि, दुष्कर, कृषि अनिश्चितता से भरे व्यवसाय के बीच पनपती जिन्दगी, सदैव कठिन रही है। परिश्रम और संघर्ष के बीच ईश्वर भक्ति का पनपना स्वाभाविक है। इस विलक्षण भूमि पर सोलहवीं शताब्दी में मीरा का प्रादुर्भाव हुआ। जब सारे भक्त कवि ईश्वर को अपने गीत अर्पित करने के लिए उन्हें दूसरे लोक का वासी मान कर पाति लिख रहे थे, मीरा के समर्पण और साधना की शक्ति से उनके आराध्य श्रीकृष्ण उनके हृदय में ही आ विराजते हैं- ''मेरा पिया मेरे हीय बसत हैं, ना कहूं आती जाती''.... भक्ति रस की ऐसी रस धारा कहीं और प्रवाहित होती नजर नहीं आती। आज इस रस धारा में भारत ही नहीं, पश्चिम के देश भी आनन्द के गोते लगा रहे हैं।

शब्द भक्ति रस में धुले हों तो उसके साथ ही इकतारा या झांझ से सम्मोहक संगीत उत्पन्न होता है। जब गीत और संगीत एक लय में हों तो भक्त सुधि खो कर नृत्य कर उठें तो किसी को आश्चर्य नहीं करना चाहिए। यह दृश्य राजस्थान के लोक साहित्य पटल पर एक आम दृश्य है।

ऋतु संबंधी राजस्थानी लोक गीतों या बारहमासा गीतों के लय और स्वर, ऋतु की पहचान करा देने की असीम क्षमता रखते हैं। गीतों के स्वर में बसंत के सोलहों शृंगार, सावन की रिमझिम वर्षा और शरद् की चांदनी सुवासित होती है। ये गीत मन-आंगन को प्रफुल्लित करते हैं और उसे ऋतु-रंग डालते हैं। गीतों के अक्षर-अक्षर, शब्द-शब्द विविध ऋतुओं के स्वरों को जीवंत करते हैं। फसल गीतों के क्षेत्र में भी राजस्थानी लोक साहित्य अत्यंत उच्च कोटि का है।

राजस्थान की सामाजिक-सांस्कृतिक व्यवस्था में विरह-मिलन के अवसर अन्य क्षेत्रों की तुलना में अधिक मार्मिक रूप में परिलक्षित होते हैं। यहां के विरह लोक गीत हृदय की अनंत गहराई से ध्वनित-प्रतिध्वनित होते प्रतीत होते हैं। फलत: गीतों की अभिव्यक्ति बहुत सम्मोहक, मर्मस्पर्शी और भावप्रवण होते हैं।

राजस्थान में संस्कार गीतों की बहुत ही प्रभावी परम्परा है। जन्म हो या विवाह या कोई अन्य संस्कार, श्रुति परम्परा से पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलेआ रहे विभिन्न रसों और भावों से भींगे ये गीत अवसर के अनुकूल वातावरण या परिवेश का निर्माण कर देते हैं और वह अवसर जीवंत हो उठता है। वृहद् राजस्थान में थोड़े-बहुत अंतर के साथ इन गीतों को सभी वर्गों के लोग मांगलिक

कार्यों पर गाते हैं।

राजस्थान के शृंगारिक लोक गीतों में सौंदर्य, माधुर्य, प्रेम, विरह, मिलन, कोमलता आदि स्थितियों पर सजीव शब्द-चित्र उपस्थित होते हैं। लोग उस लालित्यपूर्ण आकाश में मंथमुग्ध हो कर स्वयं को भूल जाते हैं। एक प्रेमी अपनी प्रेयसी की कोमलता का सुन्दर अहसास इस गीत में करता है- तावड़ों मंदो पड़जा रे, गोरी को नाजुक जी, किरण बादल में छिप जा रे- यानी, ओ सूर्य देवता मंद पड़ जाओ, ओ किरण बादलों की ओट में छिप जाओ, कोमल गौरांगी को क्लांत मत करो- राजस्थानी गीतों में शृंगार के सभी प्रतीक, प्रतिबिम्ब और अलंकार मौलिक, मनमोहक और स्वप्निल से हैं।

राजस्थानी लोरियों में मीठे-मीठे सपने पिरोये होते हैं। सुन्दर लोरियों की गाथाएं बाल-मन को उनकी संस्कृति और स्वर्णिम इतिहास का पाठ पढ़ाती हैं और उनके भविष्य का निर्माण करती हैं। उनके व्यक्तित्व की आधार-शिला रखती है।

राजस्थान का अनुपम परिवेश, उसकी सामाजिक परिस्थितियां, उसकी सांस्कृतिक जीवंतता, उसकी उत्कृष्ट ऐतिहासिकता, उसकी विविधता से परिपूर्ण भौगोलिक-संरचना, उत्तम साहित्य सृजन की समस्त आधारों को स्वमेव उपस्थित कर देती हैं। यही कारण है कि यहां के लोकगीतों एवं संगीत में मौलिकता और प्राचीनता बहुलता में उपस्थित है।

राजस्थान के लोग जब अपने-अपने क्षेत्रों की चटक रंगों की पगड़ियों और परिधानों में उपस्थित होते हैं तो वे स्वयं भी प्राणवंत गीत की तरह प्रतीत होते हैं। यहां के रचनाकारों, शिल्पकारों ने शब्द से और पत्थरों से भी जीवंत एवं ओजस्वी रचनाएं प्रस्तुत की हैं। यहां की भूमि, यहां का मरुस्थल, यहां के वन-पर्वत, यहां की वास्तुकेला, यहां के अनूठी संस्कृति वाले लोगों के कंठ-गीतों से सदैव अवगूंजित होते हैं। जिस गीत या संगीत का आधार ही सत्य रूपा प्रकृति हो, वह गीत या संगीत अनूठा होगा ही। जहां के गीतों में करुणा, विरह, हास्य-व्यंग्य, शौर्य, रौद्र, शृंगार और शांत रसों का अद्‌भुत संगम होगा, वहां के गीतों का रसास्वादन करना सभी सुधि हृदय की पहली कामना होगी ही। राजस्थान के कण-कण में स्पन्दन है, संवेदन है, सृजनशीलता है और साहित्य-संगीत है।●

विचार संगोष्ठी

"गिरते सामाजिक मूल्य एवं बढ़ता दिखावा"

'गिरते सामाजिक मूल्य एवं बढ़ता दिखावा' विषयक गोष्ठी में अपना विचार प्रस्तुत करते हुए सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री हरि प्रसाद बुधिया ने गिरते सामाजिक मूल्य को रोकने के लिए परस्पर ईर्ष्या, द्वेष, प्रतिद्वन्द्विता की भावना का परित्याग करने का सुझाव दिया। उन्होंने कहा हमारे पूर्वजों की उपलब्धियां मूल्यों पर आधारित थीं। आज दिखावा एवं झूठे प्रदर्शन के कारण इसके स्तर में गिरावट आई है। ऐसी पद्धति अपनाई जाय कि आपस में सामंजस्य रखकर, एकता को अपनाकर अपने जीवन, परिवार, समाज और राष्ट्र की प्रगति की जा सके। अपनी जाति में एकता हो, विचारों का सामंजस्य हो, मिलकर चलें, घटनाओं को सभी समान रूप से अनुभूति करें, हर घर, हर परिवार में ऐसी भावनाओं का विकास हो।

महाजन का अर्थ है जनों में महान। इसी प्रकार श्रेष्ठ से सेठ बने। यह उपलब्धियां मूल्यों पर आधारित थीं। पहले कहावत थी बेटी डोली में जाती है और अर्थी में आती है, परन्तु आज के संस्कार का मूल्य गिर गया है। बेटी का विवाह करो और चार महीने के बाद वह घर में लौट आती है। आज दिखावे का झूठा प्रदर्शन सभी जगह देखने को मिलता है। राजनीतिक सम्मेलन को छोड़ दें, धार्मिक आयोजन भी इससे अछूता नहीं है। हमें इन दिखावों को जरूरत तक सीमित रखना चाहिए।

आज मारवाड़ी समाज ने उद्योग, राजनीति, शिक्षा, तकनीकि, विज्ञान, खेल आदि सभी क्षेत्रों में कीर्तिमान स्थापित किये हैं। मारवाड़ी समाज उपार्जन के साथ दान में भी आगे हैं। यही कारण है कि त्याग दान के क्षेत्र में आज मारवाड़ी समाज का वर्चस्व सर्व प्रमुख है। बैठक, सभाएं आदि का कोई तात्पर्य हो, सीख मिले, कुछ अच्छा ग्रहण करें। एकरसता भंग होकर रोचकता आए ऐसे कार्यक्रम ग्रहण करें। हां, समय रहते चेतने की आवश्यकता है।

सप्रसिद्ध उद्योगति एवं समाजसेवी श्री गौरीशंकर कांया ने अपना सुझाव दिया कि अब से ५० साल पूर्व समाज में जहां कहीं शादी विवाह होता था, उनसे समाज की संस्थाओं को अनुदान भी प्राप्त होता था, आज एक बार फिर यह प्रथा सम्मेलन को आगे बढ़कर प्रारम्भ कराना होगा। विवाह आचार संहिता के अनुसार हो या समाज की संस्थाओं के लिए कम से कम १० प्रतिशत राशि दान में दी जाए। जीवन में उत्कर्ष के लिए ईमानदारी ही सर्वोत्तम साधन है अत: कभी भी किसी भी परिस्थिति में व्यक्ति को ईमानदारी पर आंच नहीं आने देना चाहिए।

विचार गोष्ठी की अध्यक्षता एवं विषय का प्रवर्तन करते हुए सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने श्री गौरीशंकर कांया के प्रस्ताव का समर्थन करते हुए कहा कि सम्मेलन समाज की एक मात्र वह प्रतिनिधि संस्था है जो अपनी खामियों को तलाश कर खूबियों में तरासता है। जहां-जहां समाज ने ज्यादा चोट खाया है वहीं-वहीं सम्मेलन ज्यादा संगठित हुआ है। राष्ट्रीय कोषाध्य श्री हरि प्रसाद कानोड़िया ने गिरते सामाजिक मूल्यों को रोकने के लिए वैक्तिक सचेनता एवं आदर्शवादिता को अपनाने पर जोर दिया। श्री कानोड़िया ने नैतिक मूल्यों पर भी जोर दिया।

इस अवसर पर कर्नाटक से आए पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री नारायण प्रसाद अग्रवाल ने मारवाड़ी समाज के लिए ५० लाख का आपदा कोष बनाने का प्रस्ताव देते हुए बताया कि व्यापार के क्षेत्र में मारवाड़ी कमजोर हो रहे हैं, विभिन्न राज्यों में व्यापार उनके हाथों से निकलकर दूसरे लोगों के हाथों में जा रहे हैं। श्री वीरेन्द्र प्रकाश धोका ने आपसी भाइयों के मध्य अलगाव एवं बढ़ती हुई वैमनस्यता तथा समाज के लड़के-लड़कियों का दूसरे समाज में व्याहे जाना 'गिरते सामाजिक मूल्य' का उदाहरण बताया एवं इस पर चिंतन करने की एवं व्यवस्था ग्रहण करने पर जोर दिया।●

धर्म के अनुसार आचरण ही धर्म होता है

✍ राजेन्द्र शंकर भट्ट, जयपुर, राजस्थान

जिस तरह कई व्यक्तियों का एक ही नाम होता है, उसी तरह धर्म के नाम से भी कई विश्वास और व्यवहार जाने जाते हैं। हिन्दू, बौद्ध, जैन, मुसलमान, ईसाई और इनके अनेकानेक सम्प्रदाय सभी अपने को धर्म कहते हैं।

लेकिन धर्म का मूल अर्थ तो होता है किसी वस्तु या व्यक्ति की वह नित्यवृत्ति, गुण या लक्षण जो उससे अलग नहीं हो, जैसे आग का धर्म दाह है। इसमें से ही निकला कि प्रकृति तथा स्वभाव भी धर्म होता है। शास्त्रीय स्वरूप यह हुआ कि वह गुण जो उपमेय और उपमान में समान रूप से हो। स्वयं धर्म के संबंध में यही सत्य है- धर्म के अनुसार आचरण ही धर्म होता है। जो अर्थ व्यवहार में ज्यादा आया वह रहा किसी जाति, कुल, वर्ग, पद आदि के लिए उचित माना गया व्यवसाय या व्यवहार, कर्तव्य। इसमें जो स्वाभाविक है उसमें जोड़ा गया है 'उचित'। आजकल कुछ पदों पर रहते हुए कई व्यक्तियों के आचरण अनुचित माने जाने के प्रकरण आये दिन मालूम होते रहते हैं। इनमें से वह निकलता है कि हर पद पर से व्यवहार उचित ही रहना चाहिए, जैसे सुनार से असली सोने के आभूषण बनने पर भी अपेक्षा सोने की शुद्धता के निर्वहन की होती है।

इसी को भारतीय चिन्तन ने समादर एवं समानता यह निर्धारित करके दी है कि धर्म ऐसा कृत्य, आचरण, व्यवहार या विधान होता है जिसका फल शुभ बताया गया हो। इससे उचित के साथ शुभ और जुड़ गया- औचित्य तथा कल्याण से विलग अथवा इसके विपरीत धर्म नहीं होता - इस निष्कर्ष पर पहुंचने के उपरान्त भारतीय चिन्तन ने यह निर्धारित करने का प्रयत्न किया कि शुभ और उचित होता क्या है।

इसमें भी दो भेद हो गये : जो स्वयं अपने लिए शुभ और उचित हो, और जो दूसरों के लिए शुभ और उचित हो। इसका सामंजस्य ही सभ्यता और भारत में विकसित संस्कार है। जब अन्तर इसका आ जाय कि स्वयं अपने लिए जो शुभ तथा उचित है, वही दूसरों के लिए शुभ और उचित नहीं बैठ रहा तो भारतीय निर्धारण यह है कि जो दूसरों के लिए शुभ और उचित है वही धर्म हो जाता है - स्वयं का हित और लाभ स्वार्थ हुआ, दूसरों का हित और लाभ परमार्थ, और भारत में सभ्यता के विकास के साथ यह निर्धारित हुआ है कि परमार्थ ही उच्चतर एवं मनुष्योचित है, जिनमें से त्याग और बलिदान जैसे गुण निकले। इसी बात को बढ़ाया गया- दूसरों को खिलाकर खाओ, जिसमें यह तो परम पाप है कि दूसरों के खाने को खुद खा जाओ। इसके उदाहरणों से इस समय के अनेक विशिष्ट व्यक्तियों के आचरण न्यायालयों में विचारणीय हो गये हैं।

परन्तु इस प्रकार से भेद, विवाद अथवा मनमानी से स्थिरता नहीं आ सकती थी, यह निर्धारित नहीं हो सकता था कि पद, वर्ग, समूह, विचार, कर्तव्य में अन्तर कितने ही और कैसे ही हों, कुछ निर्धारण हैं जो सबके लिए अनिवार्य है - इन्हीं को भारतीय चिन्तन ने धर्म कहा है, इतना ज्यादा कि बड़े-बड़े शास्त्र इस पर बन गये, और धर्म शास्त्रों का इतिहास ही अत्यन्त विस्तृत हो गया, एक लेखक का लिखा पांच मोटे-मोटे खंडों में यह प्रकाशित हुआ है।

जो विगत मई का मासिक 'कल्याण' आया, उसमें कहा गया है कि जब हम मनुष्य हैं तब सबसे पहले हमारे जीवन में मानव धर्म होना चाहिए। हम मानव के बाद ही कुछ और हैं, मानव के बाद ही हिन्दू, मुसलमान, ईसाई आदि; हिन्दू अथवा मुसलमान धर्म का पालन करने में यदि हम मूल मानव धर्म को भूल जाते हैं तो फिर हिन्दू या मुसलमान धर्म का पालन कैसे होगा।

मनु ने उनके समय तक प्रचलित व्यवहार विचार मतभेद आदि का सम्यक् चिन्तन किया, और मनुष्य के योग्य व्यवहार निर्धारित किया। आजकल मनु को ही विवाद का विषय बना लिया गया है, मनु की मूर्तियां तोड़ी जा रही हैं। इस पर विचार इसके जाने बिना नहीं हो सकता कि वेदों के देश भारत में विवेक को ही सर्वोपरि माना गया है, अतएव अनेक धर्म के समान माने जाने वाले व्यवहार भी बदलते रहे हैं। मनु की विशेषता यह है कि उन्होंने ऐसे निर्धारण किये हैं जो सभी समय, स्थान तथा स्थिति में हर मनुष्य द्वारा मानने योग्य हैं, उन्हें ही मनुष्य के योग्य धर्म माना गया है।

(१) धैर्य या श्रेष्ठ धारण, (२) क्षमा - अपना अहित करने वाले से बदला लेने की पूरी शक्ति होने पर भी उसके अनिष्टाचार को सह लेना और उसके प्रति मन में जरा भी द्वेषबुद्धि न रखकर उसका हित चाहना, (३) मन का निग्रह-मन पर अपना पूरा नियंत्रण हो, उसे जहां लगाया जाए वह वहीं लगे, (४) अस्तेय- मनवचन कर्म से किसी के स्वत्व को ग्रहण करना चोरी है, इससे सर्वथा बचना, (५) शौच-बाहर तथा भीतर की पवित्रता, (६) इन्द्रीय निग्रह- आंख, कान, नाक, जिह्वा आदि का अपने वश में होना, (७) धी- श्रेष्ठ, सावधान तथा निश्चयात्मक बुद्धि, (८) विद्या- जिससे संसार में उचित व्यवहार भी हो, और उससे निर्लिप्तता भी बनी रहे, (९) सत्य- वाणी, मन और आचरण में सत्य का निर्वहन और (१०) अक्रोध- मन के विरुद्ध कार्यों को बिना विकार सह लेना। धर्म के ये दस लक्षण हैं। इस मानव-धर्म से विमुख होकर इसका विरोधी होकर अर्थात मानवता को खोकर जो आचरण करता है वह बड़े भ्रम में है, अर्थात आप जैन हैं या बौद्ध, मुसलमान हैं या हिन्दू, उपर्युक्त दस निर्धारणों के अनुसार ही आपका आचरण होना चाहिए। ये निर्धारण सबके लिए हैं, सदा के लिए हैं, हर स्थान एवं पद के लिए हैं।

धर्म के अनुसार आचरण कभी सहज और सरल नहीं रहा है, यह मनुष्य के उच्चतम चिन्तन का निष्कर्ष है, और मनुष्य को निरन्तर उच्चतर रखने के लिए आवश्यक है। परन्तु उच्च होने के लिए उन्हीं गुणों की आवश्यकता होती है जिनका ऊपर उल्लेख है। इस प्रकार एक बार फिर निर्धारित होता है कि धर्म के अनुसार आचरण ही धर्म होता है।●

सिरजण रौ प्रकाशन ई जरूरी

✍ डा. मनोहरलाल गोयल, जमशेदपुर

एक सवाल पूछ्यो गयो हो - हर बीं लेखक यानी कवि अर साहित्यकार स्यूं पूछ्यो गयो हो, जका बीं 'लेखक पाठक आभौ-साभौ' संगोष्ठी में शामिल हो। लेखकां स्यूं सवाल हो- आप क्यूं लिखो ? अपणी-अपणी समझ सूं सै लेखकां खुद रै लेखन-सिरजण रौ उद्देश्य बतायौ। पण यो सवाल जद म्हारै सामी आयो, तो म्हारौ जवाब सुणर पढ़ेसरां रौ दिमाग चकरायौ। कोई पाठक तो म्हानै भोंद अर बादू तक समझ लीन्यूं। म्है मानूं के लेखक रौ सिरजण साहित्य री समृद्धि खातर ई हुवै। वो देस अर समाज रै हित खातर लिखै है। पण यो हित साधन हुवै कइयां ? लेखक को सिरजन पाठक तक नीं पूगै; पाठक बींनै नीं पढ़ै, तो सारौ उद्देश्य तालां रै भीतर धर्‌यौ को धर्‌यौ रै जावै। इण खातर जरूरी है के लेखन सिरजन छपै। अर म्हारौ जबाब यो ई होके- 'म्है छपूं, इण खातर ई लिखूं।' आज म्है लिखूं- कविता, कहाणी व्यंग्य। अठींनैं लिखूं अर उठीनै छप जावै, जणां ई लेखन रौ काम निरंतर चाल रैयो है। जितणूं लिख्यौ है, लगभग सारौ छप्यौ है। अबार ई लिखूं तो सम्पादक जी नै पूगतौ कर देवूं हूं। इण सूं तीन लाभ है। पाठक पढ़ै, इण स्यूं लेखन रौ उद्देश्य पूरौ हुवै। अपणी रचना छपी देखर जी राजी हुवै अर मानदेय ऊपर स्यूं मिलै।

एक शायर हा-अकबर इलाहाबादी। उर्दू शायरी में मोटो नाम कमायो हो। उणां एक बिना मांगी सलाह दीनी हां- 'न तीर निकालो, न तलवार निकालो। जब तोप मुकाबिल हो, अखबार निकालो।' बींटेम आज की जैयां मोकला अखबार अर पत्र-पत्रिकावां कोनी छप्या करती। लेखकां-शायरां री या इच्छा जरूर रैती हुवैली के दूसरौ कोई और अखबार अथवा पत्र-पत्रिका ई छपै, तो बी में उणां रौ सिरजन कहानी, कविता, लेखादि छपै। एक शायर ई सूं बढ़िया दूजी और कोई सलाह पण कोनी देसकै। छपास की बीमारी स्यूं मनोहर लाल गोयल ई कोनी बच्यौ, तो अकबर इलाहाबादी भी कइयां बच्या रैता। संत-महात्मा अर देवी-देवता तक अपणूं नाम छप्यो देखण री इच्छा राखै है। अकबर जी तो खैर इन्सान हा। अर शायरी रौ मोल ई के, जद तक बीं नै दादनीं मिलै। तीर-तलवार अथवा तोप तमंचो हाथ में हुयां शिकार तो करी जा सकै है, पण छपास री बीमारी रौ इलाज कोनी हो सकै। इसी संभावना दूर-दूर तक निजर कोनी आवै।

बातां अखबार री करां। लोकतंत्र में अखबार रौ महत्वबेसी है। कोई अखबार यानी मीडिया नै लोकतंत्र रौ पांचवौं स्तंभ बतावै है, तो कोई लोकतंत्र रौ सांचौ प्रहरी। जरूरी कोनी के सै अखबार अपणूं दायित्व निभावै ई है। पण जिण नै अपणी साख बणाणी हुवै अथवा बणी बणायी साख नै बचार राखणी हुवै, उणा नै अपणौ दायित्व याद रैवै है। अखबार छोटो हुवै चायै मोटो। वो चार पेज रौ छपै अथवा चौदह या चौबीस पेज रौ, पण अखबार अखबार ई हुवै। पढ़ेसरां री संख्या सौ-दो सौ हो सकै है या हजार दो हजार भी। आ संख्या एक-आध लाख री भी संभव है। इण में अचरज री बात कीं भी कोनी। पण या संभावना अर संख्या इण बात पर निर्भर करै है कि अखबार कितणूं पुराणूं अर लोकप्रिय है। साज-सिणगार, छपाई, सामग्री रही चयन, समाचारां री विश्वसनीयता अर पेज सज्जा जिसी केई बातां पर पढ़ेसरां कौ खास ध्यान रैवै है। बियां भी पढ़ेसरां री संख्या एक दिन में आसमान कोनी छू सकै। अलादीन रौ जादुई चिराग अर जिन्न ओ काम कोनी कर सकै। पीसा की माया तो खैर अपणी भूमिका निभावै ई है, पण कर्मचारियां, पत्रकारां अर सम्पादकां री अहम भूमिका सूं ई तिल को ताड़ बण सकै है। एक साधारण अखबार पत्रकार जगत को खूंटौ बण र अपणी धमक दिखा सकै है। सम्पादकां रौ दायित्व और भी मोटो है। भांत-भांत री सामग्री छापर अखबार नै हर वर्ग रै पढ़ेसरां री निजि पसंद बणावणी आसान काम कोनी। बिना हेलो दियां सूत्यां अर आलसी पढ़ेसरां नै झकझोर र जगावणीं पड़ै है। जिण री पठन-पाठन में रुचि कोनी, उणां नै ई रिझावणीं पड़ै है। स्वाद खातर भांत-भांत रा पापड़ बेलणा पड़ै है। मोटो दायित्व है सम्पादक रौ।

अखबारां में साहित्य सिरजण ई छपै। समाचार पत्र को मतलब मात्र समाचार कोनी हुया करै। समाचारां रौ अचार तथा कविता, कहाणी व्यंग्य आदि रौ ई अखबार में छपणौ आवश्यक है। साहित्यकारां सूं सरोकार राखणौ जरूरी है, तो साहित्यकारां रौ परिचय अर उणां रौ साक्षात्कार लेयर छापणौ भी अति आवश्यक है। इण में की बुराई भी तो कोनी। साहित्यकार खूब खुश अर बढ़ेसरां नै भी नुवै किस्म री जाणकारी मिल जावै है। बियां सम्पादकां रौ अधिकार क्षेत्र अनन्त है। उणां कनै मोनो पोली है। वै चावै तो तिल नै ताड़ अर राई नै पहाड़ बणा र दिखा सकै है। नाराजी हुवै तो हीरो नै जीरो बणाण री क्षमता ई सम्पादकां में मैजूद मिलसी। सम्पादक नै यो अधिकार है कि वो किण साहित्यकार रौ परिचय या साक्षात्कार छापै अर किण रौ नीं छापै। किण नै पैली छापै अर किण नै बाद में। किण नै दो कॉलम में छापै अर किण नै आठ कॉलम में। सम्पादक को यौ विशेषाधिकार है अर इण रै विरुद्ध कठै ई अपील कोनी करी जा सकै। संभावना ई कोनी या सांच भी है के सम्पादक री इण समझ सूं केई बार गड़बड़ हो जावै है। जिण री मोटा साहित्यकार रै रूप में पिचाण हुवै उण नै कम महत्व दियौ जावै अर जिणरी पिचाण सामान्य साहित्यकार री हुवै बीं नै विशेष महत्व दे दियौ जावै है। अयांल की स्थिति हुयां समझ्यौ जा सकै है के सम्पादक किणी खास विचारधारा स्यूं प्रभावित हुयोड़ो है। अयांल की सोच वामपंथी विचारां री हूबहू कार्बन कॉपी जैयां लागै है।

आपनीं जाणता हुवौ, तो आपरी खातर आ नुवी जाणकारी है के ई विचार धारा अर वाद स्यूं जुड़्या लोग मात्र खुद नै ई साहित्यकार मानै है। वै खुद अर जका लोग उणां रै सागै है, वें सगळा बहुत मोटा साहित्यकार अर राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर रा लेखक है। पण जका लोग खेमाबाजी नै पसंद कोनी करै अर पंथ-वाद नै बेकार मानै है, वै नामी गिरामी साहित्यकार अर राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित होता हुयां भी उणां री नजर में 'जीरो' है। ई श्रेणी रा लोगां री मनोवृति स्यूं परिचित करावण खातर ई शायद

इण कहावत रौ सिरजण हुयौ हो के- आंधो बांटे खेड़ी, अपणां नै ई देवै। सम्पादकां माथै इसौ आरोप कोनी लगायौ जा सकै। वाद अर खेमाबाजी कर र साहित्य रै क्षेत्र में खुराफात तो करी जा सकै है, पण निष्पक्ष सम्पादक रौ दायित्व कोनी निभायौ जा सकै। किणी अखबार रौ आधार 'वाद' ई हुवै तो बात अलग है। सम्पादक तो न्यायाधीश री कुरसी माथै बैठ्यौ जीव है। वीं नै असीमित अधिकार ई है। पण अधिकारां रौ दुरुपयोग तो जरूरी कोनी। न्याव रा दोनूं पालड़ा बराबर रैणा चाये। नीं रै पावै तो ई दोष कोनी, पण ई दिशा में प्रयास तो राखणो ई चाइजै।

मेरा परिवार में किणी नै ई साहित्य में रुचि कोनी। मनै खुद साहित्य रौ उपहार उत्तराधिकार में कोनी मिल्यौ। विगत पैंसठ बरस सूं निरंतर राजस्थान स्यूं दूर रैयर ई म्है अपणी मायड़ भासा में खूब लिख्यौ है, तो इणमें पूर्वी भारत रै हिन्दी अखबारां रै सम्पादकां री महत्वपूर्ण भूमिका है। उणां म्हारा राजस्थानी सिरजणनै छापर सद्भावना रौ परिचय दीन्यूं है। म्हारी एक चिपाण ई बणाई। साहित्य किणी री बपौती कोनी। राजनीति री तर्ज माथै साहित्य पर किणी खास राजनीतिक पार्टी, विशेष विचार धारा अथवा किणी एक या दस बीस परिवारां रौ एकाधिकार कोनी हो सकै। साहित्य में नीं तो परिवारवाद चालै अर नीं पंथ-वाद। एक बात और है। साहित्य री जितणी विधावां है, उण रौ सिरजणहार चाये वो कवि हो, कहाणीकार हो, व्यंग्यकार हो, निबंधकार हो या कोई और, वो साहित्यकार री श्रेणी में ई आवै। सत्य, शिव अर सुन्दर स्यूं इतर साहित्य स्थाई साहित्य रौ रूप नीं ले सकै। इ सै सास्वत साहित्य में अर वाद सूं बंधर सिरजित साहित्य में अंतर तबई नजर आवैलो जब इण नै किणी वाद रौ चश्मौ लगायर देख्यौ जावै लो। सम्पादक नै वाम अर दक्षिण रै भंवर जाल स्यूं मुक्त होयर काम करणूं चाये। एक दो नै छोड़र, सम्पादक ई दिशा मोह सूं मुक्त ई रैवै हैं। जणां ई उणां रै अखबारां री लोकप्रियता बढ़ै है अर सम्पादक नै खूब यश मिलै है। अठी नै साहित्यकार री नाव सम्पादकां रै स्हारै मजैस्यूं तिरती रैवै है।●

विवाह-शादियों का मौसम आ रहा है अतः

अरजी सायजी सूं

✍ डॉ. भगवान किराडू 'नवीन', बीकानेर

सगै नैं पैली सूं समझायदो
उल्टी-सुल्टी रीत्यां हटायदो
सादगी सूं ब्याव सलटायदो...

बीन रौ खोलो नई भरणो
सीरख सारू सौ करणो
बडां रै खोले में म्हारी मानो
आवैला खाली दादो नानो
खाली कूं कूं कन्या भोलायदो
सायजी नैं पैली सूं बतायदो

जित्ती बार म्हे आवां थारै दुवार
खातरी करणीं री नई दरकार
छींकी लाबांला 'डिसको' रात री
चिन्त्या ना करया कोई बात री
खाली अदरख री चाय पायदो
पिलेट सिस्टम हटायदो...
सगै नै पैली सूं समझायदो

म्हारै सागै होसी सै सीधा-सादा
खरचा नीं करणा है ज्यादा
मती करया थोथा तामझाम
भवन टैंट रौ के है काम ?
कन्या दान करणों खुद रै धाम
परेम चईजै भले धरती बैठायदो
सगै नै पैली सूं कैवायदो

नई लेणी है कोई जान वान
बारात में करांला खालीं जलपान
फरमाइस करैं बौ सगो नादान है
कन्यादान सूं बड़ो के हुवै दान है
जे हुवै तो कोई बतायदो
सगै नै पैली सूं समझायदो

सूट-बूट आपरी पसन्द रा होसी
दरजी भी थांरी मरजी रौ होसी
म्हारौ बेटो है - थांरौ बेटो
आप चासो बियांई होसी
छोरो लेयर छोरी भोलायदो
सगै नै पैली सूं समझायदो

जो मांग रै लेवै बौ मरया समान
सायजी री सान है म्हारी सान
मांगै बौ कद सगो हुवै
सगै सागै बौ दगो हुवै
आ मंगतापणी रोज री मिटायदो
सगै नै पैली सूं समझायदो

भई माथै रौ भार पगा नैं हुवै
कदेई कष्ट क्यूं सगा नैं हुवै
खोले रै मुस लै 'कंवारी जान'
देवाली देवालो काढ़ण समान
बार-बार मिलनी हटायदो
लुगायां नैं सै समझायदो
ऊंधी सूंधी रीत्या हटायदो।

भारत के सर्वाधिक अर्थ-सम्पन्न व्यक्तियों में न. २ पर गिने जाने वाले **श्री आजिम प्रेमजी** के यहां पुत्र का विवाह पूर्ण सादगी के साथ निमन्त्रित व्यक्तियों में नाते-रिश्तेदारों के अलावा अत्यधिक सीमित संख्या। अखबार व मीडिया में कोई चर्चा नहीं।

भारत के सर्वाधिक अर्थ-सम्पन्न व्यक्तियों में न. ३ पर गिने जाने वाले श्री लक्ष्मी निवास मित्तल के यहां कन्या का विवाह अपूर्व तामझाम के साथ अगणित निमन्त्रित व्यक्तियों के बीच तथा समृद्ध देशों में अखबारों व मीडिया द्वारा चर्चित।

कार्यकर्ताओं के अनुरोध पर श्री हरीमोहन बांगड़ ने अपनी पुत्री के विवाह का सारा प्रबंध सादगी के साथ किया और सामाजिक संस्थाओं को अनुदान राशि भेजी।

आपकी राय में इनका सामाजिक असर कितना और क्या ?

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

अखिल भारतीय समिति की बैठक

युग पथ चरण

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की 'अखिल भारतीय समिति' की बैठक ११ सितम्बर २००५ को प. बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के आतिथ्य में कोलकाता में सम्पन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता प्रारंभ में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान ने की लेकिन अस्वस्थता के कारण उनके बाद राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने की।

बैठक के प्रारंभ में आज की सभा के आयोजन समिति के चेयरमैन पूर्व प्रांतीय महामंत्री श्री नन्दलाल सिंहानिया ने उपस्थित राष्ट्रीय एवं प्रांतीय पदाधिकारियों व बिहार, झारखंड, उत्कल, महाराष्ट्र आदि राज्यों से पधारे प्रतिनिधियों का स्वागत किया।

अस्वस्थता के कारण थोड़ी देर के लिए उपस्थित राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान ने पूर्वजों द्वारा स्थापित मारवाड़ी समाज की साख से आज के नवयुवकों को शिक्षा लेने का आह्वान करते हुए पूरे हिन्दुस्तान में मारवाड़ी समाज के वर्चस्व, समाज की प्रशंसनीय पैठ एवं विदेशों में समाज के युवकों द्वारा सुनाम और धनोपार्जन को बड़ा ही गौरव का विषय बताया।

श्री तुलस्यान ने भवानी पटना (उड़ीसा) में अल्प संख्या में बस रहे मारवाड़ी परिवारों द्वारा बनाये गये अति भव्य एवं उपयोगी अग्रसेन भवन, जिसका कि उद्घाटन उन्होंने स्वयं किया था, की प्रशंसा की एवं समाज की अस्मिता गिरे नहीं इस दिशा में मारवाड़ी समाज के चिंतन और प्रयास को आवश्यक बताया। उन्होंने समाज को उत्थान की दिशा में अग्रसर करने के लिए सभी से एकबद्ध होने की अपील की।

अध्यक्ष की अनुमति से महामंत्री श्री भानीराम सुरेका ने कार्यवाही आरम्भ करते हुए सर्वप्रथम गत बैठक की कार्यवाही प्रस्तुत की जिसे संशोधन के साथ सर्वसम्मति से पारित किया गया।

महामंत्री श्री सुरेका ने पिछली अखिल भारतीय समिति की बैठक से अब तक की रपट प्रस्तुत की। लंदन में सम्मेलन से संबंधित 'राजस्थानी फाउण्डेशन' नामक शाखा खोले जाने पर विस्तृत चर्चा हुई। उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने लंदन में 'दि राजस्थानी फाउण्डेशन' की स्थापना में राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री हरि प्रसाद कानोड़िया के अवदानों से सभा को अवगत कराते हुए कहा कि लंदन में श्री कानोड़िया के निवास स्थान पर एक रात्रि भोज आयोजन में इसकी स्थापना की गई, जिसमें २२० समाज बन्धु उपस्थित थे। श्री शर्मा ने उक्त संस्था के नाम के साथ 'मारवाड़ी सम्मेलन' शब्द जोड़ने में आ रही कठिनाइयों का खुलासा करते हुए कहा कि 'दि राजस्थानी फाउण्डेशन' लंदन में कोई भी कार्य अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के सहयोग से करेगा एवं इसके बंद होने की स्थिति में इसका फंड स्वत: ही अखिल भारतवर्षीय सम्मेलन को हस्तान्तरित हो जाएगा।

श्री हरि प्रसाद कानोड़िया ने 'दि राजस्थानी फाउण्डेशन' के पदाधिकारियों एवं इसके उद्देश्य के विषय में बताया कि भूतपूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष मेजर रामकृष्ण सरावगी के भतीजे श्री कृष्ण कुमार सरावगी को इसका अध्यक्ष बनाया गया है एवं उनके पैतृक गांव तारानगर को गोद लेने की योजना है। इसके अतिरिक्त अस्पताल और स्कूल चलाने की भी जनकल्याणकारी योजनाएं हैं।

काफी विचार-विमर्श के उपरांत शाखा की जगह 'सहयोगी संस्था' लिखे जाने के प्रस्ताव को मंजूरी देते हुए सर्वसम्मति से महामंत्री के प्रतिवेदन को स्वीकृत किया गया। महामंत्री के प्रतिवेदन के साथ प्रांतीय सम्मेलनों की सांगठनिक स्थिति पर रिपोर्ट वितरित की गई।

महामंत्री के अनुरोध पर सभा में उपस्थित बिहार, झारखंड, महाराष्ट्र, पूर्वोत्तर, उत्कल, प. बंगाल आदि के प्रांतीय पदाधिकारियों ने अपने-अपने प्रांतीय गतिविधियों की जानकारी प्रस्तुत की। राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं बिहार के पूर्व अध्यक्ष श्री नंदलाल रुंगटा ने सांगठनिक स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए जमीनी स्तर से जुड़ने का सुझाव दिया। झारखंड के प्रांतीय अध्यक्ष श्री गोविन्द प्रसाद डालमिया ने दिसम्बर या जनवरी माह में देवघर में अधिवेशन किये जाने की सम्भावना व्यक्त की।

महाराष्ट्र प्रा. मा. सम्मेलन के महामंत्री श्री ललित गांधी ने प्रांतीय अधिवेशन आगामी ८ जनवरी २००६ को यवतमाल में किये जाने की योजना से अवगत कराया। राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं उत्कल प्रा. मा. सम्मेलन की तदर्थ समिति के संयोजक श्री जगदीश प्रसाद अग्रवाल ने आगामी महीने में प्रांतीय सम्मेलन का नया चुनाव कराकर नई प्रादेशिक समिति का गठन कर देने का आश्वासन दिया। पूर्व प्रांतीय अध्यक्ष श्री विश्वनाथ मारोठिया ने एक महीने के समय को कम बताते हुए अधिवेशन कराने के लिए तीन महीनों का समय लेने का सुझाव दिया।

बलांगीर शाखा अध्यक्ष श्री गौरीशंकर अग्रवाल ने उत्कल से अखिल भारतीय समिति में १९ सदस्यों में से १७ सदस्य बलांगीर से चुने जाने की जानकारी सभा को दी।

बैठक के आयोजनकर्त्ता प. बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के महामंत्री श्री गोपाल अग्रवाल ने सम्मेलन की स्थापना एवं इसकी गतिविधियों का उल्लेख करते हुए समाज के कतिपय व्यक्तियों द्वारा इस नाम से चलाई जा रही एक अन्य समानांतर संस्था से उत्पन्न विवाद को राष्ट्रीय पदाधिकारियों से शीघ्र सुलझाने की मांग की। श्री नंदलाल सिंहानिया ने इस मुद्दे पर अदालत में चल रहे मुकदमा से उपस्थित पदाधिकारियों एवं सदस्यों को अवगत कराया। बैठक में उपस्थित पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने एक स्वर में इस विषय को घर के अंदर बैठकर ही सुलझा लेने का सुझाव दिया एवं विपक्षी के नहीं मानने पर उसका सामाजिक बहिष्कार करने का आह्वान किया।

मंचासीन राष्ट्रीय एवं प्रांतीय सम्मेलनों के पदाधिकारियों में थे राष्ट्रीय अध्यक्ष सर्वश्री मोहनलाल तुलस्यान, उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा, नन्दलाल रुंगटा (चाइबासा), जगदीश प्रसाद अग्रवाल (उड़ीसा), महामंत्री भानीराम सुरेका, संयुक्त महामंत्री राम औतार पोद्दार, कोषाध्यक्ष हरिप्रसाद कानोड़िया, लोकनाथ डोकानिया (अध्यक्ष, प. बंग), गोपाल अग्रवाल (मंत्री पश्चिम बंग), गोविन्द प्रसाद डालमिया (अध्यक्ष, झारखण्ड), पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रतन शाह एवं मौजी राम जैन, ललित गांधी (मंत्री, महाराष्ट्र), विश्वनाथ केडिया (उपाध्यक्ष, बिहार), विश्वनाथ मारोठिया (पूर्व अध्यक्ष, उत्कल) श्री बसन्त कुमार मित्तल (झारखण्ड) आदि।

बैठक की अध्यक्षता कर रहे राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने बताया कि जिस प्रांत में ३ साल तक अधिवेशन नहीं हुए हों वहां संविधान के अनुसार स्वत: ही कार्यकारिणी भंग हो जाती है एवं यही नियम केन्द्रीय सम्मेलन के लिए भी लागू होता है। तमिलनाडु में प्रादेशिक शाखा की स्थापना की जानकारी देते हुए श्री शर्मा ने कर्नाटक प्रांतीय सम्मेलन को निष्क्रिय बताया एवं वर्तमान में बंगलौर में रह रहे पूर्व उपाध्यक्ष श्री नारायण प्रसाद अग्रवाल को दक्षिण भारत में प्रांत एवं शाखाओं को मजबूत करने का दायित्व दिया एवं उनसे सहयोग का अनुरोध किया। श्री अग्रवाल ने बताया कि तमिलनाडु के महामंत्री श्री विजय गोयल से अधिवेशन कराने का आग्रह किया गया है। श्री अग्रवाल ने कर्नाटक में अपना पूरा सहयोग देने का आश्वासन दिया।

प. बंग में समानान्तर संस्था चलाये जाने के विरोध में केन्द्रीय संगठन से मांगे जा रहे सहयोग के प्रश्न पर उपाध्यक्ष श्री शर्मा ने घोषणा की कि केन्द्रीय सम्मेलन ने उस सम्मेलन को मान्यता प्रदान किया है जिसके अध्यक्ष श्री लोकनाथ डोकानिया एवं मंत्री श्री गोपाल अग्रवाल हैं। उन्होंने इस स्थिति से निपटने के लिए पश्चिम बंग के पदाधिकारियों से उस व्यक्ति को उसकी प्राथमिक सदस्यता से बर्खास्त करने एवं तत्पश्चात् सामाजिक स्तर की लड़ाई लड़ने का सुझाव दिया।

महामंत्री श्री भानीराम सुरेका ने भावी कार्यक्रम में बताया कि सम्मेलन के वर्ष २००४-०५ की खाताबही अंकेक्षक द्वारा जांची जा चुकी है, बैलेंसशीट तैयार है एवं शीघ्र ही साधारण वार्षिक सभा बुलाकर इसे स्वीकृत कराया जाएगा। उन्होंने ७१वां स्थापना दिवस समारोह २४ दिसम्बर की संध्या विद्या मंदिर हॉल में आयोजित किये जाने की सूचना दी। उन्होंने समारोह के लिए कुछ विशिष्ट मारवाड़ी कार्यक्रम का सुझाव मांगा।

नये प्रांतों में शाखा खोलने के विषय पर महामंत्री श्री सुरेका के आह्वान पर श्री वीरेन्द्र प्रकाश धोका, जालना, ने गुजरात, सूरत और राजकोट में चार महीनों में नई शाखा खोल दिए जाने का आश्वासन दिया। श्री सुरेका ने दिल्ली में शाखा खोलने के लिए किए जा रहे प्रयास की जानकारी दी।

महामंत्री ने सम्मेलन भवन को आधुनिक तकनीक से नवनिर्माण की योजना एवं तदनुरूप नक्शा बना दिये जाने की जानकारी देते हुए इस कार्यसिद्धी के लिए प्रचुर फंड की आवश्यकता बताई। श्री वीरेन्द्र प्रकाश धोका ने सम्मेलन भवन हेतु फंड इकट्ठा करने में अपना पूर्ण सहयोग देने के साथ साथ सम्मेलन के राष्ट्रीय कार्यालय में आवश्यक मरम्मत हेतु लातुर शाखा से ११ हजार रुपये देने एवं ३१ हजार रुपये का कलेक्शन करा देने का आश्वासन दिया।

प्रांतीय सम्मेलनों के अध्यक्षों एवं मंत्रियों के महासम्मेलन विषय पर महाराष्ट्र प्रा. मा. सम्मेलन के महामंत्री श्री

ललितगांधी ने ८ जनवरी २००६ को यवतमाल में आयोजित किए जाने वाले प्रादेशिक अधिवेशन के एक दिन पूर्व वहां इस महासम्मेलन को आयोजित करने का सुझाव एवं आमंत्रण दिया।

उत्तरी, दक्षिणी, पूर्वी एवं पश्चिमी भारत इन चार क्षेत्रों में प्रांतीय सम्मेलनों का सामूहिक अधिवेशन आयोजित करने के साथ साथ समाज सुधार पर राष्ट्रीय गोष्ठी का आयोजन एवं विभिन्न क्षेत्रों में राष्ट्रीय सम्मेलन पुरस्कार समारोह आयोजित करने का निर्णय लिया गया।

वैवाहिक आचार संहिता का निर्धारण एवं प्रचार विषय पर श्री सांवरमल अग्रवाल ने विवाह आचार संहिता के दायरे को स्पष्ट करने का अनुरोध करते हुए सुझाव दिया कि आचार संहिता ऐसी बने जो सबको सहज रूप से स्वीकृत हो।

महामंत्री श्री सुरेका ने प्रावधानानुसार दो साल के अंदर ही चुनाव कराकर शीघ्र ही सम्मेलन का २०वां राष्ट्रीय अधिवेशन आयोजित करने का आश्वासन दिया।

बैठक में श्री सांवरमल अग्रवाल द्वारा कई सुझाव एवं प्रस्ताव रखे गए जिनमें मुख्य थे सम्मेलन के मुख्यालय को नये सम्मेलन भवन में हस्तानान्तरित करना, पश्चिम बंग प्रा. मा. सम्मेलन के समानान्तर समाज के कतिपय व्यक्तियों द्वारा चलाई जा रही अन्य संस्था के विवादास्पद मुद्दे को खत्म करने की दिशा में केन्द्रीय सम्मेलन की ओर से पहल किया जाना आदि। श्री अग्रवाल ने प्रस्ताव रखा कि मारवाड़ी सम्मेलन फाउण्डेशन ट्रस्ट में कुल ट्रस्टियों की संख्या के आधे से अधिक राष्ट्रीय सम्मेलन की कार्यकारिणी समिति अथवा अखिल भारतीय समिति से नामांकित होकर ट्रस्ट बोर्ड में जाने चाहिए। श्री वीरेन्द्र प्रकाश धोका (जालना) ने भी इस प्रस्ताव का समर्थन किया।

अंत में मेजबान पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के महामंत्री श्री गोपाल अग्रवाल ने धन्यवाद भाषण दिया।

स्वागत गीत से बैठक का शुभारम्भ करती हुई सुश्री श्वेता अग्रवाल, सुश्री प्रीति सराफ एवं श्रीमती किरण सराफ।

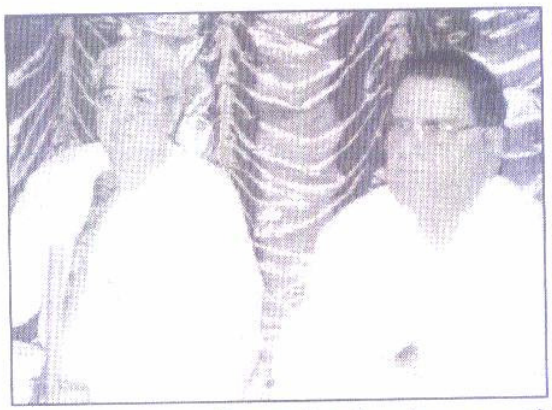

बैठक की अध्यक्षता करते हुए सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा एवं संचालन करते हुए महामंत्री श्री भानीराम सुरेका।

पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री लोकनाथ डोकानिया को पुष्पगुच्छ प्रदान करते हुए महाराष्ट्र प्रा. मारवाड़ी सम्मेलन के महामंत्री श्री ललित गांधी।

प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष श्री नन्दलाल रुंगटा, राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री श्री राम औतार पोद्दार, झारखण्ड के प्रांतीय अध्यक्ष श्री गोविन्द प्रसाद डालमिया एवं झारखण्ड के महामंत्री श्री बसन्त कुमार मित्तल।

पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री मौजीराम जैन (उत्कल) बैठक को सम्बोधित करते हुए।

बैठक में अपना विचार रखते हुए श्री विश्वनाथ केडिया (बिहार)। मंचासीन परिलक्षित हैं प्रान्तीय अध्यक्ष लोकनाथ डोकानिया, पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रतन शाह, राष्ट्रीय महामंत्री भानीराम सुरेका, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष द्वय सीताराम शर्मा एवं नन्दलाल रुंगटा आदि।

बैठक में अपने वक्तव्य रखते हुए जालना (महाराष्ट्र) से पधारे राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य श्री वीरेन्द्र प्रकाश धोका।

अपना सुझाव प्रस्तुत करते हुए कलकत्ता मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री ओम प्रकाश पोद्दार। परिलक्षित हैं सर्वश्री बसन्त कुमार मित्तल, जगदीश प्रसाद अग्रवाल, गोविन्द प्रसाद डालमिया, मौजीराम जैन आदि।

बैठक में अपना प्रांतीय प्रतिवेदन रखते हुए महाराष्ट्र के प्रान्तीय महामंत्री श्री ललित गांधी।

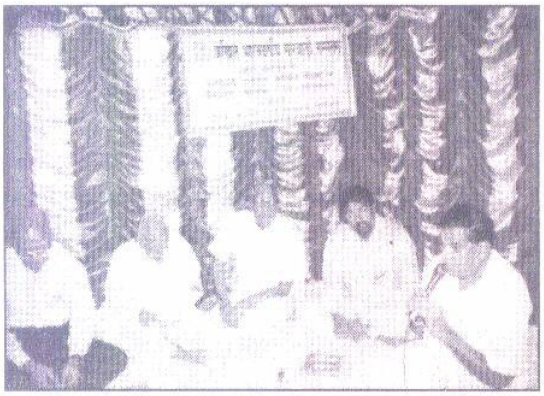

पूर्व उत्कल अध्यक्ष श्री विश्वनाथ मारोठिया बोलते हुए। परिलक्षित हैं श्री बसन्त कुमार मित्तल, गोविन्द प्रसाद डालमिया, श्री मौजीराम जैन एवं श्री जगदीश प्रसाद अग्रवाल।

पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के महामंत्री श्री गोपाल अग्रवाल बैठक में प्रांतीय गतिविधियों का उल्लेख करते हुए।

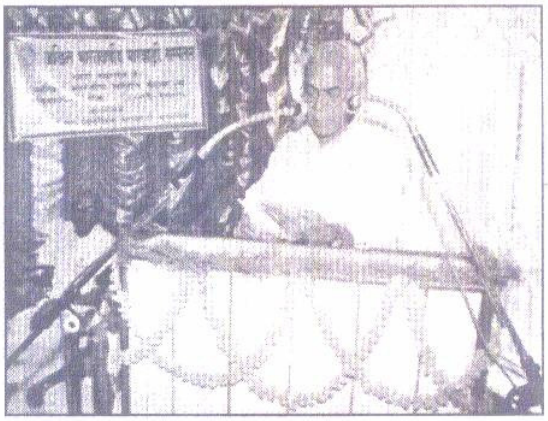

श्री गौरीशंकर अग्रवाल (बलांगीर-उड़ीसा) सम्बोधित करते हुए।

कोलकाता : श्री मदन दिलावर के सम्मान में गोष्ठी आयोजित

१८.९.२००५। राजस्थान सरकार के समाज कल्याण एवं सहकारिता मंत्री श्री मदन दिलावर के सम्मान में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से एक सम्मान गोष्ठी एवं श्री दीपचन्द नाहटा के सौजन्य से दिवा भोजन का आयोजन किया गया। गोष्ठी का उद्घाटन करते हुए श्री दिलावर ने कहा कि राजस्थान सरकार समाज के कल्याण के क्षेत्र में पालनहार योजना एवं अन्य योजनाओं के जरिए राजस्थान की आम जनता को लाभान्वित करने के लिए कृत संकल्प है। राजस्थान सरकार की अन्य योजनाओं के बारे में उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि बिजली अब आम जनता की पहुंच के अन्दर है क्योंकि राजस्थान सरकार ने बिजली के कनेक्शन हेतु गांव और कस्बों के लिए १७०० करोड़ रुपये और शहरों के लिए २५०० करोड़ रुपये निर्धारित की है।

सम्मेलन के पूर्व महामंत्री श्री दीपचन्द नाहटा ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि राजस्थान में समाज विकास की अनेक संभावनाएं हैं जिसको क्रियान्वित करने की दिशा में श्री दिलावर साहब प्राणपण से प्रयत्नशील हैं। सामाजिक उत्थान के यज्ञ में हम सब आपके साथ हैं। समाज सेवा के क्षेत्र में नित नये सृजन एवं चमत्कार श्री दिलावर जी की बुद्धिमता के परिचायक है।

सम्मेलन के उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने श्री दिलावर के माध्यम से राजस्थान सरकार से निवेदन किया कि बंगाल में राजस्थान भवन का निर्माण किया जाये जो राजस्थान की सांस्कृतिक गतिविधियों का केन्द्र बने। सम्मेलन के महामंत्री श्री भानीराम सुरेका ने कहा कि श्री दिलावरजी सम्मेलन की गतिविधियों से परिचित हैं, इन्होंने सम्मेलन की गतिविधियों में भाग लेकर सम्मेलन को गौरवान्वित किया है।

श्री दीपचन्द नाहटा ने श्री दिलावर को शाल ओढ़ाकर तथा माल्यार्पण कर स्वागत किया और श्रीमती रचना नाहटा ने श्रीमती सूरज दिलावर तथा श्रीमती शर्मा को शाल ओढ़ाकर तथा माल्यार्पण कर स्वागत किया।

सम्मेलन के कोषाध्यक्ष श्री हरि प्रसाद कानोड़िया ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

जयपुर : राष्ट्रीय महामंत्री का जयपुर दौरा

राष्ट्रीय महामंत्री श्री भानीराम सुरेका जयपुर (राजस्थान) के प्रभारी श्री सतीशचन्द्र कट्टा के साथ एक बैठक अपनी यात्रा के दौरान की। श्री कट्टा राजस्थान में एक प्रभावशाली उद्योगपति व समाजसेवी हैं। वे जयपुर में सदस्यता अभियान पर अग्रसर हैं और सदस्यों की संख्या ५० हो जाने पर शीघ्र ही राष्ट्रीय पदाधिकारियों की एक बैठक जयपुर में बुलाने जा रहे हैं। श्री कट्टा ने हर तरह का सहयोग अपने जन्मस्थान राजस्थान से प्रदान करने की बात कही।

श्री सुरेका ने राजस्थान फाउण्डेशन की अध्यक्षता सुश्री सावित्री कुनाड़ी व अन्य फाउण्डेशन के प्रमुख अधिकारियों के साथ भी एक बैठक की। इस अवसर पर मारवाड़ी सम्मेलन का मुख-पत्र 'समाज विकास' अगस्त के अंक की प्रतियां भी सबको प्रदान की गईं।

पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

रानीगंज : डॉ. राठी द्वारा राजस्थानी भाषा में अनुवादित पुस्तक का विमोचन समारोह

२३ अगस्त। ''मारवाड़ी सम्मेलन की स्थापना समाज की त्रुटियों एवं खामियों को दूर करने के लिए की गई है। मारवाड़ी समाज देश के हर प्रान्त के कोने-कोने में फैला हुआ है। मारवाड़ी समाज ने राष्ट्रीय एकता के लिए काफी कार्य किया है। बंगला साहित्य अकादमी से मिलकर हमने बंगला में साहित्यकारों का सम्मान किया है। बंगला साहित्य में राजस्थान का जिक्र आता है।'' अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने उपर्युक्त उद्गार रानीगंज शाखा द्वारा डॉ. गणेश राठी की पुस्तक 'रवीन्द्र नाथ ठाकुरी छोटी-छोटी कविताओं' के विमोचन समारोह में कहीं। श्री सीताराम शर्मा ने कहा कि बंगला के साहित्यकारों

की रचनाओं का अनुवाद तो हिन्दी में होता है, किन्तु हिन्दी के साहित्यकारों की रचना का अनुवाद बंगला में नहीं होता है। श्री शर्मा ने कहा कि डॉ. राठी ने विश्वकवि रवीन्द्र नाथ टैगोर की कविताओं का राजस्थानी भाषा में अनुवाद कर काफी महत्वपूर्ण कार्य किया है। पुस्तक में संकलित कविताओं का प्रकाशन समय-समय पर सम्मेलन की मासिक पत्रिका 'समाज विकास' में होता रहा है एवं आगे भी होता रहेगा। समारोह का आयोजन अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की रानीगंज शाखा द्वारा रानीगंज चेम्बर के सहयोग से संयुक्त रूप से किया गया था। अध्यक्षता रानीगंज शाखा के अध्यक्ष श्री विश्वनाथ सराफ ने की। समाज के वयोवृद्ध कार्यकर्त्ता श्री गोविन्दराम खेतान ने शाल ओढ़ाकर सम्मेलन की ओर से डॉ. राठी का सम्मान किया। मंच पर चेम्बर के अध्यक्ष कन्हैया सिंह भी उपस्थित थे। रानीगंज शाखा के उपाध्यक्ष श्री सत्यनारायण सिंह एवं डॉ. गणेश राठी, संयुक्त मंत्री रामगोपाल खेतान एवं सुशील गनेड़ीवाल ने श्री सीताराम शर्मा का स्वागत किया।

पुस्तक का विमोचन करते हुए धनवाद के कर-आयुक्त डॉ. सतीश अग्रवाल ने कहा कि मूल लेखन से अनुवाद का कार्य कम महत्वपूर्ण नहीं है। रवीन्द्र नाथ टैगोर की गीतांजलि का अंग्रेजी में अनुवाद होने के पश्चात् ही इसे नोबेल पुरस्कार मिल सका। आपने डॉ. राठी को सुझाव दिया कि गीतांजलि का अनुवाद भी राजस्थानी भाषा में करें। डॉ. अग्रवाल ने कहा कि गद्य का अनुवाद करने की अपेक्षा काव्य का अनुवाद करना अधिक कठिन है। इसमें भाव, शैली आदि का विशेष ध्यान रखना होता है। विश्वकवि की कवितायें असाधारण कवितायें हैं एवं इनका राजस्थानी भाषा में अनुवाद कर डॉ. राठी ने एक चुनौतीपूर्ण कार्य किया है। अपनी पुस्तक के बारे में बताते हुए डॉ. राठी ने कहा कि मुझे ४० वर्षों के चिकित्सक जीवन में जो सम्मान नहीं मिल सका वह मुझे आज इस पुस्तक के माध्यम से मिल रहा है। इस पुस्तक में रवीन्द्र टैगोर की 'कणिका से ४०, लेखन से १०७ तथा स्फुलिंग से १६८ कवितायें ली गई हैं। उद्घाटन गीत डॉ. राठी की पुत्री पल्लवी राठी ने प्रस्तुत किया। समारोह में काफी संख्या में विभिन्न संस्थाओं के साहित्यकार एवं गणमान्य उपस्थित थे।

उत्तर प्रदेश प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

कानपुर शाखा : वार्षिक आमसभा सम्पन्न

२८ अगस्त २००५। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, शाखा कानपुर की वार्षिक आमसभा सरस्वती वंदना एवं वन्देमातरम के साथ प्रारम्भ हुई। अध्यक्ष सत्यनारायण सिंहानिया ने उपस्थित सदस्यों का स्वागत करते हुए अधिकारों के साथ-साथ कर्त्तव्यों के प्रति सजग रहने, अच्छे कार्यों की खुले दिल से प्रशंसा करने तथा सार्वजनिक रूप से टीका टिप्पणी एवं प्रतिक्रिया व्यक्त करने में संकोच करने का सदस्यों से आग्रह किया। महामंत्री अनिल परसरामपुरिया ने वर्ष २००४-०५ की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए संस्था की सुदृढ़ आर्थिक स्थिति की सूचना दी तथा बीते वर्ष में 'शरदमेला स्वागतम् २००५' तथा बेसिक परिषदीय प्राथमिक विद्यालय का एडाप्शन संस्था की गौरवशाली उपलब्धि बताई। वर्ष २००४-०५ का अंकेक्षित आय-व्यय विवरण तथा बैलेन्सशीट को सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया। आमसभा में प्रमुख रूप से उपाध्यक्ष श्री सुशील कुमार तुलस्यान, सत्येन्द्र महेश्वरी, हरिकृष्ण चौधरी, वल्देव प्रसाद जखोदिया, श्रीराम अग्रवाल, बालकृष्ण शर्मा, भजनलाल शर्मा, सुनील केडिया, नरेन्द्र भगत, महेन्द्र तुलस्यान, शिव रतन नेमानी, हरिशंकर शाह, भंवरलाल मालपानी, विश्वनाथ पारीक, संजय अग्रवाल सहित अनेक सदस्य उपस्थित थे।

चित्र में बाएं से दाएं - सर्वश्री भजनलाल शर्मा, अनिल परसरामपुरिया, कीर्ती सराफ, मनोज टीबड़ेवाल (शिक्षा समिति संयोजकप), बलदेव प्रसाद जाखोदिया (महामंत्री), सत्यनारायण सिंहानिया (अध्यक्ष) एवं विश्वनाथ पारीक।

कानपुर : विद्यार्थियों को पोशाक एवं पठनीय सामग्री वितरण

शाखा सम्मेलन द्वार १५ अगस्त २००५ को शिक्षारत ६२ छात्र-छात्रा जो निर्धन वर्ग से सम्बन्धित हैं को पोशाक व पठनीय सामग्री उपलब्ध कराई गई और शाखा ने शिक्षा सम्बन्धी इस सेवा कार्य को नियमित रखने का निर्णय किया है। इस अवसर पर विधायक श्री सलिल विश्नोई सहित शाखा अध्यक्ष सत्यनारायण सिंहानिया, महामंत्री अनिल परसरामपुरिया, शिक्षा समिति संयोजक मनोज टीबड़ेवाल, मंत्री सुनील मुरारका, सं. मंत्री सुबोध रुंगटा, विश्वनाथ पारीक, भजनलाल शर्मा, बलदेव प्रसाद जाखोदिया, सुनील कुमार केडिया, कीर्ति सराफ, श्रीराम अग्रवाल तथा श्रीमती रेनु भोजनगरवाला आदि उपस्थित थे।

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

पटना : बिहार मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा समिति की एक अपील

समिति के भूतपूर्व संस्थापकगण, अध्यक्षगण, प्रबन्ध न्यासीगण एवं वर्तमान पदाधिकारीगण के 'शिक्षा' के प्रति रागात्मक लगाव के फलस्वरूप शिक्षा समिति समाज के जरूरतमंद छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति प्रदान करती आ रही है। बैंकों के ब्याज दरों में काफी गिरावट आ जाने से समाज के छात्र-छात्राओं को दी जाने वाली छात्रवृत्ति राशि में प्रत्याशित वृद्धि की गई। समिति के इस उदार नीति के कारण समिति को आर्थिक कठिनाइयों का पूरा-पूरा सामना करना पड़ रहा है। ऐसी परिस्थिति में आपसे साग्रह अनुरोध है कि आप समिति को मासिक अनुदान उदारतापूर्वक प्रदान करें, आपका यह सहयोग समिति यश कीर्ति के धरोहर के रूप में आपको मुखरित करती रहेगी।

पटना सिटी : श्री गोविन्द कानोड़िया द्वारा राजनीति में समाज का प्रतिनिधित्व

शाखा के सचिव व प्रादेशिक सम्मेलन के राजनैतिक चेतना मंत्री श्री गोविन्द कानोड़िया को बिहार प्रदेश राष्ट्रीय जनता दल में इन्हें पहले पटना पूर्वी (पटना सिटी) का डेलीगेट बनाया गया और उसके बाद संगठन चुनाव में संगठन का प्रदेश सचिव भी मनोनीत किया गया है। श्री कानोड़िया को इस उपलब्धि पर शाखाध्यक्ष श्री राम कैलाश सरावगी ने बधाई दी।

आंध्र प्रदेशिक मारवाड़ी शिक्षा कोष ट्रस्ट

हैदराबाद : शिक्षा कोष ट्रस्ट द्वारा छात्र-वृत्ति वितरित

आन्ध्र प्रादेशिक मारवाड़ी शिक्षा कोष ट्रस्ट द्वारा विद्यालय और महाविद्यालय स्तर के जरूरतमंद छात्र-छात्राओं को सत्र २००५-०६ के लिए छात्र-वृत्ति वितरीत की गई। मैनेजिंग ट्रस्टी डा. आर.एम. साबू द्वारा प्रदत्त जानकारी के अनुसार कुल १६६ छात्रों को लगभग ७०,०००/- रु. छात्र-वृत्ति के रूप में वितरित किए गए। छात्र-वृत्ति वितरण समारोह की अध्यक्षता ट्रस्ट के चेयरमैन श्री गुलजोरीलाल केडिया ने की।

सत्र २००५-०६ के लिए छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति वितरित करते हुए आन्ध्र प्रादेशिक मारवाड़ी शिक्षा कोष ट्रस्ट के प्रबंध न्यासी डाक्टर आर. एम. साबू, चेयरमैन गुलजारी लाल केड़िया, प्रादेशिक सम्मेलन के अध्यक्ष रमेश कुमार बंग एवं लाभान्वित छात्र-छात्राएं।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए डॉ. आर.एम. साबू ने कहा कि देश भर में मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा शिक्षा सहायता ट्रस्ट संचालित है, जो जरूरतमंद छात्रों को छात्र-वृत्ति वितरित करते हैं। सम्मेलन द्वारा संचालित ट्रस्टों द्वारा निष्पक्षरूपेण जरूरतमंद छात्रों को छात्र-वृत्ति प्रदान की जाती है। दिनोंदिन घटती ब्याज दरों के कारण छात्रवृत्ति की राशि पर भी प्रभाव पड़ रहा है। शीघ्र ही स्थायी निधि में वृद्धि के प्रयास किए जाएंगे। सत्र २००५-०६ में छात्रवृत्ति हेतु सहायता प्रदान करने के लिए 'ए.पी. महेश को-आपरेटिव अर्बन बैंक लिमिटेड' और श्री 'जी.के. काबरा पब्लिक ट्रस्ट' की सराहना की। महेश बैंक के नवनिर्वाचित चेयरमैन और आ.प्रा.मा. सम्मेलन के अध्यक्ष श्री रमेश कुमार बंग ने कहा कि शिक्षा प्रसार में मारवाड़ी समाज का सदैव ही उल्लखनीय योगदान रहा है। आवश्यकता है लाभार्थी अपने परिश्रम से शिक्षा प्राप्त कर समाज की अपेक्षाओं को पूरा करें। इस अवसर पर मारवाड़ी सम्मेलन के अनेक कार्यकर्ता और समाजसेवी उपस्थित थे।

उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

टिटिलागढ़ : नये पदाधिकारियों की घोषणा एवं नई कार्यकारिणी का गठन

आगामी दो साल के लिए टिटिलागढ़ शाखा की नई कार्यकारिणी का गठन किया गया है। नई कार्यकारिणी के लिए सर्वसम्मति से निर्वाचित अध्यक्ष श्री मामराज जैन ने अपना पदभार दिनांक १९-९-२००५ से ग्रहण कर लिया है। कार्यकारिणी के लिए मनोनीत पदाधिकारियों एवं सदस्यों की सूची इस प्रकार है :-

उपाध्यक्ष- श्री राधेश्याम अग्रवाल (अधिवक्ता), सचिव- श्री सोहनलाल गुप्ता, सहसचिव- श्री महेश इन्दोरिया, कोषाध्यक्ष- श्री ओमप्रकाश अग्रवाल। कार्यकारिणी सदस्य - सर्वश्री सूरजभान जैन, गीनाराम अग्रवाल, बनवारीलाल गोयनका, सुरेश कमानी, कैलाश चन्द्र अग्रवाल एवं सूरजमल सोनी।

पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

नौगांव : राजस्थानी युवक संघ द्वारा विकलांग चिकित्सा शिविर का आयोजन

नगांव (असम), २८ अगस्त। नौगांव राजस्थानी युवक संघ द्वारा राईड़िंगया गांव में लायंस क्लब ऑफ नगांव के साथ मिलकर भारतीय कृत्रिम अंग निर्माण निगम (एलिमको), कानपुर के सहयोग से एक नि:शुल्क विकलांग चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया।

चिकित्सा शिविर के दौरान तकरीबन १३० असहाय विकलांग व्यक्तियों की पूरी तरह जांच कर उनमें से जरूरतमंद ८५ व्यक्तियों के बीच २६ तिपहिया साइकिल, ७ व्हील चेयर, ५० श्रवण यंत्र एवं बैसाखी का नि:शुल्क वितरण किया गया।

कार्यक्रम के दौरान हरभजन सिंह की अध्यक्षता में एक आमसभा का आयोजन भी किया गया। इस अवसर पर केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, १४४ बटालियन के कमान्डेन्ट श्री एल.सी. गोगोई मुख्य अतिथि, होलीराम साईकिया माध्यमिक विद्यालय के प्राचार्य तिलकचन्द सइकिया विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

नौगांव राजस्थानी युवक संघ, लायन्स क्लब ऑफ नगांव व नगांव ग्रेटर, पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन के सदस्यगण, नगांव मारवाड़ी युवक संघ, लायन्स क्लब ऑफ नगांव व नगांव ग्रेटर, पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन के सदस्यगण, नगांव मारवाड़ी युवा मंच के अध्यक्ष, महिला एवं युवती विभाग की सदस्याएं, होलीराम सईकिया माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकगण, विकलांग व्यक्ति एवं उनके परिजन सहित कई पत्रकारों ने भी इस सभा में भारी तादाद में अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई।

अध्यक्ष हरभजन सिंह ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि क्लब द्वारा निरंतर ऐसे शिविर आयोजित किए जाते रहे हैं और जन मानस की सेवा में हम आगे भी तत्पर रहेंगे। नौगांव राजस्थानी युवक संघ के अध्यक्ष रमेश अग्रवाल ने कहा कि संस्था सन् १९६३ से कार्यरत है और ४२ वर्षों से हम नि:स्वार्थ असहाय लोगों की सहायता करते आये हैं। उन्होंने कहा कि युवक संघ खेल जगत बौद्धिक विकास क्षेत्र में भी अग्रसर है।

विकलांग शिविर आयोजन के लिए के. रि.पु. बल १४४ बटालियन ने एक विशाल समीयाना लगवाया तथा सैकड़ों कुर्सियों, विकलांगों के लिए चाय की व्यवस्था की। युवक संघ के वरिष्ठ सदस्य व उपाध्यक्ष विनोद पोद्दार द्वारा सभी विशिष्ट अतिथियों, उपस्थित व्यक्तियों को धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन

तिनसुकिया : पूर्वोत्तर मारवाड़ी महिला समिति तिनसुकिया शाखा का विधिवत गठन

३ अगस्त, २००५ को पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन का गठन कर डॉ. अंचला बावरी को सभापति और मायादेवी किल्ला को मंत्री सर्वसम्मति से निर्वाचित किया गया। पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन के स्थानीय अध्यक्ष कुन्दनमल शर्मा की अध्यक्षता में सम्पन्न महिला तदर्थ सम्मेलन की संयुक्त सभा में उक्त घोषणा सर्वसम्मति से की गई। उपाध्यक्ष श्रीमती पुष्पा अग्रवाल, सरिता देवी खेतान, संयुक्त मंत्री - सीमा देवी बिरमीलाल और पुष्पा देवी शर्मा 'अधिवक्ता' तथा कोषाध्यक्ष - रेणु देवी गुप्ता चुनी गई। जन-सम्पर्क का दायित्व सुशीला देवी खेमका और आशा देवी जालान को सौंपा गया। २९ सदस्यीय कार्यकारिणी समिति में डॉ. चन्द्रादेवी छालानी, सुधा देवी जालान, विमला बजाज, उमरावती देवी छापारिया, विजय लक्ष्मी शर्मा, कंचन देवी अग्रवाल, ललिता करनाणी और मंजु देवी माहेश्वरी चुनी गई।

तिनसुकिया : पूर्वोत्तर मारवाड़ी महिला सम्मेलन की नवनिर्वाचित अध्यक्ष डॉ. अंचला बावरी, सचिव माया देवी किल्ला के साथ कतिपय वरिष्ठ पदाधिकारी सदस्याएं (बायें) तथा सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए विजय कुमार जैन के साथ स्थानीय शाखाध्यक्ष कुन्दनलाल शर्मा, मंत्री सुरेश खेतान, कोषाध्यक्ष राजेश बिरमीवाल आदि।

सभा को डॉ. बाबरी छालानी के अलावा सम्मेलन की ओर से सुरेश कुमार खेतान (मंत्री), अशोक कुमार अग्रवाल, विजय कुमार जैन, राजू खेमका, जमना प्रसाद जिन्दल और राजेश बिरमीवाल ने भी अपने विचार रखे। १७ अगस्त को श्रावण झूलनोत्सव मनाने की बात तय कर हर्षोल्लासपूर्ण वातावरण में सभा विसर्जित की गई।

अनगुल : आयोजित कतिपय सामाजिक कार्यों का उल्लेख

महिला सम्मेलन की पूर्व प्रादेशिक अध्यक्षा श्रीमती पार्वती मोदी द्वारा निम्नलिखित सामाजिक कार्य किए गए। दो पानी की टंकी का उद्घाटन। प्रथम पानी की टंकी का उद्घाटन १५ अगस्त को हुआ। समारोह में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती सावित्री बापना, प्रांतीय अध्यक्षा श्रीमती निर्मला बंका, युवा मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री बलराम सुलतानिया शाखा की अध्यक्षा सचिव एवं और भी महिलाएं उपस्थित थीं। दूसरी टंकी का उद्घाटन १८ अगस्त को हुआ। महिला समिति की बहनें, युवा मंच के भाइयों, हाईस्कूल के शिक्षक एवं स्कूल के २००० बच्चों ने उद्घाटन समारोह में भाग लिया।

१५ अगस्त को पूर्व प्रादेशिक अध्यक्षा द्वारा क्लब एवं स्कूलों में बिस्कुट एवं चॉकलेट का वितरण किया गया एवं महिला स्कूल में जाकर उनको ऑमशान्ति में शिक्षा लेने का अनुरोध किया। ऑम शान्ति में राखी का त्यौहार मनाया गया जिसमें लगभग २०० आदमियों ने भाग लिया।

प्रादेशिक अध्यक्षा एवं श्रीमती पद्मा अग्रवाल द्वारा एक गांव में जाकर पांच हजार पांच सौ रुपये की १००१ मच्छेरी का दान दिया गया। चेयरमैन श्रीमती अग्रवाल के हाथों दस डस्टबीन का दान कराया गया।

अंगूल गॉरमेंट हॉस्पीटल में १०० आदमी के आंखों का आपरेशन के लिए चश्मा दिया गया।

भवानीपटना : मारवाड़ी महिला मंच के विविध कार्यक्रम

मारवाड़ी महिला मंच की सभी बहनों ने श्रावण महोत्सव १५ अगस्त, जन्माष्टमी, तीज मेला आदि पर्व अत्यंत धूमधाम से अति उत्साहप्रद वातावरण में मनाया। इस दौरान अखण्ड रामायण के पाठ का आयोजन भी किया गया एवं दूसरे दिन प्रसाद वितरण कर ब्राह्मण भोज भी कराया। श्रावण माह में सदस्या बहनों ने कांवड़ उठाकर भगवान शिव का जलाभिषेक भी किया। कार्यक्रमों में प्रमुख रूप से सम्मिलित थीं श्रीमती शकुन्तला अग्रवाल, सावित्री अग्रवाल, सुलोचना अग्रवाल, अम्बिका अग्रवाल, भगवती गोयल आदि।

स्वाधीनता दिवस १५ अगस्त को कांवड़ उठाईं बहनें

जूनागढ़ : तीज महोत्सव आयोजित

दिनांक ८ अगस्त को मारवाड़ी महिला समिति जूनागढ़ शाखा द्वारा श्री शंकर भगवान का प्रसाद वितरण समारोह एवं तीज उत्सव का आयोजन किया गया। इस शुभ अवसर पर सभी बहनों द्वारा शिव कांवड़ यात्रा निकाली गई। इसी अवसर पर भवानीपटना की शर्मिष्ठा पुरोहित को आंखों के इलाज के लिए २१००/- (रुपये इक्कीस सौ) का अनुदान दिया गया एवं श्री नथूराम गोयल की धर्मपत्नी को साल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। इनके सुपुत्र धर्मपाल गोयल ने गायत्री शक्तिपीठ बनाने केलिए जमीन दान किया।

११ एवं १२ अगस्त ०५ को गायत्री मन्दिर में अखण्ड रामायण का पाट हुआ। इसमें भवानीपटना से श्रीमती शकुन्तला अग्रवाल तथा अन्य बहनों ने भाग लिया। दिनांक १५ अगस्त को गायत्री मन्दिर में समिति द्वारा झण्डा फहराकर स्वाधीनता दिवस का पालन किया गया। श्री बेदप्रकाश गोयल ने झण्डा फहराया। सभी कार्यक्रमों में अध्यक्ष श्रीमती जामोती देवी अग्रवाल, सचिव श्रीमती कोमल अग्रवाल, कोषाध्यक्ष श्रीमती कान्ता देवी बंसल, सलाहकार श्रीमती आशा देवी खेमका एवं श्रीमती संतोष गोयल ने सहभागिता की।

अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच

कोलकाता : मारवाड़ी युवा मंच का १८वां स्थापना दिवस आयोजित

२८ अगस्त। मारवाड़ी युवा मंच द्वारा संस्था के १८वें स्थापना दिवस के अवसर पर राजस्थानी लोक गीत व नृत्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि हरिकृष्ण चौधरी ने राजस्थानी लोक संस्कृति को राष्ट्रीय स्तर पर विकसित करने के लिए इससे युवाओं को जोड़ने की आवश्यकता पर जोर दिया। कार्यक्रम के उद्घाटनकर्ता उद्योगपति श्याम सुंदर शाह ने सामाजिक विकास के लिए एकता बनाए रखने की बात कही। वहीं मुख्य वक्ता के रूप में अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रमोद शाह ने संस्था की गतिविधियों की विस्तार से जानकारी देते हुए राजस्थानी संस्कृति की विशेषताओं पर

प्रकाश डाला।

समारोह की अध्यक्षता दिलीप गोयनका व संचालन गोपाल कलवानी ने किया। इस अवसर पर शाखा सचिव विमल चौधरी, सजपा के प्रदेश अध्यक्ष कृष्ण गोपाल सिन्हा, पत्रकार गीतेश शर्मा समेत गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। कार्यक्रम का संयुक्त संयोजन पवन अग्रवाल व अनूप अग्रवाल ने किया।

कोलकाता : राष्ट्रीय विचार गोष्ठी सम्पन्न

मारवाड़ी युवा मंच उत्तर-मध्य कोलकाता शाखा द्वारा आयोजित राष्ट्रीय विचार गोष्ठी 'मंच अवलोकन-२००५' संपन्न हुई। दो दिवसीय विचार गोष्ठी का आयोजन तीन सत्रों में किया गया। गतिविधि सत्र का संचालन पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रमोद शाह (कोलकाता) व महेश जालान (पटना) ने किया। पैनल में अरुण बजाज (दिल्ली), अनिल जैन (गुवाहाटी), अ.भा. युवा मंच अध्यक्ष बलराम सुल्तानिया (चाईबासा), सज्जन भजनका (कोलकाता), बुद्ध सिंह सेठिया (दिल्ली), महेश शाह (कोलकाता), कैलाश चंद्र अग्रवाल (कांटाबाजी) व प्रदीप खदरिया (देरगांव) ने फेमिली काउंसिलिंग, युवाओं के कैरियर, युवा विकास, साहित्य प्रकाशन, राजस्थानी भाषा के उत्थान, आत्म सुरक्षा व सम्मान, सामाजिक एकता, आंचलिक समन्वय व सर्वधर्म सद्भाव पर केंद्रित होकर कार्य करने पर जोर दिया। पूर्वोत्तर, बंगाल, झारखंड, बिहार, उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़, ओड़िशा, दिल्ली व महाराष्ट्र से आये करीब १०० प्रतिनिधियों ने अपने विचार रखे। संगठन पर चर्चा का संचालन सिलीगुड़ी के पुष्कर राज लोहिया व विमल नौलाखा ने किया। मंच की राष्ट्रीय पत्रिका मंचिका व अन्य प्रकाशन मंच के ढांचे, राष्ट्रीय अधिवेशन का स्वरूप, वित्तीय व्यवस्था को मजबूत करने व सर्वोच्च स्तर पर वार्षिक समीक्षा के अतिरिक्त महिलाओं की सक्रिय भागीदारी व अन्य मुद्दों पर सार्थक चर्चा हुई।

दूसरे दिन मंच के मुख्य प्रकल्प नेशनल मारवाड़ी फाउंडेशन दिसम्बर में होने वाले राष्ट्रीय अधिवेशन व २०२५ में मंच के स्वरूप पर चर्चा के साथ गोष्ठी समाप्त हुई। शाखा के मुखपत्र करवट के विशेषांक का विमोचन संपादक गोपाल कलवानी ने किया।

मोतीपुर : नेत्र परीक्षण शिविर आयोजित

२५.८.२००५ मारवाड़ी युवा मंच एवं सीबीआर के संयुक्त तत्वावधान में स्कूली बच्चों का नेत्र परीक्षण एवं गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी को सम्बोधित करते हुए मंच के प्रांतीय सहायक मंत्री चौधरी संजय अग्रवाल ने कहा कि गांव-कस्बों में नेत्र संबंधी जानकारियां मंच शिविर लगाकर देगी। नेत्रहीनों को वैज्ञानिक छड़ी मुफ्त में भेंट की जाएगी। ४ सितम्बर को अंजनाकोट गांव में मुफ्त मोतियाबिंद ऑपरेशन शिविर लगाया जाएगा। आज १०५ छात्र-छात्राओं का नेत्र परीक्षण किया गया। समारोह में चिकित्सक डॉ. अजय जयसवाल, डॉ. अजय गुप्ता, आनन्द कुमार आदि ने भाग लिया।

मोतीपुर : खुदीराम बोस के शहादत दिवस पर समारोह

१२.८.२००५। मोतीपुर मारवाड़ी युवा मंच के तत्वावधान में खुदीराम बोस के शहादत दिवस पर शिविर लगाकर छात्र-छात्राओं की मुफ्त में नेत्र जांच की गई। शिविर में नेत्र विशेषज्ञ डॉ. अजय कुमार ने ६० छात्र-छात्राओं की नेत्र जांच की। प्रांतीय महामंत्री चौधरी संजय अग्रवाल ने पाठ्यक्रम में शहीदों का जीवन वृत शामिल करने की मांग की।

मोतीपुर : रक्षा बंधन पर बच्चियों ने बांधी पेड़-पौधों को राखी

१९ अगस्त। रक्षा बंधन के अवसर पर मारवाड़ी युवा मंच एवं पर्यावरण क्लब मोतीपुर ने वृक्ष बचाओ कार्यक्रम का आयोजन नमन कोचिंग सेंटर सुन्दर सराय में आयोजित किया। इस अवसर पर डायमंड किंकर के छात्राओं ने पेड़-पौधे को राखी बांध उसे अपना भाई बनाया और पेड़-पौधों की लम्बी जीवन की कामना की।

वहीं इस अवसर पर मारवाड़ी युवा मंच एवं पर्यावरण क्लब ने वृक्ष बचाओ कार्यक्रम का आयोजन कर पेड़-पौधों को राखी बांधकर उसे अपना भाई बनाकर उसकी सुरक्षा करने का संकल्प लिया। इस अवसर पर मनोज अग्रवाल, चौधरी संजय कुमार, विपुल कुमार अग्रवाल आदि उपस्थित थे।

इस अवसर को मारवाड़ी युवा मंच के कार्यकर्ताओं ने एक निजी विद्यालय में पर्यावरण दिवस के रूप में मनाया और लोगों से वृक्ष लगाकर पर्यावरण संतुलन में सहयोग की अपील की। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रांतीय महासचिव चौधरी संजय अग्रवाल ने की।

अन्य संस्थाएं

कोलकाता : बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय द्वारा विदाई समारोह सम्पन्न

९ सितम्बर। श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय कोलकाता द्वारा साहित्यकार, पत्रकार, पूर्व सैनिक डॉ. विश्रान्त वशिष्ठ का भावभीनी विदाई समारोह सम्पन्न किया गया। इस अवसर पर कोलकाता के अपने २४ वर्षीय प्रवास के विभिन्न अनुभवों का स्मरण करते हुए डॉ. वशिष्ठ ने कहा कि यहां रहकर ही उन्हें सृजन की प्रेरणा मिली तथा अपनी बात को दृढ़ता से रखने की सीख भी कलकत्ता के परिवेश से ही मिली। सेना की अपनी नौकरी, कोलकाता के अपने साहित्यिक, सामाजिक तथा हिन्दी सेवा से संबद्ध कार्यों का उन्होंने रोचक विवरण प्रस्तुत किया। डॉ. वशिष्ठ ने अपनी रचनाओं के कुछ अंशों का पाठ भी किया।

अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री जुगलकिशोर जैथलिया ने कहा कि डॉ. विश्रान्त वशिष्ठ की हिन्दी सेवा अतुलनीय है। विलक्षण व्यक्तित्व के धनी डॉ. वशिष्ठ अपने आदर्शों एवं सिद्धांतों पर अडिग रहने वाले व्यक्ति हैं। पुस्तकालय के अध्यक्ष डॉ. प्रेमशंकर

त्रिपाठी ने विश्रान्त जी के बहुआयामी व्यक्तित्व का संक्षिप्त परिचय दिया और कार्यक्रम का संचालन किया। डॉ. विश्रान्त वशिष्ठ को पुस्तकालय की ओर से श्री कृष्णस्वरूप दीक्षित ने माल्य विभूषित किया एवं श्री जुगलकिशोर जैथलिया ने उत्तरीय प्रदान कर सम्मानित किया। समारोह को सफल बनाने में डॉ. उषा द्विवेदी, श्री महावीर बजाज, श्री गोविंद नारायण काकड़ा, श्री अरुण मल्लावत, श्री नंदकुमार लढ़ा एवं श्री अरुण सोनी सक्रिय थे।

कुम्हारटोली सेवा समिति के 'यमुनोत्री' का लोकार्पण

कोलकाता, २३ अगस्त। कुम्हारटोली सेवा समिति के जलवाहिनी टैंकर 'यमुनोत्री' का लोकार्पण अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान ने किया। उन्होंने कहा कि दानदाता भगवान के ही रूप हैं। उल्लेखनीय है कि महावीर प्रसाद केडिया ने अपनी धर्मपत्नी श्रीमती पार्वती देवी केडिया की पुण्य स्मृति में यह जलवाहिनी समिति को प्रदान की है। ९ लाख रुपये की लागत से निर्मित इस टंकी की क्षमता १२००० लीटर की है। विधायक तारक बंद्योपाध्याय ने कहा कि सेवा ही बड़ा धर्म है। सहायक पुलिस आयुक्त एस.के. गांगुली ने कहा कि समिति का सेवामूलक कार्य काफी सराहनीय है। रुगलाल सुराना ने कहा कि समिति १२ महीने आंख आपरेशन, हाइड्रोसिल-हर्निया शिविर आदि का काम करती है। समिति के उपाध्यक्ष श्यामलाल जालान ने संस्था की गतिविधियों पर प्रकाश डाला तथा प्रधान सचिव एवं अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के सदस्य सुभाष मुरारका ने कुशल संचालन किया। इस अवसर पर एमआईसी (शिक्षा) कल्याणी मित्रा भी उपस्थित थीं। अध्यक्ष बाबूलाल बुधिया, संयुक्त संयोजक रामगोपाल बागला, गोविन्द सराफ, उमेश क्याल, सुशील सेवक, सुरेश जालान, राजकुमार बगड़िया, नरेश चौधरी, नवल किशोर माधोगढ़िया आदि कार्यक्रम को सफल बनाने में सक्रिय थे।

कोलकाता : कुम्हारटोली सेवा समिति की एम्बुलेंस का उद्घाटन

६ सितम्बर। पश्चिम बंगाल के राज्यपाल गोपाल कृष्ण गांधी ने कुम्हारटोली सेवा समिति की एम्बुलेंस का उद्घाटन करते हुए कहा कि सरकार के लिए व्यापक पैमाने पर सेवा कार्य कर पाना संभव नहीं है, इसलिए समाजसेवी संस्थानों को इसके लिए आगे आना चाहिए। राजभवन में आयोजित कार्यक्रम में पूर्व सांसद सुदीप बंद्योपाध्याय के सांसद कोटे से यह एम्बुलेंस प्रदान की गई। इस अवसर पर चम्पालाल सरावगी मुख्य अतिथि, महावीर प्रसाद केडिया सम्मानित अतिथि और सुदीप बंद्योपाध्याय मुख्य वक्ता के रूप में मौजूद थे। कार्यक्रम में समिति के अध्यक्ष बाबूलाल बुधिया, श्यामलाल जालान, कालीचरण मोर, रामगोपाल बागला, गोविंद सराफ, ओमप्रकाश छाछरिया, कालीचरण मोर, श्यामसुन्दर गनेरीवाल आदि सक्रिय थे। कार्यक्रम का संचालन समिति के सचिव सुभाष मुरारका ने किया।

कोलकाता : सीकर नागरिक परिषद द्वारा नि:शुल्क आंख आपरेशन एवं चश्मा वितरण

२८ अगस्त। सीकर नागरिक परिषद (कोलकाता) के नि:शुल्क आंख ऑपरेशन एवं चश्मा वितरण समारोह के अवसर पर विभिन्न वक्ताओं ने कहा कि सामाजिक संस्थाओं को अपने कार्य का दायरा बढ़ाना चाहिए। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के उपाध्यक्ष एवं बेलारूस के कौंसुल जनरल सीताराम शर्मा ने कहा कि अच्छे कार्य के लिए संसाधन की कमी नहीं होती। जरूरत होती है तो बस दृढ़इच्छा शक्ति व लगन की। मारवाड़ी समाज ने कभी भी खुद को सेवा व दान से अलग नहीं किया। यह वह समाज है जिसने अपनी खामियों की भी आलोचना की है। संयुक्त परिवार के टूटने, तलाक के बढ़ते मामलों व अन्य बुराइयों पर अंकुश के लिए उन्होंने प्रयास करने पर बल दिया। कार्यक्रम का उद्घाटन कलकत्ता उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश ऋषिकेश बनर्जी ने किया। संस्था के अध्यक्ष घनश्याम प्रसाद शोभासरिया ने कहा कि मानव सेवा के प्रति जागरुकता और कार्यकर्ताओं के सहयोग के बल पर दो हजार लोगों को चश्मा देने और आंखों का ऑपरेशन कराने की दिशा में सफलता मिली है। सन्मार्ग के संपादक राम अवतार गुप्त ने कहा कि सामाजिक संस्थाओं को सिर्फ शहरों में सीमित नहीं रहकर ग्रामीण इलाकों में जाना चाहिए। वहां बहुत अभाव है। यह खुशी की बात है कि सीकर नागरिक परिषद ने सेवा को महत्व देते हुए ग्रामीण क्षेत्रों में भी कार्य किया है। इस अवसर पर आयकर आयुक्त (कोलकाता) कैलाश चंद्र नरेड़ी का सम्मान किया गया। मामराज अग्रवाल संस्था के सचिव दामोदर प्रसाद विदावतका, हावड़ा के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक बीडी मंडल, परिषद के अध्यक्ष आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम के दौरान सामाजिक क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए संस्था से जुड़े समाजसेवी रामगोपाल बागला को सम्मानित किया गया। संचालन एल.के. बियानी व अनिल पोद्दार ने धन्यवाद ज्ञापन किया। प्रह्लाद राय सोभासरिया, प्रकाश सोमानी, लक्ष्मी कुमार बियानी, मोहनलाल सिंघी, विनोद अग्रवाल, सुरेश शर्मा, रूड़मल पंसारी, अशोक तोदी, भागचंद्र दीवान, महेश जोगानी, रवि लोहिया, राम प्रसाद भालोटिया आदि प्रमुख रूप से मौजूद थे।

कोलकाता : हिन्दुओं द्वारा हिन्दू देवी-देवताओं का घोर अपमान

सेवा संस्थान मनीषिका के अध्यक्ष श्री पुष्करलाल केडिया ने एक अभियान तहत सबका ध्यान हिन्दू देवी-देवताओं के टाईल्स सड़कों एवं सीढ़ियों के कोने में धड़ल्ले से लगाई जाने की ओर आकर्षित किया। लोग वहां मल-मूत्र त्याग करते हैं। श्री केडिया इसे देवी-देवताओं के प्रति आस्था में चोट मानते हैं। उनका अनुरोध है कि सभी इस गलत कार्यों के विरोध में अभियान में जुड़े एवं संबंधित व्यक्तियों से सम्पर्क कर ऐसी टालियां हटाने का अनुरोध किया जाए।

कोलकाता : हिन्दी दिवस समारोह सम्पन्न

१५ सितम्बर। हिन्दी दिवस आजादी से जुड़े अन्य पर्वों की तरह ही हमारा राष्ट्रीय पर्व है। इसका मूल सम्बन्ध हमारी भावनाओं से है। भूमंडलीकरण के युग में हिन्दी के विकास के मार्ग में बाधाएं बहुत हैं। लेकिन हमें तमाम चुनौतियों को स्वीकारते हुए उनका हल निकाल कर हिन्दी को जन-जन व्यापी बनाना होगा - ये विचार हैं डॉ. सुभाषचन्द्र पालीवाल के जो श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय कक्ष में हिन्दी दिवस के समारोह में अध्यक्ष के रूप में बोल रहे थे। उन्होंने हिन्दी के विकास के लिए इसके प्रशिक्षण एवं दैनिक जीवन में इसे अधिकाधिक अपनाने की आवश्यकता पर बल दिया।

श्री ओमप्रकाश अश्क, श्री गीतेश शर्मा एवं श्री नन्दलाल शाह आदि वक्ताओं ने भी हिन्दी-दिवस को संकल्प दिवस के रूप में मनाने तथा अपने अधिकाधिक कार्य हिन्दी में ही करने का सुझाव दिया।

पुस्तकालय के पूर्व अध्यक्ष श्री जुगलकिशोर जैथलिया ने कहा कि भाषायी संकट का सामना हमें आत्मविश्वास एवं निष्ठा के साथ करना होगा। हमारा दृढ़ संकल्प ही हिन्दी को विश्व व्यापी बनाने में सहयोग देगा। भाषा का सम्बन्ध सीधे रूप से हमारी राष्ट्रीय अस्मिता से जुड़ा है।

श्री मुंगालाल सुरेका की पुस्तक का विमोचन उपराष्ट्रपति द्वारा जयपुर में
सरकार नदियों का डॉक्यूमेंटेशन करें

१६ सितम्बर। उपराष्ट्रपति भैरो सिंह शेखावत ने राज्य सरकार को प्रदेश में आज तक हुए नदी नहर समझौतों तथा कार्यों का 'डॉक्यूमेंटेशन' करने की सलाह दी है। शेखावत राजकीय निवास पर एम.एल. सुरेका की पुस्तक के विमोचन समारोह को संबोधित कर रहे थे। महामहिम ने कहा कि राजा महाराजाओं से लेकर स्वाधीनता पश्चात् राजस्थान में कई नदी नहर संधियां के समझौते हुए लेकिन उनका आज तक दस्तावेज नहीं बना। अब यह होना चाहिए। राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर नदी जल बंटवारे के मुद्दे उठते हैं लेकिन उनके सम्पूर्ण दस्तावेज नहीं होने से पूरी बात सामने नहीं आ पाती। उन्होंने सरकार के साथ कार्यक्रम में उपस्थित मंत्री राजेन्द्र राठौड़, सांवरलाल जाट व प्रमुख सिंचाई सचिव एस.एन. थानवी को सभी नदियों और नहरों की रिपोर्ट एकत्रित करा एक सम्पूर्ण दस्तावेज बनवाने को कहा। इस अवसर पर डॉ. राजेन्द्र कुमार सुरेका, प्रकाश सुरेका ने पुस्तक के बारे में प्रकाश डाला। श्री एम.एल. सुरेका भूतपूर्व आई.ए.एस. हैं।

सम्मान / बधाई

कोलकाता : श्री कन्हैयालाल सेठिया की रचना-संग्रह का लोकार्पण

११ सितम्बर। राजस्थानी भाषा में अग्रणी साहित्यकारों में से एक श्री कन्हैयालाल सेठिया के ८७वें जन्म दिवस के मौके पर राजस्थान परिषद की ओर से आयोजित एक कार्यक्रम में परिषद के उपाध्यक्ष जुगल किशोर जैथलिया द्वारा सम्पादित 'कन्हैयालाल सेठिया समग्र राजस्थानी ग्रंथ' का लोकार्पण कार्यक्रम के अध्यक्ष सरदारमल कांकरिया द्वारा किया गया। कार्यक्रम में वक्ताओं ने राजस्थानी साहित्य में श्री सेठिया के महत्वपूर्ण योगदानों का जिक्र करते हुए उन्हें एक यशस्वी लेखक तथा समाज सुधारक बताया। वरिष्ठ पत्रकार विश्वंभर नेवर ने श्री सेठिया की रचनाओं को समाज को उत्प्रेरित करने का माध्यम बताया। वरिष्ठ पत्रकार गीतेश शर्मा ने कहा कि श्री सेठिया की रचनाओं में अलौकिक नहीं बल्कि यथार्थ अध्यात्म है। नंदलाल शाह ने अपनी वक्तव्य में श्री सेठिया की रचनाओं को नैतिक साहित्य का विलक्षण नमूना बताया। तारा दूगड़ ने कहा कि श्री सेठिया की रचनाओं में आदर्श व दर्शन झलकता है तथा उनकी रचनाएं साम्यवाद की आवाज को बुलंद करती है।

हिन्दी एवं राजस्थानी के मूर्धन्य कवि श्री कन्हैयालाल सेठिया के ८७वें जन्मदिन पर उनकी सभी राजस्थानी रचनाओं को एक जिल्द में प्रकाशित 'समग्र' के लोकार्पण समारोह में मंच पर परिलक्षित हैं (बाएं से) श्री रुगलाल सुराणा (जैन), श्रीमती तारा दूगड़ एवं सर्वश्री जुगलकिशोर जैथलिया (ग्रन्थ सम्पादक), शार्दुलसिंह जैन, सरदारमल कांकरिया, विश्वम्भर नेवर, नन्दलाल शाह, गीतेश शर्मा एवं अरुण प्रकाश मल्लावत।

बीकानेर नगर परिषद के अध्यक्ष, अखिलेश प्रताप सिंह ने कहा कि ओजस्विता और पराक्रम हमारी विशेषता है जिसे राजस्थान से इतनी दूर बैठकर भी श्री सेठिया जी ने बहुत अच्छी तरह अपनी कविताओं में व्यक्त किया है। श्री सरदारमल कांकरिया ने कहा कि कल संस्कृति और साहित्य के क्षेत्र में हमारे बीच श्री कन्हैयालाल सेठिया जैसा व्यक्तित्व है इसका हमें गर्व है। परिषद के अध्यक्ष शार्दूल सिंह जैन ने भी कार्यक्रम को सम्बोधित किया। संचालन रूगलाल सुराणा 'जैन' तथा धन्यवाद

ज्ञापन अरुण प्रकाश मल्लावत ने किया। इस अवसर पर पर पद्मश्री कन्हैयालाल सेठिया एवं उनकी पत्नी का सम्मान भी किया गया।

बलांगीर : श्री कपूरचंद अग्रवाल टेलीकाम के जेनरल मैनेजर बने

श्री कपूरचन्द जी अग्रवाल सम्बलपुर टेलीकाम, सम्बलपुर के जेनरल मैनेजर नियुक्त हुए। इनकी सफलता समाज के लिए एक ज्वलंत उदाहरण है। ऐसे व्यक्ति समाज के दर्पण एवं मार्गदर्शक कहलाते हैं। समाज को ऐसे इंसानों की ही शख्त जरूरत है।

जमशेदपुर : ७५वीं वर्षगांठ पर डा. गोयल सम्मानित

हिन्दी और राजस्थानी के कवि, कथाकार, व्यंग्यकार, पत्रकार डॉ. मनोहरलाल गोयल के ७५ वर्ष पूरे कर लिए जाने के अवसर पर दर्जनों पत्र-पत्रिकाओं ने डॉ. गोयल का जीवन परिचय तथा व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए बधाई संदेश प्रकाशित किए।

नगर की अति प्राचीन संस्था 'जगतबंधु सेवासदन पुस्तकालय' ने एक कवि गोष्ठी का आयोजन कर डॉ. मनोहरलाल गोयल को सम्मानित किया। पुस्तकालय के सचिव संदीप मुरारका ने डॉ. गोयल का परिचय दिया एवं अध्यक्ष मुरलीधर केडिया ने शॉल, स्मृति चिन्ह एवं पुस्तकें प्रदान कर इन्हें सम्मानित किया। डॉ. गोयल कई पुस्तकों और स्मारिकाओं के सम्पादक सहित कई प्रतिष्ठित पत्रिकाओं के अतिथि सम्पादक भी रहे हैं। ढेरों पुरस्कार, सम्मान एवं सम्मानोपाधियां आपको मिली है।

रांची : श्रीमती गोदावरी देवी सरावगी राजस्थानी साहित्य महिला पुरस्कार

वर्ष २००६ प्रविष्टियों हेतु आमंत्रण

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष श्री हनुमान सरावगी द्वारा स्थापित एवं लोक संस्कृति शोध संस्थान नगर- श्री चुरु ट्रस्ट द्वारा संचालित श्रीमती गोदावरी देवी सरावगी राजस्थानी साहित्य महिला पुरस्कार - २००६ हेतु राजस्थानी भाषा में महिला साहित्यकारों द्वारा रचित किसी भी विधा में प्रकाशित पुस्तकें पुरस्कार के लिए सादर आमंत्रित हैं। कम से कम ८० पृष्ठों की मौलिक कृति को प्रविष्टि मिल सकेगी। पुस्तक गत पांच वर्षों की अवधि में प्रकाशित होनी चाहिए। पुरस्कार हेतु चयनित पुस्तक की रचयिता को नगर श्री चुरू में आयोजित समारोह में ११०००/- रुपये की नकद राशि एवं मान-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया जाएगा। प्रविष्टि के इच्छुक कृतिकार अपनी पुस्तक की पांच प्रतियां १५ अक्टूबर २००५ तक अध्यक्ष, लोक संस्कृति शोध संस्थान नगर - श्री चुरू ट्रस्ट, चुरू (राजस्थान) ३३१००१, फोन- ०१५६२-२५१८२४ (दिन में सुबह ११.३० से सायं ५.३० बजे तक), फैक्स- ०१५६२-२५११९७ पर पहुंचाने की व्यवस्था करवावें।

वरिष्ठ समाज-सेवी श्री गोपालचन्द्र अग्रवाल का नागरिक अभिनन्दन

नगांव के वरिष्ठ समाज-सेवी एवं ज्येष्ठ अधिवक्ता श्री गोपाल चन्द्र अग्रवाल को उनके सामाजिक एवं अन्य क्षेत्रों में योगदान के लिए असम सरकार के मुख्यमंत्री के विशेष कर्म पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार स्वतंत्रता दिवस समारोह में गृहराज्य मंत्री श्री रकीबुल हुसैन ने प्रदान किया। श्री अग्रवाल को इस पुरस्कार के अन्तर्गत सम्मान-पत्र, एक सराई, सिल्क चादर, फूलाम गमछा एवं पांच हजार रुपये का एक चेक प्रदान किया गया। मारवाड़ी समाज के लिए यह अत्यंत हर्ष एवं गर्व की बात है क न केवल नगांव जिले में बल्कि समूचे असम प्रान्त में यह पहला अवसर है जब किसी प्रवासी राजस्थानी व्यक्ति का असम सरकार द्वारा इस तरह नागरिक अभिनन्दन किया गया है। ७३ वर्षीय श्री अग्रवाल नगांव राजस्थानी युवक संघ के संस्थापक अध्यक्ष पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन के संस्थापक सचिव रहे हैं। इसके अलावा शंकर मिशन, नगांव बालिका महाविद्यालय आदि कई संस्थाओं में इनका सक्रिय सहयोग रहा है। सामाजिक, सांस्कृतिक, क्रीड़ा एवं राजनीति के क्षेत्र में श्री अग्रवाल की महत्वपूर्ण भागीदारी रही है।

रांची : हनुमान सरावगी झारखण्ड दिगम्बर जैन महासंघ के अध्यक्ष

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष एवं प्रसिद्ध समाजसेवी, उद्योगपति और आर्थिक मामलों के विशेषज्ञ श्री हनुमान सरावगी को झारखण्ड प्रदेश दिगम्बर जैन महासंघ का पुन: अगले सत्र के लिए अध्यक्ष निर्वाचित किया गया एवं २१ सदस्यों की एक समिति गठित करने का अधिकार प्रदान किया गया।

पिछले दिनों झारखण्ड प्रदेश के दिगम्बर जैन समाज के प्रतिनिधियों की हजारीबाग में एक बैठक हुई थी, जिसमें दिगम्बर जैन महासंघ का गठन किया गया था। महासंघ का उद्देश्य होगा प्रदेश में अवस्थित सभी जैन धार्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक संस्थाओं को अधिक सक्रिय एवं उपयोगी बनाना तथा समन्वय स्थापित करना।

MACO gel

Makesworth Industries Ltd.

"KAMALALAYA CENTRE"
Suite 504, 5th Floor
156A, Lenin Sarani, Kolkata-700 013

MACO GEL is a high profile product of **Makesworth Industries Ltd. (MIL),** a part of the Makesworth group that excels in distribution of Industrial oils, rubber hoses, plastics and allied products in eastern India.

MACO GEL in its various grades is formulated by employing the most modern technology. This ensures total compatibility with cable polymers and coatings. It has excellent water blocking property as well as processibility for case and minimising down time during cable production.

The **MIL** plant located on the outskirts of Kolkata on Diamond Harbour Road, has state of the art technology and R & D facilities.

MACO GEL—THE PRODUCT

Category : Cable filling compounds. Soft pasty, hydrophyllic gel formulated from high quality base oil and other hi-tech ingredients which provide superior water blocking capacity over a wide temperature range.

Application : The ideal water resistant material for filling the interstices in Multipair, Polyethylene insulated and sheathed telephone cables, ingress of moisture into cable sheath damage occurs.

Features : A homogeneous compound and containing a suitable
antioxidant. Easy removal by wiping from insulated conductors.
Transparent, so does not obscure the colour identification of the polyethylene insulation.
Fully compatible with polyethylene of medium and high density.
No unpleasant odour. No toxic or dermatic hazards.
Stable without migration.

FILL LONG LIFE INTO YOUR CABLE

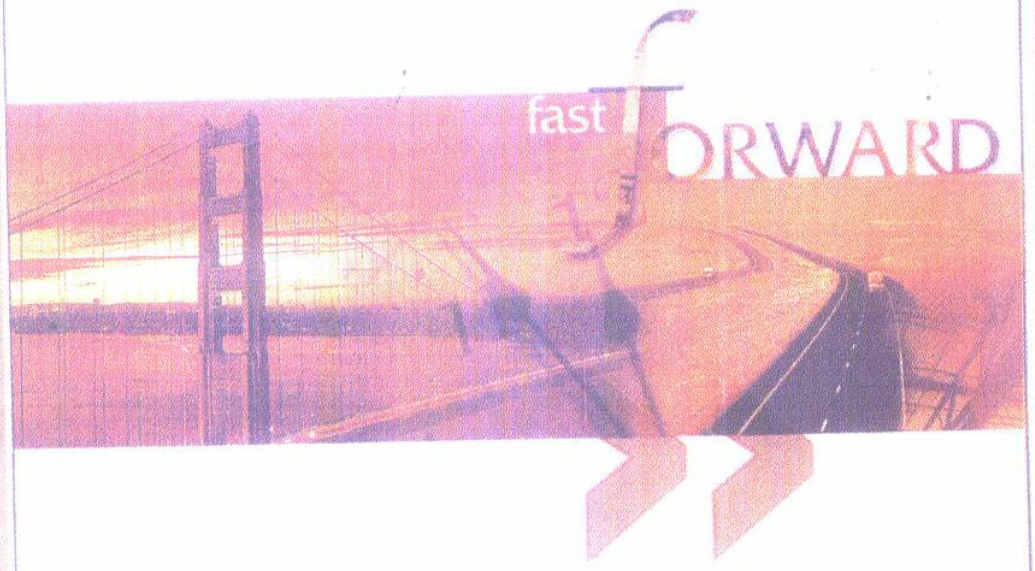

SREI, committed to the growth of the country's core sector has gone far beyond providing finance and refinance for construction equipment and spare parts.

Today, SREI provides valuable inputs as financiers and consultants across infrastructure projects and roads, power and ports in particular.

Fuels the growth in the Indian transportation sector through attractive financial schemes for the commercial vehicle segment and automobiles.

Serves the international traveller through convenient foriegn exchange transactions.

Creates a better environment by funding equipment and projects that are environmentfriendly.

Ensures complete protection by providing an entire range of insurance services.

Provides a range of investment oppurtunities through Government bonds, securities, fixed deposits and mutual funds.

Over the years SREI has built considerable expertise in the management of assets and financial services.

With its widespread network across the country, SREI is ready to meet growing customer needs with tailor-made solutions.

SREI is totally prepared and committed to stand by you to meet your diverse requirements as a complete finance solutions company.

Financially yours,

SREI INTERNATIONAL FINANCE LIMITED

EQUITY PARTNERS IFC USA • DEG GERMANY • FMO HOLLAND

© 2001 SREI INTERNATIONAL FINANCE LIMITED

SREI Equik SREI Requik SREI Parts SREI Core SREI Auto SREI Monitor SREI Bhaskar

SREI Forex SREI Life SREI General SREI Money SREI Treasure SREI Capital

Viswakarma, 86C Topsia Road (South), Kolkata 700046 • Phone : 22860112-15/024-27 • Fax : 22857542
New Delhi Phone 23322274/90/23360594/23314030 • Bhubaneshwar Phone : 2545290/2522560/2545177
Mumbai Phone : 24956636/24968639/24973708 • Chennai Phone : 28555584/28555470-71
Hyderabad Phone : 55667919/55667920 • Bangalore Phone : 2276727/2271265/2235006

From :
All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700007
Phone : 2268-0319

To,